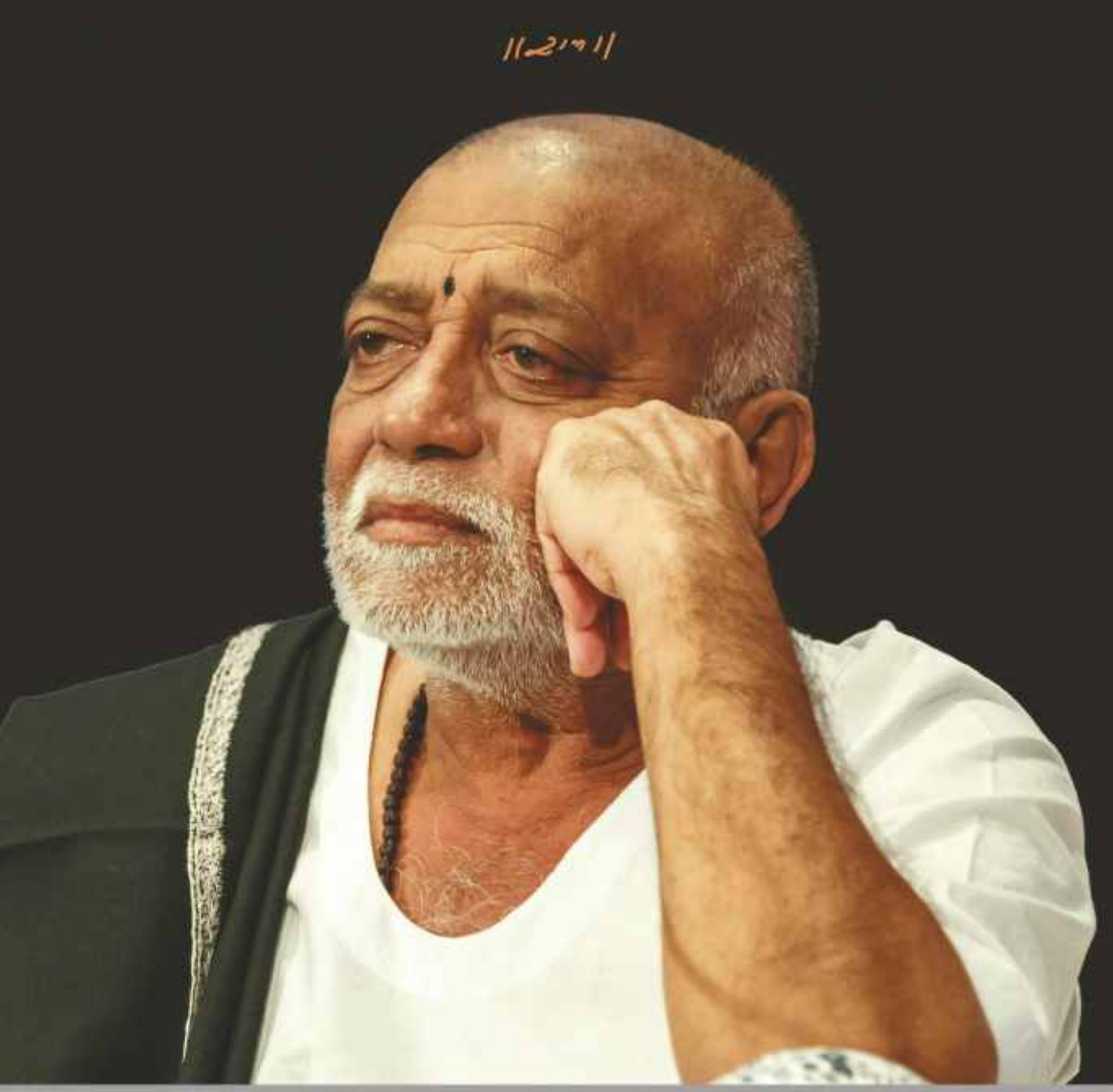

मानस–अपराध

रायपुर (छत्तीसगढ़)

# ॥ रामकथा ॥

मोरारिबापू

सुनु सुरेस रघुनाथ सुभाऊ। निज अपराध रिसाहिं न काऊ।।
जो अपराधु भगत कर करई। राम रोष पावक सो जरई।।

श्रीराम कथा
रायपुर छ.ग.

|| **रामकथा** ||
मानस-अपराध

**मोरारिबापू**
रायपुर (छत्तीसगढ़)
दिनांक : १५-०४-२०१७ से २३-०४-२०१७
कथा-क्रमांक : ८१०

**प्रकाशन :**
अगस्त, २०१९

**प्रकाशक**
श्री चित्रकूटधाम ट्रस्ट,
तलगाजरडा (गुजरात)
www.chitrakutdhamtalgajarda.org

**कोपीराईट**
© श्री चित्रकूटधाम ट्रस्ट

**संपादक**
नीतिन वडगामा
nitin.vadgama@yahoo.com

**रामकथा पुस्तक प्राप्ति सम्पर्क-सूत्र :**
ramkathabook@gmail.com
+91 704 534 2969 (only sms)

**ग्राफिक्स**
स्वर एनिम्स

# प्रेम-पियाला

छत्तीसगढ़ की पाटनगरी रायपुर में दिनांक १५-४-२०१७ से २३-४-२०१७ दरमियान मोरारिबापू ने 'मानस-अपराध' विषय पर रामकथा का गान किया। 'रामचरितमानस' में तुलसी ने किन-किन बातों को अपराध माना है, इन अपराधों की चर्चा इस कथा में विशेष रूप में हुई।

बापू ने आरंभ में ही स्पष्ट किया और बार-बार दोहराया कि कोई श्रोता डरे ना कि हम से ये अपराध हो गया! अपराध कौन नहीं करता? कोई चित्त में भय न रखे प्लीज़, यह जागरण का अवसर है। यह आत्मदर्शन है। हमें सावधान होने का यह मौका है। हम जीव हैं। हम से अपराध हो जाते हैं। हमें पता ही नहीं लगता ऐसे-ऐसे अपराध हम करते हैं। लेकिन इससे डरने की जरूरत नहीं। हम थोड़े जागृत हो इसलिए इस कथा में 'मानस-अपराध' सब्जेक्ट पसंद कर रहा हूं। आज तो मैं 'मानस-अपराध' कर रहा हूं। और फिर कभी कहीं 'मानस-क्षमा' करूंगा।

पाप और अपराध की भेदरेखा स्पष्ट करते हुए बापू ने कहा, पाप आदमी स्वभाव से करता है; अपराध तो कोई न कोई कारण से हम कर बैठते हैं। तीन प्रकार के जीव के संदर्भ में बापू ने ऐसा सूत्रात्मक निवेदन भी किया कि विषयी पाप करता है, साधक अपराध करता है और सिद्ध भूल करता है।

बापू का कहना हुआ कि छः वस्तु का अपराध न करें। एक, किसीकी साधना का अपराध न करें। दूसरा, किसी के साधन का अपराध न हो। तीसरा, किसी के भी मंत्र का अपराध न किया जाय। चौथा, किसी के सूत्र का अपराध न करें। पांचवां, किसी के शस्त्र का अपराध न हो। और छठ्ठा, किसी के शास्त्र का अपराध न हो।

'रामचरितमानस' में अपराधों का बहुत बड़ा दर्शन है इसकी विशद चर्चा बापू ने सदृष्टांत की। 'मानस' के कौन-कौन पात्रों एवम् प्रसंगों में कैसे-कैसे अपराध हुए हैं, इसका ज़िक्र करते हुए बापू ने 'मानस' के 'अरण्यकांड', 'किष्किन्धाकांड', 'सुन्दरकांड' में जयंत, वालि, सुग्रीव, संपाति, समुद्र इत्यादि के दृष्टांत देकर परिस्थिति, बाहुबल का अभिमान, अत्यंत विषयभोग, जवानी का अभिमान और समृद्धि के कारण आई जड़ता जैसे 'मानस' में निर्दिष्ट अपराध के कुछ जन्मस्थान भी रेखांकित किये।

'मानस-अपराध' रामकथा के माध्यम से मोरारिबापू ने 'मानस' के परिप्रेक्ष्य में जीव से सहज-स्वाभाविक होते अपराधों का परिचय दिया और इन अपराधों से बचने के लिए जागृत भी किया।

– नीतिन वडगामा

## पाप आदमी स्वभाव से करता है, अपराध कोई कारण से हम कर बैठते हैं

सुनु सुरेस रघुनाथ सुभाऊ। निज अपराध रिसाहिं न काऊ।।
जो अपराधु भगत कर करई। राम रोष पावक सो जरई।।

बाप! भगवत्कृपा से आज से नव दिन के लिए छत्तीसगढ़ राज्य की पाटनगरी में-रायपुर में रामकथा का आरंभ हो रहा है उसकी मुझे भी खुशी है। मुझे पता नहीं कि इतनी सालों बीत गई, जो अभी आपने बताया कि इतने सालों के बाद कथा होने जा रही है। खैर! जब जोग, लगन, ग्रह, बार, तिथि होती है तभी कथा होती है। ऐसा कुछ संयोग बना। अभी-अभी छत्तीसगढ़ की जनता की ओर से यहां के प्रथम नागरिक महामहिम आदरणीय राज्यपालश्री महोदय पधारे। पूरे राज्य की ओर से व्यासपीठ के प्रति अपना आदर और श्रद्धा व्यक्त की। बहुत-बहुत धन्यवाद। मुझे स्मरण भी करा रहे थे कि बापू, सालों पहले अमृतसर में जब कथा थी तब मिलन हुआ था। आप आये। व्यासपीठ को विशाल हृदय से आदर दिया। यह आपके संस्कार का आपने परिचय दिया। फिर एक बार मैं प्रसन्नता व्यक्त करता हूं। साथ-साथ यहां के आदरणीय मंत्री महोदयश्री और यहां के सभी आगेवान गण। बहुत साल से रायपुर की जनता का आग्रह तो था ही लेकिन कहीं योग नहीं बन रहा था। हमारे महात्माजी ने बीच में निमित्त बनकर मुझे बार-बार आग्रह भी किया कि जो समय दो; तो यह समय निश्चित हुआ। मैं पुनः एक बार आपकी श्रद्धा, आपके आदर को प्रणाम करता हूं।

मुझे याद है, इतने सालों पहले जब यहां आना हुआ; इस भूमि पर, इस प्रांत में, इस भू भाग में 'रामचरित मानस' के बहुत संस्कार है। यहां रामकृष्ण मिशन केन्द्र और उस समय जो वर्तमान अध्यक्ष थे ब्रह्मलीन पूज्य आत्मानंदजी महाराज; तो प्रति वर्ष अपना 'रामायण' के प्रति आदर प्रगट करते और बड़े विद्वान 'रामचरितमानस' के आप रहे। और मैं न भूलता हूं तो 'रामचरितमानस' के नभ के बहुत पुण्यशाली नक्षत्र पूज्य रामकिंकरजी महाराज की कथा प्रति वर्ष यहां हुआ करती थी जिसका मैं साक्षी हूं। यहां से 'विवेकज्योति' मेगझिन निकलता था। सालों पहले की बात मैं करता हूं। उसमें 'रामचरितमानस' का कोई ना कोई प्रकरण अवश्य होता था। मेरे पास भी वो मेगझिन आया करता था। मैं देखता रहता था। हमारे रामकथा के अद्भुत गायक पूज्य राजेश रामायणी भी यहां की जनता को अपना अमृत पिलाते रहे रामकथा का। और कई वक्ता इस भूमि ने दिये हैं, जिसको प्रत्यक्ष मैं जानता न भी हूं। लेकिन यह भूमि 'रामचरितमानस' को बहुत श्रद्धा से सेव्य मानती है। उसकी रामकथा के गायन के नाते मुझे बहुत प्रसन्नता है।

मैं सोच रहा था कि रायपुर की कथा में कौन सूत्र उठाऊं? कौन पात्र उठाऊं? कौन प्रसंग उठाऊं? मेरे मन में कोई निर्णय नहीं आ रहा था। फिर करीब दोपहर तीन बजे के बाद मेरे मन में यह बात उठने लगी कि मैं इस कथा में 'रामचरितमानस' में तुलसी ने किन-किन बातों को अपराध माना है? इन अपराधों की चर्चा करूं। पहले मैं बहुत क्लीयर करना चाहूंगा कि 'रामचरितमानस' अंतर्गत अपराधों का बहुत बड़ा दर्शन है। इसलिए मेरे प्यारे श्रोता भाई-बहनों, कोई डरे ना, कोई भयभीत न हो कि अरर्र! हमारे यह अपराध! क्योंकि सबसे पहले तो मुझे लागू पड़ेगा कि मुझमें कौन-कौन अपराध है? यह आत्मदर्शन है बाप! हमें सावधान होने का यह मौका है। हम जीव हैं, अपराध हो जाते हैं। मैं बार-बार एक शायर के शे'र को क्वोट करता रहता हूं, दिल्ही के शायर दीक्षित दनकौरी साहब का कि-

या तो कुबूल कर मेरी कमज़ोरियों के साथ।
या छोड़ दे मुझे मेरी तन्हाइयों के साथ।

कमजोरियां किसमें नहीं होती बाप! हम जीव हैं। मैं बहुत दिल से कह रहा हूं। मैं मेरे से शुरू कर रहा हूं। क्योंकि हम सबमें कोई ना कोई कमजोरियां होती है। तो अपराध किससे नहीं होते मेरे भाई-बहन? हमें पता ही नहीं लगता ऐसे-ऐसे हम अपराध करते हैं। लेकिन मैं आपसे निवेदन करना चाहूंगा कि 'मानस' के आधार पर कौन पात्रों ने कौन प्रसंग में कैसे-कैसे चूक की? अपराध किया? इससे डरने की जरूरत नहीं है।

मैं पहले दिन ही आगाह कर दूं मेरे छत्तीसगढ़वाले भाई-बहनों को कि 'रामचरितमानस' के 'उत्तरकांड' में गोस्वामीजी ने ऐसा कहा है, जैसे पहले राजाओं का शासन था देश में, राजाशाही थी तो कभी अकाल होता था, राजा के राज्य में सूखा पड़ा हो तो राजा राहत देता था कि इस वर्ष मेरे किसान को कोई कर चुकाना नहीं होगा। इतनी राहत दी जाती थी। बाप! कलियुग एक बहुत बड़ा अकाल है जिसमें हम और आप है, जिसमें आदमी का मन भी मलिन है और समय भी मलिन है। यद्यपि तुलसी ने तो कह दिया कि कलियुग के समान कोई अच्छा युग नहीं। लेकिन जिस रूप में गोस्वामीजी ने कहा, ऐसा हम करने लगे तो कलियुग समान कोई युग नहीं, अवश्य। तो परमात्मा ने, शास्त्रकारों ने कलियुग में ऐसा वातावरण होने के कारण पूरी दुनिया में एक राहत दी हम सबको। तुलसी की चौपाई सुनिए -

कलि कर एक पुनीत प्रतापा।

कलियुग का एक बहुत बड़ा प्रताप है। एक बहुत बड़ा फायदा है कलियुग में, विशेष रूप में। मानो परमात्मा ने, शास्त्रकारों ने, अस्तित्व ने हमें राहत दी कि ऐसा काल है। आप डरो ना।

यह गरज परश्तों का शहर है।

यहां ज़िंदगी की न तलाश कर।

नहीं मिलेगी जिंदगी। आप और हम सब धोखे खाये हुए हैं या धोखे दिये हुए हैं दूसरों के। एक बात पहले दिन कह दूं। मेरे श्रोता सब जानते है कि मेरा कभी भी कोई इरादा नहीं कि मैं उपदेश करूं। उपदेश देना मेरा अधिकार नहीं। मैं आपको उपदेश नहीं दे रहा हूं। दिल से बोल रहा हूं। हम सब मिलकर आओ, हम इस कथा में हमारा आत्मदर्शन करें कि हम कहां है? जैसे पूरी ज़िंदगी हमारे महर्षि रमण ने एक ही सूत्र पर पूरे जगत को संदेश दिया, 'Who am I? Who am I? Who am I?'

यह जब भी देखा है तारीख की नज़रों ने।

लम्हों ने खता की थी सदियों ने सजा पाई।

कभी व्यक्ति, कभी समाज, कभी राष्ट्र, कभी विश्व, कभी कहलानेवाले बड़े लोग, लम्हों में खता कर लेते थे और पूरी शताब्दियां सजा भुगती थी! इस स्थिति में हम जी रहे हैं। हापुडी दादा का शे'र है-

न जवान हूं, न हसीन हूं।

न जमील हूं, न जमाल हूं।

यहां राहबरों का दोष नहीं,

मेरा काफ़ीला गरीब है।

ऐसे जगत में हम जी रहे हैं साहब! तब 'रामचरितमानस' हमें बहुत मदद कर रहा है। तो तुलसी ने हमें बहुत उपकारात्मक, मंत्रात्मक चौपाई दी कि अपराध हो जाये, भूल हो जाये, चूकें होती है। कौन भूल नहीं करता? तो कलियुग में बहुत बड़ा फ़ायदा है। कोई डरे ना हम। और जागृत होकर एक माहौल बदले।

सिर्फ़ हंगामा खड़ा करना मेरा मक्सद नहीं।

मेरी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए।

कभी दुष्यंतकुमार ने कहा था, यह पूरी सूरत बदलनी चाहिए। मैं फिर एक बार कहूं, रामकथा यह धर्मशाला नहीं है, यह प्रयोगशाला है। एक प्रयोग किये जा रहे हैं हम और आप साथ मिलके। कोई उपदेश नहीं है। मैं आपसे बातचीत करता हूं। नव दिन करता रहूंगा। उपदेश तो उपनिषद दे सकता है। आदेश वेद दे सकता है। मैं तो वहां तक कहता हूं मेरे भाई-बहन कि आप रामनाम जपते हो तो रामनाम जपो लेकिन किसी को रामनाम का उपदेश न दो। क्योंकि रामनाम का उपदेश का अधिकार तुलसी ने जीव को नहीं दिया, शिव को दिया है। उपदेश का अधिकार हमारा नहीं। कोई पहुंचे हुए फ़कीर, कोई बंदे, कोई सूफ़ी, कोई संत दे। यह उसका अधिकार है। उसकी यह करुणा है।

तो हम सब कहीं न कहीं दूसरों से अपराध कर लेते हैं। दूसरों को धोखा दिया होगा। कोई ना कोई कमज़ोरियां हम में है। डरने की जरूरत नहीं कि बापू नौ दिन अपराध की चर्चा करेंगे। हम में तो बहुत अपराध है। तो अब क्या होगा? नहीं, नहीं, नहीं। रामकथा अभय करती है। जो धर्म अभय न दे वो धर्म कौन काम का? रामकथा है परमधर्म। तुलसी ने बहुत मंत्रात्मक चौपाई दी है कि जैसे अकाल होता है और राजा कह देते हैं, आपका कर्जा माफ़, आपकी महेसूल माफ़ ऐसे कलियुग एक ऐसा काल है जिसमें ग्रंथों ने, संतों ने हम जैसे पर करुणा करके एक राहत प्रदान की है।

कलि कर एक पुनीत प्रतापा।

मानस पुन्य होहिं नहिं पापा।

गोस्वामीजी कहते हैं, परमात्मा की ओर से लोगों को कलियुग में एक बहुत बड़ा फ़ायदा दिया गया। पवित्र प्रताप उद्घोषित किया गया कि कलियुग में मानसिक रूप में आप शुभ विचार करोगे तो उसका अच्छा फल मिलेगा लेकिन कलियुग में मानसिक रूप में बुरा विचार करे, कुछ अपराधिक विचार करे तो उसका फल नहीं भोगना पड़ेगा। यह हमको एक प्रकार की राहत दी गई। इसका मतलब यह नहीं कि हम अपराध करे। मानसिक फल मिलता है। अच्छा सोचे दूसरों के लिए तो उसका फल मिलता है। क्रिया न भी



कर पाये, किसीको रोटी न दे पाये लेकिन कोई भूखा न रहे ऐसा विचार करे तो उसका फल मिलता है।

मेरे पास कई युवान भाई-बहन आते हैं। दो-तीन दिन पहले ही एक युवा श्रोता ने पूछा था कि बापू, मैंने शरीर से कोई पाप नहीं किया। मैंने वाणी से भी किसी का द्रोह नहीं किया, कोई अपराध नहीं किया। लेकिन कभी-कभी बापू, ऐसी सोच आ जाती है तो उसका? मैंने कहा, तुलसी ने बहुत बड़ी मदद की। तुलसी ने कहा कि कलियुग में मानसिक रूप में कोई अपराध हुआ है तो उसका फल भोगना नहीं पड़ेगा। फिर भी हम क्या करे? इसलिए हम थोड़े ओर जागृत हो इसलिए मैं इस कथा में 'मानस-अपराध' सब्जेक्ट पसंद कर रहा हूं।

आज तो मैं 'मानस-अपराध' कर रहा हूं। फिर कभी कहीं 'मानस-क्षमा' भी करूंगा। 'मानस' में क्षमा का दर्जा क्या है? आप 'रामचरितमानस' का 'बालकांड' का प्रसंग जानते हैं। जब भगवान राम ने शिव धनुष्य तोड़ा और परशुरामजी आये और बहुत आगबबूला होकर कितना क्रोध रहे थे! पूरा नगर कांप रहा था। लक्ष्मण और परशुराम का संवाद होता है। वहां परशुराम इतना अनुचित बोल देते हैं। खबर नहीं, परशुराम की जबान से कितने-कितने अपराध हो गये! लेकिन बुद्धि के कमाड खूल गये तब परशुरामजी महाराज कहते हैं कि हे राघव-

अनुचित बहुत कहेउँ अग्याता।

छमहु छमामंदिर दोउ भ्राता।।

एक बात पहले क्लीयर कर दूं। आपसे बातचीत करता रहूंगा नौ दिन। अपराध पाप नहीं है। प्लीज़, नोट इट। अपराध पाप नहीं है। पाप आदमी सहज स्वभाव से करता है। अपराध कभी-कभी परिस्थिति कराती है। इसलिए हम पापी है, ऐसा कभी मत सोचना। हां, कभी अपराध हो गया छोटा-सा तो जागृत हो जाए। और कलियुग में यदि मानसिक रूप से अपराध हुआ है तो उसका फल भी नहीं मिलता; इतनी हमें राहत दे दी गई। जीवन में बड़ी प्रसन्नता उभर सकती है।

तो यहां 'मानस-अपराध' को लिए हुए बात कहूंगा नव दिन लेकिन कभी कहीं मौका मिला तो 'मानस-क्षमा' भी गाउंगा। अस्तित्व बड़ा क्षमाशील है। संत बड़े क्षमाशील होते हैं। गुरुजन क्षमाशील होते हैं। और माँ कायम क्षमाशील होती है। सच्चा मित्र क्षमाशील होता है। सच्चा राजा क्षमाशील होता है। अपराध करनेवाला अपराध की माफ़ी के लिए कभी-कभी बोलेगा बहुत लेकिन क्षमाशील बहुत कम एक-दो शब्द में क्षमा कर देगा।

तो नव दिन यह आत्मजागृति के दिन है। अभी-अभी हम भारतीयों ने और पूरी दुनिया ने चैत्र नवरात्र मनाए। भगवान रामभद्र के प्रागट्य का उत्सव मनाया। अभी कुछ दिन पहले 'हनुमानजयंती' का उत्सव मनाया। और उसके बाद तुरंत छत्तीसगढ़ में रायपुर में हम साथ में है। आओ, हम ओर जागरण करें। राम प्रागट्य हुआ तो आप 'मानस' से कथा जानते हैं, लोगों को हुआ कि एक महीने का दिन हुआ। सोये ही नहीं; जागते रहे। एक महीने तक लोगों को हुआ कि सूर्यास्त होता ही नहीं! रामजन्म के बाद एक महीने का दिन है वो जागरण का दिन है। और नवमी के बाद यह बीच में कथा आई है इसलिए मैं जागरण पर ध्यान देने के लिए आया हूं। हम सब अपनी विशेष जागृति करें। मास जागरण हो। सामूहिक जागरण। एक होता है व्यक्तिगत जागरण। एक होता है मास जागरण। यह सामूहिक जागरण है, सामूहिक प्रयोग है। यहां जागृति के लिए हम और आप सब आये हैं। लोक कितनी अंधश्रद्धा में, परचों में, छोटी-छोटी बातों में सोये जा रहे हैं, सोये जा रहे हैं, ओर सोये जा रहे हैं! एक तो हम खेतों में काम करनेवाले गरीब लोग, मज़दूर लोग, पीड़ित लोग, उपेक्षित लोग, वंचित लोग पूरे संसार में। ऐसे समय में कुछ ऐसा हो, सामूहिक जागृति हो। धर्मगुरु बहुधा ग्रूपों को सावधान करता है। ग्रूपों की बातें करते हैं। लेकिन सद्गुरु सामूहिक जागरण का मशालची है; वैश्विक जागरण का प्रदाता है। जैसे गांधी, जैसे विनोबा, जैसे रमण, अरविंद, ठाकुर, मीरां, तुलसी, लल्लाबाई, राबिया, मनसूर कोई भी लो। तो केवल जयजयकार यह सब अच्छा है लेकिन जागे, जागे। लोगों में घेलछा बहुत आ गई है!

मुझे कच्छ का एक युवक दो दिन पहले आकर कह गया, बापू, मैं दो दिन तलगाजरडा आकर फिर जाता हूं तो लोग मुझे ऐसी अंधश्रद्धा में अफवा फैलाते हैं कि तलगाजरडा आओ, बापू पास जाओ तो बापू आपको हनुमानजी से बातचीत करा देंगे। ले! मेरा कभी फोन लगा नहीं आज तक! हनुमानजी का नंबर क्या है वो भी मुझे पता नहीं आज तक! लेकिन लोग ऐसी-ऐसी चर्चाएं उठा लेते हैं! वो मेरा फ्लावर है। उसने जवाब बहुत अच्छा दिया कि तू तलगाजरडा आएगा तो हनुमानजी से तो बात नहीं करवा पाऊंगा लेकिन बापू से करा दूंगा। चमत्कारों से, परचों से, दोरे-धागों से इससे बाहर आओ। मेरे भाई-बहन, आत्मजागृति की बहुत जरूरत है। और भगवद्कथा है सामूहिक साधना। मास जागरण, मास अवेरनेस। नवमी के बाद लोग एक महीने तक जागे। रात तो होती होगी। अस्तित्व के नियम के अनुसार पृथ्वी घूमती रहती है तो अस्त-उदय होता ही होगा, लेकिन लोग इतने जाग गये,

रामजनम के बाद तुलसी को लिखना पड़ा, एक महीने का दिन हुआ। लोगों को लगा कि रात होती ही नहीं। अभी एक महीना नहीं हुआ है। रामनवमी के बाद कुछ ही दिन गये हैं। एक महीने तक जागरण का यह अवसर है इसलिए आओ, हम और आप अपने अपराधों से ओर जागे। और जागरण के माध्यम से इन अपराधों की चिंता न करे; इससे डरे ना। लेकिन सावधान हो जाए ताकि आत्मग्लानि से मुक्त हो जाए। आत्मग्लानि पीड़ा देती है हमें।

कलियुग से मन में कोई बुरे विचार आ गये तो उसका पाप नहीं लगेगा; इतनी छूट दी गई, राहत दी गई। और शुभ सोचोगे तो परिणाम अवश्य मिलेगा। कोई श्रोता डरे ना कि हमसे यह अपराध हो गया! अपराध कौन नहीं करता? कोई चित्त में भय न रखे प्लीज़, यह जागरण का अवसर है। कथा का मूल सब्जेक्ट नव दिन तक रहेगा 'मानस' के आधार पर कौन प्रसंग में क्या अपराध हुआ? किस व्यक्ति ने क्या अपराध किया? कहां अपराध किया? याद रखना, यह पाप की बात नहीं है। पाप आदमी स्वभाव से करता है, अपराध तो कोई न कोई कारण से हम कर बैठते हैं। करने नहीं चाहिए अपराध लेकिन हो जाए और परमात्मा को लगे कि यह आदमी अपराधी है तो भी फ़ायदे का सौदा है, क्योंकि उसकी नज़र में तो आ गये! और उसकी नज़र में आना बेड़ा पार!

तो मेरे भाई-बहन, 'रामचरितमानस' के अंतर्गत अपराध की जो कुछ बातें है उसको जागरण के इन पवित्र दिनों में हम अपनी जागृति के लिए उसके बारे में बातचीत करेंगे। 'रामचरितमानस' के 'अयोध्याकांड' से यह दो पंक्ति उठाई है, जो 'मानस-अपराध' शीर्षक के सपोर्ट में है। थोड़ी रूपरेखा दे दूं। थोड़ा मंज़र दिखा दूं। राम भगवान का चौदह साल का वनवास है। भगवान चित्रकूट निवासी है। यहां पिता के मृत्यु के बाद भरतजी उत्तरक्रिया करके पूरी अयोध्या को लेकर रामदर्शन के लिए निकलते हैं। पूरी अयोध्या ने भरत को सत्ता देने का आग्रह किया कि पिता ने आपको सत्ता दी है। आप सत्ता ग्रहण करो। भरत ने दो बात कही कि मैं सत्ता का आदमी नहीं, सत् का आदमी हूं। मैं पद का प्रतिनिधि नहीं, मैं पादुका का प्रतिनिधि हूं। यदि मेरा हित चाहते हो तो मेरे कारण यह अनर्थ हुआ है इसलिए एक बार मुझे चित्रकूट लिये चलो। 'रामचरितमानस' के उस प्रकरण को भी मैं छुऊंगा कि कौशल्या के पास जाकर भरत कितने-कितने अपराधों और पाप की बात करते हैं; यह भी एक बात समझने जैसी है। भरतजी पूरी अयोध्या को लेकर चित्रकूट जाते हैं। भरत के प्रेम को देखकर देवराज इन्द्र को चिंता होने लगी कि हमारी बात बनने जा रही है। अब राम वन आये हैं तो राक्षसों को मारेंगे और हमारे भोग फिर सलामत हो जाएंगे। और यह भरत जाएगा तो राम को लौटा आयेगा। राम लौट गये तो हमारे वो ही दिन, वो ही रात रह जाएंगे! तो भरत कोई भी तरह से राम तक न पहुंचे ऐसा कोई षड्यंत्र रचा जाए। उसकी यात्रा में बाधा डाली जाए कि राम-भरत का मिलन ही न हो पाए। ईश्वर प्राप्ति की यात्रा में मेरे भाई-बहन, केवल जमीन पर से ही विघ्न नहीं आते; आसुरी तत्त्व ही विघ्न नहीं डालते; सुरीतत्त्व भी विघ्न डलते हैं। सब देवता योजना बना रहे हैं कि राम और भरत की भेंट न हो, मुलाकात ही न हो। कुछ किया जाए, बाधा डाली जाए। और सब देव अपने गुरु बृहस्पति के पास गये कि गुरुदेव, कोई उपाय बताओ। यह अच्छा लगता है; भले स्वार्थ से गये लेकिन गये तो गुरुद्वार ही गये। आदमी का आखिरी एक ठिकाना है गुरुद्वार।

'मानस' का यह सहज रास्ता रहा है कि कहीं भी जवाब न मिले तो चले जाओ अपने गुरु के द्वार। आज देवगण गये बृहस्पति के द्वार। गुरुदेव, राम-भरत की भेंट न हो ऐसी कुछ बाधा डाले। गये थे अच्छे ठिकाने पर लेकिन इरादा बहुत बुरा था। गांधीबापू कहा करते थे कि आदमी में साधनशुद्धि होनी चाहिए। गुरुद्वार जाना महिमावंत बात थी लेकिन इरादे में साधनशुद्धि नहीं है। कहा बृहस्पतिजी को, भरत-राम की भेंट न हो; कुछ करो। भरत राम को लौटा लायेंगे तो रावण को कौन मारेगा? और रावण के कारण हम लोग त्रास में जी रहे हैं। गुरु ने बात सुनी तब तुलसी ने बृहस्पति के मुख में यह दो पंक्तियां डाली और सुरगुरु देवगुरु बृहस्पति देवराज इन्द्र को और देवसमूह को कहते हैं कि सुन देवराज, राम का स्वभाव है कि उसका कोई अपराध करे तो राम कभी भी नाराज नहीं होते लेकिन उसके भरत का-संत का यदि तूने अपराध किया तो राम के क्रोधाग्नि में तू जल जाएगा। थोड़ा सावधान करने के लिए, डराने के लिए नहीं, जागरण के लिए। तो उसीको केन्द्र में रखते हुए मेरी व्यासपीठ 'मानस-अपराध' के बारे में आप से बातचीत करेंगी। और हमारी जागृति विशेष हो इसलिए यह सामूहिक जागरण के उत्सव को हम मनाएंगे।

नव दिन की कथा में एक नियम-सा है; यद्यपि मैं प्रवाही परंपरा कहता हूं। वक्ता को पहले दिन ग्रंथपरिचय करवाना चाहिए कि किस ग्रंथ पर चर्चा होगी? जिसको माहात्म्य कहते हैं। मैं केवल ग्रंथ परिचय करवा दूं। 'रामचरितमानस' से कौन अज्ञात है? और जो नहीं जानते वो ठीक भी नहीं। मैं फिर एक बार विश्ववंद्य गांधीबापू को याद करूं। आपने कहा था, जो 'महाभारत' और 'रामायण' से अनभिज्ञ है उसको हिन्दुस्तानी होने का अधिकार नहीं है। और जनजन जानता है कि 'मानस' क्या है? हमारी रक्तवाहिनी में बहता है। फिर भी प्रवाही परंपरा का निर्वहन करने के लिए व्यासपीठ ग्रंथ परिचय कराती है। मूल रामकथा आदिकवि वाल्मीकि ने लिखी। इससे पहले विश्व में कोई श्लोक आया ही नहीं मानो। उसकी 'रामायण' का नाम है रामकथा जो श्लोकों में लिखी गई, गाई गई लेकिन इससे पहले 'रामचरितमानस' रचा गया उसका सर्जक है भगवान शिव। पंडित रामकिंकरजी महाराज कहा करते थे, वाल्मीकि है आदि कवि और शिवजी है अनादि कवि। अनादि कवि की यह रचना है। शिवजी ने उसकी रचना की। वाल्मीकि ने 'रामायण' नाम रखा। शिवजी ने 'रामचरितमानस' नाम रखा। है तो राम की कथा ही। वाल्मीकि ने इस कथा को श्लोक में ऊतारी। 'मानस' की रचना चौपाई में हुई क्योंकि श्लोक को लोक तक पहुंचाना था। आखिरी व्यक्ति तक पहुंचे। वाल्मीकि के श्लोक देहात में रहते लोग नहीं जानते लेकिन तुलसी की चौपाई करीब-करीब सब जानते हैं। तुलसीदासजी का संस्कृत कमजोर था ऐसा कभी मत सोचो। कुछ लोग कहते हैं, उसका संस्कृत ठीक नहीं था! उसको कौन समझाये यार! तुलसी संस्कृत में शास्त्र की अद्भुत रचना कर सकते थे लेकिन गोस्वामीजी ने लोकबोली में डाला। यह था सेतु लोक और श्लोक के बीच में। अनादि भगवान शिव ने 'रामायण' की रचना की। वाल्मीकि ने 'रामायण' नाम रखा। यहां गोस्वामीजी ने 'रामचरितमानस' रखा। गंगा रोज नई होती है। सूरज रोज नया होता है। फूल रोज नया खिलता है। वैसे शास्त्र रोज देशकाल के अनुसार नया होना चाहिए।

वाल्मीकि ने सात कांड लिखे। तुलसी ने कांड नाम नहीं दिया, सोपान नाम दिया। तुलसी ने सात सोपान में ग्रंथस्थ किया-बाल, अयोध्या, अरण्य, किष्किन्धा, सुन्दर, लंका और उत्तर। फिर वाल्मीकि का शब्द बड़ा प्रसिद्ध लोकहृदय में बैठ गया इसलिए हम कांड कहते हैं। प्रथम सोपान 'बालकांड।' प्रथम सोपान 'बालकांड' में तुलसी ने संस्कृत में मंगलाचरण किया और सात मंत्र लिखकर के सबसे पहले तुलसी ने सरस्वती की वंदना की। मैं बहुत विनम्रता से कहना चाहता हूं 'मानस' के गायक के नाते कि जो लोग तुलसी पर ऊंगली उठाते हैं कि तुलसी नारी निंदक रहे! इधर-उधर की एक-दो पंक्ति उठाकर कहते हैं कि तुलसी नारीनिंदक है! दो-चार पन्ने उपर-उपर से देख लिये और लोगों ने इल्ज़ाम लगा दिये! हमारी पूरी परंपरा में 'स्वस्ति श्री गणेशाय नमः।' से सब शुरू होता है, लेकिन तुलसी ने क्रांति की। गणेश पुरुषवाचक है। मुझे जगत को कहना है कि मातृ से शुरू करो। इसलिए तुलसी ने सरस्वती से ग्रंथ का प्रारंभ किया। यह है मातृवंदना।

वर्णानामर्थसंघानां रसानां छन्दसामपि।
मङ्गलानां च कर्त्तारौ वन्दे वाणीविनायकौ।।

आदमी अंदर से ठीक से सोचे तो मातृकृपा से ही हम जीये जाते हैं। इसलिए ऋषियों ने कहा, 'मातृदेवो भव।' पहला बाप नहीं, पहली माँ। मेरे गोस्वामीजी का शास्त्र शुरू होता है नारीवंदना से। 'वन्दे वाणीविनायकौ।' बाद में गणेश। फिर दूसरे मंत्र में शिव और पार्वती की वंदना की। तीसरे श्लोक में त्रिभुवन गुरु के रूप में भगवान महादेव की वंदना की। विशुद्ध वैज्ञानिक वाल्मीकिजी और हनुमानजी की वंदना की। माँ जानकी की वंदना की। श्लोकों में भी पहले सीता की वंदना की, बाद में भगवान राम की वंदना की। कहीं भी नारीनिंदक का एक सूर भी नहीं मिलेगा। बाकी प्राकृतिक भेद है उसको कैसे मिटा पाओगे यार! मातृशरीर मातृशरीर है; पितृशरीर पितृशरीर है। यह प्राकृतिक भेद है। आख़िर में कहते हैं, मेरी कथा में पुराण, आगम, शास्त्र, षडांग सबकुछ है। मेरे अंतःकरण के सुख के लिए इसको मैं भाषाबद्ध कर रहा हूं। बिलकुल देहाती भाषा में लोकबोली में तुलसी शास्त्र का अवतरण कर रहे हैं। पहले गणेश की बात की, फिर विष्णु भगवान की बात की, फिर सूर्य की, फिर शिव की और दुर्गा की। जगद्गुरु आदि शंकराचार्य ने हमको पंचदेव का बोध दिया था। तुलसी वैष्णव परंपरा में, शंकराचार्य शैव परंपरा में मानो सेतु सर्जित कर रहे हैं। शिव का मत है वो अपने शास्त्र में प्रथम स्थापित करते हैं। प्रत्येक व्यक्ति को पंचदेव का आश्रय करना- गणेश, दुर्गा, शिव, विष्णु और सूर्य। हम सब करते हैं। लेकिन युवान भाई-बहनों के लिए गणेश

कोई श्रोता डरे ना कि हमसे यह अपराध हो गया! अपराध कौन नहीं करता? कोई चित्त में भय न रखे प्लीज़, यह जागरण का अवसर है। याद रखना, यह पाप की बात नहीं है। पाप आदमी स्वभाव से करता है, अपराध तो कोई न कोई कारण से हम कर बैठते हैं। करने नहीं चाहिए अपराध लेकिन हो जाए और परमात्मा को लगे कि यह आदमी अपराधी है तो भी फ़ायदे का सौदा है, क्योंकि उसकी नज़र में तो आ गये! और उसकी नज़र में आना बेड़ा पार!

मानी जीवन में विवेक का ध्यान रखना यह गणेशपूजा है। शिव की पूजा करना, दूसरों के कल्याण के बारे में सोचना यह दररोज रुद्राभिषेक है। मूल तो करना ही लेकिन न कर पाओ तो यह सूत्र के रूप में। दुर्गा की पूजा करना। दुर्गा को, भवानी को तुलसी ने श्रद्धा कहा है। मौलिक श्रद्धा, विशेषणमुक्त श्रद्धा बनी रहे यह दुर्गापूजा है। विष्णु का अर्थ होता है व्यापकता। अपना दृष्टिकोण, अपने खयालात व्यापक रखे, संकीर्ण न रखे, हो गई विष्णुपूजा। और प्रकाश में जीने का शिवसंकल्प वह है शिवपूजा। 'तमसो मा ज्योतिर्गमय।' और आख़िर में कहते हैं-

बंदउँ गुरु पद कंज कृपा सिंधु नररूप हरि।
महामोह तम पुंज जासु बचन रबि कर निकर।।

गणेश, शिव, सूर्य, दुर्गा और विष्णु की पूजा करके तुलसीजी 'रामायण' का पहला प्रकरण जगत को देने जा रहा है उसमें गुरु की वंदना है। आरंभ हो रहा है गुरु से।

बंदऊँ गुरु पद पदुम परागा।
सुरुचि सुबास सरस अनुरागा।।

गुरु को नर के रूप में नारायण बताते हुए गुरुचरणकमल की वंदना, चरणकमल ज्योति की वंदना, चरणरज से अपनी आंख को पवित्र करते हुए तुलसी कहते हैं, मैं 'रामचरितमानस' का वर्णन किये जा रहा हूं। वचन बोलने से पहले तुलसी ने नयन शुद्ध किये। जिसके नेत्र शुद्ध उसके सूत्र अतिशय पवित्र होते हैं। नयन शुद्ध नहीं उसकी व्याख्या भी शायद मलिन हो सकती है। तुलसी ने गुरुचरणरज से आंखों को पवित्र किया और कहा कि अब मैं रामकथा कहने जा रहा हूं। क्योंकि आंख पवित्र हो गई तो सब वंदनीय दिखे। सब से पहले पृथ्वी के देवता ब्राह्मण देवताओं की वंदना की। फिर साधुसमाज की वंदना की। तुलसी ने साधुसमाज को प्रयाग की पदवी दे दी। उसके बाद देवताओं की, असुरों की, राक्षसों की सबकी वंदना की क्योंकि दृष्टि पवित्र हो गई फिर किसकी निंदा करे? नरसिंह मेहता के पद को विश्व फलक पर रख दिया गांधीबापू ने-

सकळ लोकमां सहुने वंदे निंदा न करे केनी रे;
वाच, काछ मन निश्चल राखे, धन्यधन्य जननी तेनी रे.
वैष्णवजन तो तेने कहीए जे पीड पराइ जाणे रे।

तुलसी की बहुत प्रसिद्ध चौपाई-

सीय राममय सब जग जानी।
करउँ प्रनाम जोरि जुग पानी।।

सकल विश्व ब्रह्ममय है, ऐसे पूरा जगत सीयराममय है, ऐसा समझकर गोस्वामीजी ने सबको प्रणाम किया। अयोध्या की वंदना की। माँ कौशल्या की वंदना। वहां भी मातृशरीर की प्रधानता। फिर दशरथजी की वंदना की। फिर महाराज जनकजी की, भरतजी की, लक्ष्मणजी की, शत्रुघ्न महाराजजी की वंदना और फिर बीच में पात्र परिचय भी देते जाते हैं और वंदना भी करते हैं। बीच में तुलसीजी हनुमानजी की वंदना करते हैं। मेरे भाई-बहन, आप किसी भी मजहब, साधना पद्धति के हो, मुबारक। पकड़े रहियो। लेकिन अपनी-अपनी साधना में ओर गति करनी है तो हनुमानजी का आश्रय करिए। हनुमानजी बिनसांप्रदायिक तत्त्व है। हनुमान पवनपुत्र है। और वायु न हिन्दु होता है, न मुसलमान होता है। पवन न बौद्ध होता है, न जैन होता है। यह बिनसांप्रदायिक होता है। जिसके द्वारा हमारा जीवन चलता है वो है पवनपुत्र। और हनुमान प्राणतत्त्व है। हमें बल देता है। इसलिए गोस्वामीजी बीच में हनुमानजी की वंदना करते हैं।

हनुमानजी की वंदना, हनुमानजी की स्तुति, हनुमानजी का पाठ-पारायण कोई विशिष्ट मंदिर हो, कोई विशिष्ट नियमावली हो उसमें हम हस्तक्षेप न करे अपनी शालीनता के साथ लेकिन हनुमानजी की पूजा कोई भी कर सकता है। हमारे यहां गलत धारणा डाल दी गई कि बहनलोग हनुमानजी की पूजा न कर सके! क्यों? हम तलगाजरडा में हनुमानजी के सामने बेटियों से ही आरती करवाते हैं और वो बेटियां दलित समाज से ही बुलाते हैं। और इस समय तो हमने आदरणीया सरिताबहन से ही करवाई कि पूजा भी करो आप। एक भ्रांति समाज से टूटनी चाहिए। क्या बहन लोग सांस नहीं लेती है? उसके अंदर हनुमान आया-जाया करता है। तो हनुमानजी की उपासना कोई भी कर सकता है। फिर एक बार कहूं, विशेष नियमावली हो तो जिद्द न करे। बाकी हनुमान हम सबका है। तो हनुमानजी की वंदना आई है। पहले दिन की कथा हम हनुमानवंदना तक रोक देते हैं। तुलसीदासजी का एक बहुत महत्त्व का ग्रंथ है; 'विनयपत्रिका।' और 'विनयपत्रिका' के इस पद में गोस्वामीजी हनुमानजी की वंदना करते हैं। आइए, हम सब हनुमानजी की वंदना करें। बहुत सीधे-सादे शब्द है-

सकल-अमंगल-मूल-निकंदन।
मंगल-मूरति मारुत-नंदन।।
पवनतनय संतन-हितकारी।
हृदय बिराजत अवध-बिहारी।।

मानस-अपराध : २ :

# किसी की साधना का अपराध न करें

'मानस-अपराध', जो इस नवदिवसीय प्रेमयज्ञ का केन्द्रीय विचार है। हमारे जीवन की जागृति के लिए हम उसकी बातचीत कर रहे हैं। एक माहिती के रूप में, कोई भूलचूक हो तो सुधार लेंगे लेकिन 'रामचरितमानस' में कुल बत्तीस बार 'अपराध' शब्द का प्रयोग हुआ है। 'अपराध', 'अपराधा', 'अपराधू', 'अपराधी' इन सभी शब्दब्रह्म को मिलाकर एक गिनती के मुताबिक बत्तीस बार 'अपराध' शब्द का प्रयोग हुआ है।

मैं आपसे प्रार्थना करूंगा बाप कि ये 'अपराध' की चर्चा चल रही है, तो कोई डरे ना। हमारे यहां जब यज्ञ होता है किसी भी देवता-देवी का; चाहे वो पौराणिक हो, चाहे वो वैदिक यज्ञ हो, उसमें एक विधि है कि जो यजमानपद पर बिराजमान हो, उसे हेमाद्रि स्नान करना पड़ता है। इसमें कई चीजों से स्नान करवाया जाता है, गोबर, गौमूत्र, दूध आदि। इसमें यज्ञ के यजमानपद की पात्रता लाने के लिए अपराधों का एक लिस्ट होता है और वहां यजमान के सामने ये नोंध लाई जाती है कि मैंने कभी ये अपराध किया हो तो इससे मुझे मुक्ति प्राप्त हो। ऐसा करने के बाद उसे यजमानपद की पात्रता प्राप्त होती है। इस कथा में हम सब यजमान है। कमिटी ने कथा का आयोजन किया ये निमित्त है। हमारे आदरणीय मंत्री महोदय साहब, जिसके घर मैं ठहरा हूं, आप और आपकी टीम में छोटे-बड़े सब जुड़े हैं ये सब निमित्त है। लेकिन पूरा छत्तीसगढ़ यजमान है। और ये यज्ञ है प्रेमयज्ञ।

रामकथा को मेरी व्यासपीठ प्रेमयज्ञ कहती है, ज्ञानयज्ञ नहीं। क्योंकि ज्ञान हमारी औकात नहीं। मैं जानता हूं, ब्रह्म से हमारे दुःख की निवृत्ति नहीं होती, क्योंकि ब्रह्म तो सदासर्वदा हमारे अंदर है। फिर भी हमारे दुःखों की निवृत्ति हम नहीं कर पाए, इसलिए आचार्यों ने कहा है, ब्रह्म से दुःखों की निवृत्ति नहीं होती है। आत्यंतिक दुःखों की निवृत्ति होती है ब्रह्मज्ञान से। ब्रह्म तो है 'ईश्वरः सर्वभूतानां।' 'भगवद्गीता' का एलान है कि सबमें वो बैठा है। लेकिन ये होते हुए भी हमारे दुःखों की निवृत्ति नहीं होती। ब्रह्मज्ञान होना चाहिए। लेकिन ज्ञान के लिए कितनी-कितनी भूमिकाएं होती है! इसलिए हमने फैसला किया, ये ज्ञानयज्ञ नहीं है। यद्यपि ज्ञान से दुःखों की निवृत्ति होगी। लेकिन ये प्रेमयज्ञ है। हम उसका गान करें। गान करने से भी एक ऐसी पीड़ा प्रगट होती है कि ओर पीडाएं विराम लेती महसूस होती है।

जब हंसी भी किसी की रुलाए।
सब्र लाए तो फिर कहां से लाए?
तुमने गा-गा के जिनको लिखा था।
हमने रो-रो के वो गीत गाए।

कृष्ण ने तो बांसूरी हंस-हंसके बजाई थी, गोपियों ने गोपीगीत रो-रोके गाए थे। प्रसन्नता बांटने के लिए मुरली में गीत गाए थे। और गोपियों ने वो ही गीत रोकर गाए थे।

हमने मांगा था साथ दो कदम का,
उसने क्या-क्या बहानें बनाए।

हे कृष्ण! हमने दो कदम का साथ मांगा था और तूने क्या-क्या बहानें बनाए!

परित्राणाय साधुनां विनाशाय च दुष्कृताम्
धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगेयुगे।

तू चाहता तो चूटकी बजाकर सब ठीक कर सकता था।

राज़ अब तक किसीने न पूछा,
एक जमाना गया मुस्कुराए।
- जमील हापुडी

तो कभी-कभी बड़ी पीड़ा छोटी पीड़ा को विराम दे देती है। गान करने से ये फ़ायदा है। तुलसी ने तो हंसकर चौपाईयां लिखी होगी। वो तो कहते हैं, 'स्वान्तःसुखाय', 'मोरे मन प्रबोध जेहि होई।' इरादा तो उसका खुद के मन का प्रबोध था। कहते थे, मेरी वाणी को पवित्र करने के लिए लिख रहा हूं। तो बाप! ये प्रेमयज्ञ में सब यजमान है और मैं भी यजमान हूं। यजमान को एक ही काम नहीं करना होता। एक यजमान आहुति दे, दूसरा है वो साधनसामग्री लौटा दे। वैश्विक यज्ञ में आचार्य जिसे कहते हैं वो तत्त्वतः यजमान ही तो है। हमारा यज्ञ है, ऐसा कह सके वो यजमान है। ये हमारी कथा है; ये पूरे छत्तीसगढ़ की कथा है।

तो बाप! पात्रता के लिए यज्ञ में हेमाद्रि स्नान कराते हैं। इसमें डरना नहीं है। हमारे शरीर में मिट्टी लग गई; हमने श्रम किया है, शरीर पसीना-पसीना हो गया तो रोना नहीं है, प्रसन्नता से स्नान करना है। वैसे जो भी अपराध हुए हैं मेरे और आपसे तो रोने-धोने की बात नहीं, हम स्नान कर रहे हैं। हम मन के मेल को धोने के लिए यहां बैठे हैं, इसी अर्थ में लेना। कहीं अपराधों की बातें आपकी मुस्कुराहट छिन ना ले, क्योंकि मैं पाप की बातें ज्यादा करता ही नहीं हूं।

एक प्रश्न अच्छा है, 'कल कहा गया कि पाप स्वाभाविक होता है और अपराध किसी ना किसी मजबूरी के कारण होता है, तो कृष्ण ने 'गीता' में कहा, 'सहजं कर्म कौन्तेय।' तो पाप सहज है, तो छोड़ने की बात क्यों?' ध्यान रखना, 'गीता' में ये कर्म की बात कही है, अकर्म और विकर्म की नहीं। पाप कर्म नहीं है, विकर्म है। विकर्म का अर्थ है, समाज से बिलकुल प्रतिकूल कर्म। शास्त्रों से, संतों से, अस्मिता से, विश्व से विरुद्ध कर्म उसे विकर्म कहते हैं। कुकर्म के रूप में भी अकर्म आता है, लेकिन अकर्म याने समस्त कर्म से मुक्ति। सर्वारंभ जिन्होंने त्याग दिया है। 'अरण्यकांड' में शबरी की गति के समय तुलसीदासजी ने एक छंद में लिखा, हे जीव, तू विविध कर्म छोड़ दे, तू अकर्म हो जा।

नर बिबिध कर्म अधर्म बहु मत सोकप्रद सब त्यागहू।
बिस्वास करि कह दास तुलसी राम पद अनुरागहू।।

अनेक कर्मों से निवृत्ति कठिन है, क्योंकि कर्म के बिना जीव एक क्षण भी नहीं रह सकता। मैं तो इतना ही कहूं, करने योग्य कर्म का नाम धर्म है और न करने योग्य करना काम ये अधर्म है। पाप को सहज कहा जाता है, लेकिन ये कर्म की श्रेणी में नहीं है। ये न करने की चीज हम कर रहे हैं। आपने मूल 'महाभारत' का दर्शन किया हो तो उसमें आता है, जब द्यूत खेला गया, द्रौपदी हारी गई उसके बाद कृष्ण आते हैं। उस समय कृष्ण यात्रा में थे और आने के बाद वो युधिष्ठिर से कहते हैं, भैया, मेरे पास ये खबर नहीं पहुंची, वर्ना विकर्म से तुम्हें रोक देता। तुमने ये क्या किया? वहां चार अपराध बताये हैं। एक मद्यपान। दूसरा स्त्री का अयोग्य संग; चाहे स्त्री हो या पुरुष हो; एक-दूसरे को लागू होता है। तीसरा द्यूत। चौथा मृगया। 'रघुवंश' में भी दशरथ के बारे में ये चार बात आती है। बाप! 'महाभारत'काल में भी कृष्ण के मुख से ये चार अपराधों की चर्चा हुई। वहां कहा, जुआ खेलना अपराध है। वहां कृष्ण नल-दमयंती का भी स्पर्श करते हैं कि नल ने जुआ खेला और क्या दशा हुई! दुनिया का उच्चतम वक्ता क्यों न हो? कहीं ना कहीं से उसे दृष्टांत पकड़ना ही पड़ेगा। अपने निवेदन को दृढ़ करने के लिए संदर्भ आवश्यक है।

वक्ता के लिए कुछ वस्तु आवश्यक है। एक, आवाज़। उसके आवाज़ की तासीर न बदले; उसकी आवाज़ जागृत करे। कृपापात्र वक्ताओं का ये लक्षण है। इसमें अहंकार नहीं चलता। दूसरा, स्वयंसिद्ध वक्ता का दूसरा लक्षण है अंदाज़। पेशगी के अंदाज़ होते हैं। कहीं ओवर एक्शन न हो जाए; कहीं सत्त्व रस की जगह बीभत्स रस का स्थापन न हो जाए। इन सब में प्रयास किया तो गए और प्रसाद मिला तो जीत गए बाजी। तीसरा, आगाज़ और अंज़ाम वक्ता को इन दोनों का ध्यान रखना पड़ता है। आगाज़ यानी आरंभ। ये मुद्दा शुरू करूंगा तो इसकी प्रतिक्रिया क्या होगी और इसका परिणाम याने अंज़ाम क्या होगा? मरहूम खुमार बाराबंकी साहब ने कहा था-

आगाज़ तो अच्छा है, अंज़ाम खुदा जाने।

तो आवाज़ की गायकों को ज्यादा जरूरत होती है। जिसका वक्तव्य भी संगीत हो, काव्यरूप हो उसके लिए तो बहुत जरूरी हो जाता है। कई ऐसा वक्ता है वो करते थे प्रवचन लेकिन लगता था संगीत। ऐसे आये कई महापुरुष।

तो बाप! चार अपराध। डरने के लिए नहीं, नहाने के लिए। भक्तिरस का जल है और चौपाई का साबून है। नव दिन नहा लो और अभ्यंतर स्नान हो जाए मेरा और आपका।



भगवान कृष्ण कहते हैं, ये चार वस्तु ठीक नहीं। मैं दूर था। मैं होता तो न होने देता। मेरे भाई-बहन, जुआ अपराध कहा गया है। मद्यपान अपराध माना गया है। शिकार; अपने खेल के लिए, मनोरंजन के लिए निर्दोष प्राणी की हिंसा अपराध माना गया है। और स्त्री या पुरुष अयोग्य संग को अपराध माना गया है। जुआ खेलना है तो दूसरों के साथ मत खेलो, अपने गुरु के साथ खेलो।

चोपाट मांडी में शून्यमां,
रमुं मारा गुरुजीने साथ,
हुं हारुं तो एनी दासी बनुं
अने हुं जीतुं तो राखुं मारी पास।

मेरे गुरु के साथ मैं चोपाट खेलूंगी। मैं हार जाऊंगी तो उसकी दासी हो जाऊंगी और जीत जाऊं तो कहूंगी कि आपको मेरे पास ही रहना पड़ेगा। दोनों हाथ में लड्डू। भारतीय परंपरा में आश्रित और बुद्धपुरुषों के बीच ऐसा खेल है। एक परमक्रीड़ा है ये। लेकिन जिसमें आदमी सभ्यता-संस्कृति हार जाए, अपनी कुलीनता-शालीनता हार जाए और वो भी सज्जन लोग; ये अपराध है। हम इससे बचें। मद्यपान; न पीने की चीज ये अपराध है। मैं किसीको नहीं कहता कि छोड़ दो। मैं प्रतिज्ञा भी नहीं करवाता। मैं ऐसी पीलाने की चेष्टा में हूं कि आपका जो दूसरा पीना है वो अपनेआप छूट जाए। सरकारें योजना बनाती है। सामाजिक संस्थायें कोशिश करती है। शराबबंदी ये अच्छा अभियान है। समाज के हित के लिए है। लेकिन मैं तो इतना ही कहूंगा कि आप ऐसी पीयो कि वो अपनेआप छूट जाए। रस ही न रहे उसमें। वरना मद्यपान अपराध है। अयोग्य संग अपराध है। मृगया भी अपराध है। इन सबसे डरने की जरूरत नहीं। तुलसी के सोरठे या चौपाईयों के साबून से धो डाले। इसलिए कथा है। गोस्वामीजी ने जिन स्वरूप में 'रामचरितमानस' हमारे पास रखा इसमें जीवन का स्नान है। अपराध बहुत आएगा लेकिन डरना मत। मैं और आप सब सावधान जरूर रहे।

हेमाद्रि स्नान की जो बात कि यज्ञ में बैठ पाए, हम प्रेमयज्ञ के अधिकारी हो जाए इसलिए कुछ धोना आवश्यक है। स्नान के समय बुलवाते हैं कि मेरे से भूल से भी कभी पंक्तिभेद हो गया हो तो हे ईश्वर, इस अपराध से मुझे माफ़ कर देना। क्योंकि हम पंक्तिभेद बहुत करते हैं। अपने को रोटी दो, दूसरे से हाथ छिपा लो; अपने को पास बिठाओ, दूसरे को धक्का दो, उपेक्षा करो ये पंक्तिभेद है। कथा में जो व्यवस्था हो वो व्यवस्था बरकरार रखनी चाहिए। ये भेद नहीं है। इरादा व्यवस्था का होता है। कभी-कभी व्यवस्था भी आक्रमक होती है! प्रेमयज्ञ में गलत आहुतियां न डाली जाए। यहां सबका सन्मान है। हम आगे ही बैठेंगे ऐसी जिद्द भी न करे। सबका समादर हो।

स्मरण में आ रहा है तो बोले जा रहा हूं, छः वस्तु का अपराध न करें। एक, किसी की साधना का अपराध न करे। कोई खोडियार माँ को, मेलडी माँ को पूजता है तो ये उनकी श्रद्धा है। तुम पतंजलि का ध्यान करते हो तो तुम्हें मुबारक। कोई बेरखा में 'राम-राम' जप रहा है, कोई माला में जप रहा है। आप नाम जप नहीं करते और 'सोऽहम्' का नाद करते हैं तो आप वो करो। कोई 'राम-राम' जपे उसका अपराध न करो। कोई नमाज़ अदा करता है, उसका अपराध न करो। तुम प्रार्थना करते हो तो इसका वो लोग अपराध न करे। कई लोग तो कहते हैं, ये कथा-बथा बेकार है! तेरे पिताजी को पूछ! किसी की भी साधना का अपराध न हो हमसे। कई लोग कहते हैं, कथा सुनते हैं, कथा गाते हैं ये तोतारटण है। एक कान में डाला, दूसरे कान से निकल गया। कुछ तो अंदर गया। बेकार तो न गया। हो सकता है, ज्यादा कथा आ जाएगी तो ट्राफिक जाम हो जाएगा तो कुछ-कुछ दूसरे रास्ते से बाहर निकल जाएगा, कुछ सूत्र भीतर चला जाएगा। अवसर दो।

दूसरा, किसी के साधन का अपराध न हो। ज्ञानमार्ग उसका साधन है तो भक्तिमार्गवालों को उसका अपराध नहीं करना चाहिए। कोई कर्ममार्गी है तो कर्म उसका साधन है। कोई तीर्थाटन करते रहते हैं। उसकी आलोचना न करो। तीसरा, किसीके भी मंत्र का अपराध न किया जाय। कोई 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' का जप करता है; कोई 'श्रीराम जय राम जयजय राम'; कोई 'अल्लाह अकबर' कहता है; कोई 'बुद्धं शरणं गच्छामि' कहता है; कोई 'नमो अरिहंताणं' कहता है। किसी के भी मंत्र का अपराध न करो। कई लोग समाज में कहते हैं, 'राम-कृष्ण' की बात छोड़ो, बीजमंत्र उठाओ। अरे! राममंत्र भी बीजमंत्र है ये तुम्हें पता नहीं। 'विनयपत्रिका' में लिखा है, 'बीजमंत्र जपिये सदा जो जपत महेस।' बीजमंत्र बोलने की ही मना है। आप बोलकर किसी को नहीं दे सकते। तुलसी को किसी ने पूछा, बीजमंत्र क्या? तो कहा, शंकर को पूछो। शिव ने कहा, ब्रह्म को पूछ। 'रामनाम सब धर्ममय जानत तुलसीदास।' कभी-कभी स्पष्ट कहना मेरा स्वभाव और धर्म भी है। एक बात मैं कहकर जाऊंगा कि रामनाम के समान कुछ भी नहीं है। ये तुलना नहीं है किसी की। मैंने राममहिमा में भी कहा था, 'एहि मँह रघुपति नाम उदारा।' जो उदार होते हैं, उनके

घर बहुत भीड़ होती है। पैसे दो और प्रसाद मिले वहां कौन जाए? दशरथ के आंगन में याचकों की भीड़ लगी रहती है। क्योंकि दशरथ उदार है। रामनाम उदार है, वहां सब आते हैं। रामनाम समादर देता है। ये आख़िरी परमतत्त्व है। ये बीजतत्त्व है।

मेरे पास कई लोग आते हैं, बापू, आप सीधा-सादा कह देते हैं कि हरिनाम लो। फिर हम फलां के पास गए, उसने कहा कि हरिनाम कोई मंत्र है? तू दीक्षा ले, मैं तुम्हें मंत्र दूं। जरूर दो। दीक्षा भी दो, दक्षिणा भी दो। भेद पैदा न करो। आदमी की स्वतंत्रता क्यों छिनी जा रही है धर्म के नाम पर? मैं समझ नहीं पा रहा हूं। जो धर्म परम स्वातंत्र्य का नाम है और बंदी बनाए जा रहे हैं।

चौथा, किसी के सूत्र का अपराध न करे। पतंजलि ने योगसूत्र दिया। तुम में ताकत हो तो तू सूत्र बना, जो वैश्विक हो जाए। लेकिन पतंजलि के सूत्र का अपराध न कर। तेरे पास सांख्यविद्या है तो बना नये सूत्र जो विश्वमंगल के लिए हो। लेकिन सांख्यकारी महापुरुष का तू अपराध न कर। तेरे पास कोई ब्रह्मसूत्र हो तो दे दुनिया को लेकिन भगवान व्यास के ब्रह्मसूत्र का अपराध न कर। तेरे पास भक्ति की विधाएं है तो दे दुनिया को लेकिन 'नारद भक्तिसूत्र' का अपराध न कर। किसी के सूत्र समझ में न आये तो दूर हट जाओ। बिना सोचे दूसरे के सूत्र अपने नाम चढ़ाना भी सूत्र अपराध है। समाज तो बहुत भोला है। उसको कहां खबर, किस का सूत्र है?

पांचवां, किसी के शस्त्र का अपराध न हो। हम शस्त्रधारी देव-देवियों को पूजनेवाले लोग हैं। हमने ठाकुर के सारंग को पूजा, शिव के त्रिशूल को, दुर्गा के खडग को पूजा। इन्द्र के वज्र की सत्ता भी कबूली। आपको पता है कि 'भुशुंड' शब्द एक शास्त्र का नाम है। भुशुंडि के साथ उसका तालमेल क्या है, ये कभी कहूंगा आपको। मैं तो अहिंसा की बात करनेवाला हूं। राम के हाथों से भी मैंने शस्त्र उठवा लिए। शस्त्र की पूजा करो लेकिन शस्त्र से किसीकी हिंसा न करो। पूजा करने के बाद भी हिंसा करनी है तो ये मत करो। 'मानस' के आधार पर कहूं तो शस्त्र का अपराध न करो। शस्त्र किसी बुद्धपुरुष के चरण में अर्पण कर दो। विश्वामित्र ने अपने सभी शस्त्र-अस्त्र राम के चरण में समर्पित कर दिए। परशुराम को भी लगा, मेरे हाथ में धनुष्य की सार्थकता नहीं, सार्थकता तो राम के हाथ में है। मैं तो कईयों की हिंसा करनेवाला हूं। 'भगवद्गीता' में कहा, शस्त्रधारियों में राम मैं हूं। तलवार जगदंबा का प्रतीक है तो सिंदूर लगाओ, कुमकुम लगाओ लेकिन मारो नहीं। इस अर्थ में मैं हथियारपक्षी आदमी नहीं हूं। मैंने हनुमानजी के हाथों से गदा भी निकलवा दी। गदा की जगह सितार रख दिया। फिर मुझे लगा कि आदिवाद्य तो वीणा है। ये माहिती मिली तो इस 'हनुमानजयंती' को सितार भी हटवा दिया और रुद्रवीणा पकड़ा दी। और बाबा खुश है।

आप कहेंगे कि ये अणु-परमाणु फोड़े जा रहे हैं। वो तो होना ही नहीं चाहिए। मैं दैवी शस्त्रों की बातों में सीमित हूं, बाकी एक बम्ब फूटे और हिरोशीमा-नागासाकी में लाखो लोगों को मार दे, ऐसे आण्विक शस्त्रों का तो विनाश ही कर देना चाहिए। ये देवों के हाथ में नहीं है, दानवों के हाथ में है। उसको नष्ट करना आवश्यक है। और जो किसी ना किसी रूप में हमें मार दे वो शस्त्र ही तो है। एक कोई अच्छा राग गा ले तो आप मर जाते हैं, तो ये शस्त्र ही है। उसे तोड़ो मत। उसका आदर करो कि क्या राग गाया है! एक वाद्य बजे, सितार, शहनाई, तबला बजे और वो हमें हिला दे, हम नतमस्तक हो जाए, तो ये शस्त्र ही है। उसके आगे आदर अर्पण करो। हिंसा होती है उस शस्त्र के पक्ष में मैं हूं ही नहीं, याद रखना। भगवान राम के हाथ से शस्त्र ले लेना ये बड़ा मुश्किल काम था। लेकिन मैंने ठाकुर को कहा कि अब छोड़ दे ना बाबा! कई लोगों ने अपना विरुद्ध मत भी पेश किया। लेकिन सब शांत हो गए और बिना धनुष्य-बाणवाले राम की फोटो मंगवाकर रख रहे हैं। शस्त्र अर्पण कर दिए जाए; उसको दूसरा रूप दे दिया जाए। हमारे हनुमानजी के पास जो है, उसका आकार तो गदा का है लेकिन भीतर कुछ ओर है। गदा सूरमयी है।

छठ्ठा, किसी के शास्त्र का अपराध न हो। ओर धर्मी वेद का अपराध न करे और सनातन धर्मावलंबी किसी दूसरे के शास्त्र का अपराध न करे। 'बाईबल' से जो अच्छी चीजें है वो ले ले। पवित्र 'कुर्रान' से जो महोब्बत का संदेश ले लो। 'धम्मपद' से जो हमारे जीवन को विकास और विश्राम मिले वो ले ले। आगमों से हमें आगे बढ़ने की प्रेरणा मिले वो ले ले। शास्त्र का दूसरा अपराध है, शास्त्र में जो बोला है, इसीके नाम से शास्त्र पेश करना चाहिए। जैसे कि 'भगवद्गीता' में 'भगवान उवाच'; तो मैं आपसे पूछुं, कौन भगवान बोले? कृष्ण भगवान बोले ना? कई धर्मावलंबी कहते हैं, 'भगवान उवाच।' ये कृष्ण नहीं बोले हैं, वो तो हमारे भगवान बोले हैं। ये शास्त्र अपराध है। आप 'भागवत' की कथा करो। बिलग संप्रदाय के आप हो तो भी 'भागवतकथा' आपको करनी ही पड़ेगी। क्योंकि ओर कथा आपके पास है ही नहीं! 'भागवत' में कृष्ण बोले, उसकी जगह आप अपने किसी भगवान बोले, ऐसा नाम दो तो ये शास्त्र अपराध है। तुम्हारी श्रद्धा किसी में हो तो मुबारक। हम उसका अनादर न करे। कुल मिलाकर चौबीस अवतार है, उसमें भी हमारे सनातन धर्म में दस अवतार है। कई लोग कहते हैं कि हमारावाला अवतार सबसे ऊंचा अवतार है। ये शास्त्र अपराध है। इन सबको जिसस क्राईस्टवाली बात लागू होती है कि लोगों को पता ही नहीं कि क्या किए जा रहे हैं!

मुझे मेरे त्रिभुवनदास दादा, मेरे सद्गुरु भगवान पर निष्ठा हो तो 'रामचरितमानस' में जो चौपाई राम बोले, तो मुझे जो बोले उसका ही नाम लेना पड़ेगा। मैं कहूं कि त्रिभुवनदास दादा बोले, तो ये शास्त्र अपराध है। यदि मैं ऐसा कहूं तो भी कब तक चले? ऐसा अभी चलता भी है! यहां हम बैठे हैं तो थोड़ा स्नान कर लें तो अपने जीवन में प्रसन्नता भर जाएगी। इसलिए अपराध की बात आये तो डरने की बात नहीं है, जागने के लिए चर्चा हो रही है।

तो पाप है स्वाभाविक कुकर्म। अपराध है परिस्थिति, काल, स्वभाव, गुण से प्रेरित होकर कुछ हम कर बैठते हैं। 'भूल' शब्द भी हमारे यहां आता है। जैसे ट्राफिक नियंत्रण के लिए लाल और हरी लाईट हो और रेड लाईट हो तो भी बिना देखे अथवा तो किसी कारणवश आदमी निकल जाए और पुलिस उसको पकड़े तो इरादा नहीं था लेकिन भूल हो गई। ये भूल है। कथा में भीड़ थी ओर जल्दी निकलने के लिए आपका इरादा नहीं था लेकिन धक्का लग जाए ये भूल है। उसी क्षण कह दे कि 'माफ़ कीजिए' तो बात खतम। चूक उसको कहते हैं कि जैसे कोई मौका हम चुक गए। नगर में कथा थी, हम न जा पाए, अवसर को किसी कारणवश हम चुक जाए, उसको चूक कहते हैं। अपराध को केन्द्र में रखकर जागरण के लिए उसकी चर्चा कर रहे हैं।

'मानस' में गुरु अपराध है। बहुत बड़ा अपराध है। चंद्र ने गुरु अपराध किया। चंद्र बृहस्पति की पत्नी याने गुरुपत्नी के प्रति वो अयोग्य चिंतन करने लगा। इसी कारण उसे शाप मिल गया और वो कलंकित हो गया। उसके सामने भरत एक ऐसा चंद्र तुलसी लाते हैं कि 'गुरु अपराध दोष नहीं दूजा।' जहां गुरु अपराध का कोई दोष नहीं है। तो गुरु अपराध, भगवद् अपराध, संत अपराध, देव अपराध। कई प्रकार के अपराध गोस्वामीजी बिलग-बिलग संदर्भ में लाते हैं। हमसे इनमें से कुछ हुए हो तो चिंता करने की जरूरत नहीं। आगे जरा ज्यादा सावधान रहे। फिर भी अपराध हो जाए तो भी कोई बात नहीं, फिर नहा लो।

बस यही अपराध मैं हर बार करता हूं।

आदमी हूं आदमी से प्यार करता हूं।

एक कथा में अपराध हो जाए तो हो जाए। दूसरी कथा। अपराधवाली कथा छोड़कर क्षमावाली कथा सुन लेना। इतनी छूट के बाद करते हैं तो ग्लानि तो होती है कि बापू ने कहा था फिर भी हो गया। ये पीड़ा आपको न हो, इसीलिए कुछ बातें हैं। बहुत ग्लानि हो जाए तो कृष्ण का अवतार भी हो जाए, 'ग्लानिर्भवति भारत।' ज्यादा ग्लानि करने के लिए फिर ज्यादा अपराध मत करना। लेकिन हो भी गया तो सकारात्मक सोचो कि कहीं मेरे हृदय में कृष्णावतार होगा।

कल पहले दिन की कथा के विराम में हम सबने मिलकर रामकथा के वंदना-प्रकरण में श्री हनुमानजी महाराज की वंदना की। उसके बाद गोस्वामीजी ने राम के जो सखा लोग थे, उनके साथ अवतारकार्य में जुड़े थे उन सब सखाओं की वंदना की। उसके बाद सीतारामजी की वंदना करते हैं। कल हम चर्चा कर रहे थे कि तुलसी ने मातृशरीर की वंदना सदैव पहले की। वंदना-प्रकरण में पहले जानकी की वंदना की, तत्पश्चात् राम की वंदना की। 'मातृदेवो भव।' सबसे पहले। रघुनाथ के चरणकमल की प्रिया के चरणकमल को तुलसी कहते हैं मैं मना रहा हूं, जिससे मुझे निर्मल बुद्धि प्राप्त हो। बुद्धि सबके पास है, बुद्धि की शुद्धि माँ जानकी के चरणों को मनाने से होती है। ज़रूरत है, विशुद्ध बुद्धि की। छोटे-छोटे बच्चों के पास भी

> किसी की साधना का अपराध न करे। कोई खोडियार माँ को, मेलडी माँ को पूजता है तो ये उनकी श्रद्धा है। तुम पतंजलि का ध्यान करते हो तो तुम्हें मुबारक। कोई बेरखा में 'राम-राम' जप रहा है, कोई माला में जप रहा है। आप नाम जप नहीं करते और 'सोऽहम्' का नाद करते हैं तो आप वो करो। कोई 'राम-राम' जपे उसका अपराध न करो। कोई नमाज़ अदा करता है, उसका अपराध न करो। तुम प्रार्थना करते हो तो इसका वो लोग अपराध न करे।

आज कितनी बुद्धि है! सब साधन बेकार है कलियुग में। एक सकल साधन है हरिनाम। माँ के चरण यज्ञ है, दान है, तप है। 'गीता' कहती है, यज्ञ, दान और तप से ही बुद्धि विशुद्ध होती है। मातृचरण यज्ञ है। यज्ञ में आहुति डाली जाती है और यज्ञ करने से बुद्धि विशुद्ध होगी।

मेरी व्यासपीठ का समझना है, मातृचरण में अपने मस्तक की आहुति दो, काटकर नहीं, शिश झुकाकर उसको मनाओ। हमारी सब बौद्धिकता, सब ज्ञान माँ के चरण में आहुति के रूप में समर्पित हो। माँ के चरण दान है, तप है। उसके समान कौन तप करता है? फिर मन, वचन, कर्म से भगवान के चरणकमल जो सुखदायक है, जो राजीवनयन है, भक्त की विपत्ति को भंजन करने के लिए सुखदायी है, ऐसे राम की वंदना की। राम-सीता की वंदना की तो ये दो नहीं है, तत्त्वत: एक है। एक ही ब्रह्म मातृशरीर में जानकी बना, वो ही ब्रह्म पुरुषशरीर में राम बना। गोस्वामीजी कहते हैं, वाणी और अर्थ की भांति, जल और उसके तरंग की तरह देखने में भिन्न है पर है तो एक ही। वैसे सीता राम तत्त्वत: एक है। तुलसी ने वही क्रम पकड़ रखा है। पहले सीता का नाम, फिर राम के चरण को प्रणाम करते हैं। तुलसी का शास्त्र नारीप्रधान शास्त्र है। जिम्मेवारी से कह रहा हूं। जो एक-दो पंक्ति उठाकर तुलसी के सामने ऊंगली उठाई है, वो समझे जरा! किस संदर्भ में किसने कहा, क्यों कहा, कौन बोल रहा है, ये संदर्भ देखने चाहिए। केवल तुलसी पर टूट पड़ना योग्य नहीं है।

वंदना-प्रकरण में तुलसी सबको वंदन कर रहे हैं। अब तुलसी को लगा कि सबसे श्रेष्ठ वंदना है नामवंदना। परमात्मा के मंगलमय कई नाम है। उसकी महिमा अथवा तो वंदना गोस्वामीजी करते हैं।

बंदऊ नाम राम रघुबर को।
हेतु कृसानु भानु हिम कर को।।

कोई 'राघव', 'रघुबंशमणि', 'रघु', 'रघुराज', 'रघुवीर' नाम कहते हैं, इनमें से तुलसी कहते हैं, मैं रामनाम की वंदना करता हूं। जो अग्नि, सूर्य और चांद का कारण है। वेद का प्राण है रामनाम। रामनाम को महामंत्र समझकर शिवजी उसका काशी में उपदेश देते हैं। नाम-श्रवण करने की भी महिमा है। नामजप के भी फ़ायदे हैं। तुम सुन सको उतनी आवाज़ हो वो ठीक है, वर्ना नामजप की आवाज़ नहीं होनी चाहिए। नाम का ऊल्टा जप करने से शुद्धि हो। नाम लिखने से प्रतिष्ठा मिल जाएगी। नामदर्शन का फायदा है। मंत्ररूप में राम-राम रटो तो क्या नहीं होता? भगवान शिव ने भयंकर विष के साथ 'राम' शब्द जोड़कर विषपान किया तो विश्राम हो गया। तुलसी कहते हैं, आज राम प्रत्यक्ष नहीं है हमारे सामने। तो त्रेता में राम ने जो लीलाएं की थी, वो आज कलियुग में भगवान का नाम कर रहा है। त्रेतायुग में राम ने अहल्या को तारी। आज प्रत्येक के पास अहल्या है; याने कुमति, कुबुद्धि, जड़बुद्धि अहल्या है। लेकिन राम प्रत्यक्ष नहीं है, तो कलियुग में भगवान का नाम हमारी जड़मति अहल्या को तार देता है। भगवान राम ने त्रेतायुग में जनकपुर जाकर सीता स्वयंवर में शंभुचाप को तोड़ डाला। आज कलियुग में हमारा अहंकार ही भारी धनुष्य है। रोज-रोज किसी कारणवश अहंकार पुष्ट होता जा रहा है, ऐसे में प्रभुनाम ही हमारे अहंकार के शिवधनुष को तोड़ देता है। त्रेतायुग में राम शबरी, गीध आदि को शरण में लेते हैं। आज नाम कई गरीबों का निर्वहण करता है। त्रेतायुग में रावणादि को निर्वाण देके राम अयोध्या आये और रामराज्य की स्थापना हुई। आज नाम प्रत्येक साधक के हृदय में रामराज्य याने प्रेमराज्य स्थापित करते हैं। सतयुग में लोग ध्यान करते थे, परमतत्त्व का अनुभव कर लेते थे। त्रेतायुग में लोग यज्ञ करके परमतत्त्व का अनुभव करते थे। द्वापर में पूजन-अर्चन करते थे। आज कलियुग में केवल नामजप, नामसंकीर्तन, नामस्मरण, नामदर्शन से ये सब हो जाता है। तुलसी ने वहां तक छूट दे दी कि भाव से जपो, बिना भाव जपो, आलस में जपो कैसी भी स्थिति में आप नाम जपो। गोस्वामीजी कहते हैं, नाम की महिमा कहां तक मैं गाऊं? स्वयं राम नाम की महिमा गाने बैठे तो राम भी अपनी नाम महिमा नहीं गा सकते।

तो मेरे भाई-बहन, आप ध्यान करते हो तो करो। यज्ञ करो, पूजा करो। लेकिन यदि कुछ ना कर पाओ तो हरिनाम लो। हरिनाम याने राम का नाम ही नहीं, कोई भी नाम। आपका जो इष्टदेव हो उसका नाम। अल्लाह तक मुझे आपत्ति नहीं है। आप रामनाम में भाव न रखो, लेकिन जो नाम जप रहा है उसकी आलोचना भी मत करो। आप जो साधना करते हो, आपको मुबारक। लेकिन कोई साधना आपके मन में न बैठे तो हरिनाम लेना। सबसे सरल, स्वाभाविक और फल सबसे ज्यादा, ऐसा है रामनाम। गोस्वामीजी तो कहते हैं, मेरा एकमात्र विश्वास है रामनाम। 'बिश्वास एक रामनाम को।' मैं भी कथा गाता हूं, ये कहता हूं, प्रसंग कहता हूं, लेकिन भीतरी प्राणतत्त्व तो हरिनाम है। मंत्र में विधिविधान होता है, नाम में कोई विधिविधान नहीं। सबकुछ आता हो तो भी नामजप करो। मेरी प्रार्थना जरूर है कि जब समय मिले हरिनाम का अनुसंधान रखो। विश्वकल्याण हरिनाम से होगा। तो नाम की बड़ी महिमा है।

मानस-अपराध : ३ :

# निंदा, ईर्ष्या और अकारण द्वेष करना अपराध है

'रामचरितमानस' में जो रामकथा अंकित है उसमें से 'मानस-अपराध' को केन्द्रीय विषय बनाकर के हम और आप मिलकर संवादी सूर में कुछ विशेष सात्त्विक-तात्त्विक चर्चा कर रहे हैं। 'अयोध्याकांड' में भरतजी चित्रकूट भगवान राम को मनाने-मिलने जा रहे हैं। दोनों भाईयों जो परमप्रेमपूर्ण है, उनका मिलन न हो इसीलिए देवराज इन्द्र सहित सब देवगण चिंतित है कि कुछ ऐसा किया जाय कि दोनों का मिलन न हो। बृहस्पति से प्रार्थना करते हैं, आप हमारे गुरु है, कोई उपाय बताओ कि ये भक्त और भगवान अथवा तो दो प्रेमियों का मिलन न हो। तब बृहस्पति इन्द्र को कहते हैं-

सुनु सुरेस रघुनाथ सुभाऊ।
निज अपराध रिसाहिं न काऊ।।

शिष्य बहुधा प्रभाव से परिचित होता है और गुरु हंमेशा स्वभाव से परिचित होता है। इन्द्र राम के स्वभाव से परिचित है। इन्द्र भरत के प्रभाव से भी परिचित है कि इस आदमी का राम पर इतना प्रभाव हो जाएगा कि ये राम को लौटाकर रहेगा और बनी बात बिगड़ जाएगी। लेकिन उसका गुरु राम के प्रभाव से परिचित है। मैं उनका प्रभाव जानता हूं, मेरे भी कुछ प्रभाव है, ये सब प्रभाववाली बात छोड़कर हम किसी बुद्धपुरुष की शरण में जाते हैं तब असली स्वभाव को सुनने का अवसर मिलता है।

यहां इन्द्र को बृहस्पति ने कहा, 'राम का स्वभाव क्या है, सुनो।' 'रामचरितमानस' की रामकथा में प्रसंग-प्रसंग पर राम-स्वभाव का वर्णन है। एक बार जो स्वभाव जान लेता है, मुझे लगता है वो धन्य हो जाता है। स्वभाव की बड़ी महिमा है। बौद्ध परंपरा में एक शब्द है, 'बुद्ध-स्वभाव।' तिबेटियन धर्मगुरु नोबेल प्राइज़ जिसकी शरण में गया है, भारतरत्न, धर्मपुरुष दलाई लामा को जब एक युरोपियन पत्रकार ने संवाद करते हुए पूछा कि बौद्ध धर्म में बुद्ध-स्वभाव की चर्चा है, ये बुद्ध-स्वभाव क्या है? एक छोटी-सी किताब है, पढ़ने जैसी है। मुझे कई लोग ग्रंथ का दान करते रहते हैं। वैसे मेरी पढ़ने की बहुत आदत नहीं है। 'मानस' और 'रामायण' के सिवा पहले मोरारिबापू ने कुछ पढ़ा ही नहीं। अब तो थोड़ा-थोड़ा पढ़ लेता हूं। मन का स्वभाव है, रोज नये की ओर आकृष्ट होना। और ये स्वभाव ही भटकाव पैदा करता है। क्यों हमारा स्वभाव एक धर्मगुरु को छोड़कर दूसरे धर्मगुरु के प्रभाव में चला जाता है? कई कारण हो सकते हैं। इसीलिए मन नई-नई खोज में लगता है। कभी जप करूं। ओशो ने तो कहा है, ध्यान ही धर्म है। तो कभी लगता है, ध्यान करूं? तो कृष्णमूर्ति ने तो कहा, जागृति ही पर्याप्त है, सावधान रहो। व्यासपीठ कहे कि भगवद्कथा सुनो तो मन खोजता है, कथा ही सुने ओर कुछ नहीं सुनना। मन का जो स्वाभाविक धर्म है।

चंचलता के कारण मन बहुत आयामों में जाता है। अल्लाह करे, मन ही न बचे। लेकिन ये कितनी बड़ी बात है! बल्ब फूट जाता है, लेकिन पावर तो रह जाता है। शरीर छूट जाता है, पुराना चित्त जनम-जनम की यात्रा में निकल पड़ता है। साधक का एक निर्णय होना चाहिए। मैंने अपने फ्लावर्स को बताया है कि उपेक्षा किसी की न करो, अपेक्षा भी अपने बुद्धपुरुष के सिवा किसीसे भी न रखो। अपेक्षा न हो कहीं से। निरपेक्ष ही निर्ग्रंथ हो सकता है, ऐसा 'भागवत' में लिखा है। सिकंदर आया तो उसको कहा गया था कि मुनि को ले आना। सिकंदर एक मुनि को युनान ले जाता है उसका नाम है कल्याणमुनि। जैन परंपरा में थे। यद्यपि सिकंदर की रास्ते में मृत्यु हो गई। कल्याणमुनि ने जाकर युनान में बहुत काम किया। मुझे लगता है, कल्याणमुनि निरपेक्ष था। उसने सिकंदर से जिद्द नहीं की होगी कि नहीं आऊंगा।

हम फ़कीरों से जो चाहे दुआ ले जाए।
हम तो कुछ देने के काबिल ही नहीं,
जिसका जी चाहे जीने की अदा दे जाए।

एक भाई ने पूछा है, 'बापू, मुझे लगता है, मैं बहुत तेज गति से भागा जा रहा हूं। बीच-बीच में कथा में रुक जाता हूं। लेकिन मैं भागता रहता हूं। परेशान हूं, कुछ कहे।' भैया, आदमी भागता क्यों है, पता है? बहुत अनुभव हम सबको होते हैं, हम गौर नहीं करते। आदमी दौड़ता है, भागता है, क्योंकि या तो उसे कोई खिंचता है, या तो कोई उसे धक्का दे देता है। हमें हमारा लोभ खींच रहा है और भय पिछा कर रहा है। हम कितने बट गए हैं अपनेआप में! जब तक आप बिलकुल स्थित न हो जाओ तब तक नये-नये प्रयोग में मत जाओ। अर्जुन आखिर में पहुंचा है, 'स्थितोऽस्मि।'

कुदरत ने तो बक्षी थी यहां एक ही धरती,
तुमने यहां भारत, कहीं इरान बनाया।

मेरे लिए तो 'वसुधैव कुटुम्बकम्।' पूरा जगत मेरा है। इसीलिए कल्याणमूर्ति चला गया होगा। मुनि की व्याख्या है, अपेक्षामुक्त चित्त। यदि चुनने में देर लगे तो थोड़ा घूम भी लो लेकिन थोड़ा निर्णय भी तो होना चाहिए।

दलाई लामा तो मुस्कुराते ही रहते हैं। उसे पूछा गया कि बुद्ध-स्वभाव के बारे में कुछ कहो। बहुत विद्वत्ता प्रदर्शित नहीं करते; लंबी-चौड़ी व्याख्या नहीं करते; बहुत सीधे-सादे धर्मगुरु है। हम धर्मशाला में उनके स्थान पर मिलने गये तो दलाई लामा ने दो-चार बार सबको कहा कि बैठ जाइए। तो मेरे साथ थे उसमें से किसी ने कहा, हम बहुत कम्फर्टेबल है। दलाई लामा ने कहा, आप है, मैं नहीं हूं! उन्होंने उस प्रश्न के उत्तर में कहा, प्रत्येक व्यक्ति का स्वभाव मूल में शांति है। खबर नहीं, किसी कारणवश हमने अशांति आरोपित की है। शांत-स्वभाव ने अशांति के वस्त्र परिधान किये हैं। अशांति का मेकअप किया है। यदि वो हट जाए तो आदमी का मूल स्वरूप प्रकट हो जाए। बुद्ध-स्वभाव याने शांत स्वभाव। कोई भी आदमी कितना भी उग्र हो, इससे पूर्व शांत ही होता है। उग्रता का आवेश मिटने के बाद फिर शांत हो जाता है, क्योंकि मूल में जीना ही पड़ता है। आप यहां इस स्टेडियम में इतने शांत क्यों हो? यहीं पे कोई गेम होती है तो कोई आवाज़ करेगा, शोर करेगा, बहुत हलचल रहेगी। या ओर कुछ भी हो। ये कौन क्रीड़ा हो रही है? हम इतने शांत है? आदमी कुछ घंटे अपने मूल स्वभाव में चला जाता है। मैं जब बोलते-बोलते दो मिनट चूप हो जाऊं मेरी व्यासपीठ से तो लगता है, मानो कोई है ही नहीं! ये चमत्कार नहीं है, हमारा स्वभाव है, जिसे बौद्ध परंपरा बुद्ध-स्वभाव कहती है। हमने बहुत-से नाप के, बिना नाप के कपड़े पहने हैं। उसके कारण हम अशांत है। स्वभाव ही धर्म है। स्वभाव ही अध्यात्म है। स्वभाव ही हमारा है। बाकी सब पराया है।

राम का स्वभाव क्या है, ये 'मानस' में अत्र-तत्र लिखा है। बृहस्पति इन्द्र को कहते हैं, राम का स्वभाव सुनो। कल जो मिनिस्टर साहब के निवास पर छोटा-सा कार्यक्रम था वहां कबीर के पद के बीच-बीच में बातें कही। कबीर साहब ने स्वभाव पर बहुत काम किया। उन्होंने सहज स्वभाव पर बहुत बल दिया। कबीर तो समाधि के लिए भी आयास-प्रयास से विरुद्ध है। वो तो कहते हैं, सहज समाधि चाहिए। हमारे वृंदावन के बाबा कहा करते हैं, अक्रिय ध्यान। तू चेष्टाएं छोड़। अध्यात्म में हमारी चेष्टाएं हमें बहुत परेशान करती है। जो चेष्टा करता है वो दिल का चिराग बुझाता है, प्रज्वलित नहीं करता। सूरज को जलाया नहीं जा सकता; उदित होने दो। हमारे यहां कहते हैं, मुर्गा बोला, अब सूरज निकलेगा। सूरज निकलता है इसीलिए मुर्गा बोलता है। प्रयास जो प्रज्वलित है उसको बुज़ा देता है। 'सोऽहमस्मि इति वृत्ति अखंडा।' जो 'उत्तरकांड' में ज्ञानदीप की ज्योति की चर्चा है-

चरागे दिल बुझाना चाहता था।
वो मुझको भूल जाना चाहता था।
वो मुझको छोड़ जाना चाहता था,
मगर कोई बहाना चाहता था।
होठ है ज़ख्मी, लहू लुहान लेकिन,
वो बच्चा मुस्कुराना चाहता था।

कल मुझे कहा गया, बापू, कथा सुनते-सुनते हमें एक ही बात समझ में आई। कथा सुनते-सुनते अपने आप को पीड़ा न पहुंचाना ये भजन है। हमें पूरी दुनिया चाहती है। खुद से नफ़रत क्यों करते हो? कोई चाहे न

चाहे, तुम्हें आसमान चाहता है, धरती चाहती है, नदियां चाहती है। अस्तित्व माने केवल व्यक्ति नहीं, समग्र। वो हमें चाह रहा है, इसीलिए तो रोशनी दे रहा है।

कबीर का 'सहज' शब्द, सहज समाधि, सहज जीवन सब कुछ स्वाभाविक, नैसर्गिक, सहज। उसको कहते हैं बुद्ध-स्वभाव। उसको 'मानस' में रघुनाथ स्वभाव कहा है। राम का कोई अपराध करे तो राम को कभी भी गुस्सा नहीं आता। बेन्क में पैसे हो तो निकाले जाए। राम में क्रोध हो तो आये ना! राम में क्रोध है ही नहीं। राम बोधविग्रह है। इसीलिए परम को जानने के लिए उसके विग्रह की चर्चा करते 'मानस' कहता है, 'वन्दे बोधमयं।' तू अखंड बोधमय है। प्रभु का एक स्वभाव ऐसा है कि कभी किसी की पीड़ा देख नहीं पाते। कभी किसी की पीड़ा कोई देख न पाए तो उसे राम समझने में मुझे कोई आपत्ति नहीं। तुम समझो, न समझो। तुम्हारा राम रूपधारी है, पीतांबरधारी है, नव कंज लोचन कंज है। लेकिन इस पहचान से आगे बढ़ो। क्यों मैं राम को गा रहा हूं? हर एक को स्वयंवर की माला लेकर निकलना चाहिए और अपने स्वभाव के अनुसार श्रेष्ठ की पसंदगी करनी चाहिए।

मैंने गत कथा में भी कहा, कथा एक स्वयंवर है। तुम्हें जो अच्छा लगे उसको चुन लो। आनंद से प्रसन्नता से कथा में आओ। ताज़े-तरोज़े होकर आओ। अस्तित्व का स्वयंवर है रामकथा। इसमें से किसी सूत्र को श्रेष्ठ समझकर उसके गले में माला पहना दो। मैं क्यों गाता हूं राम को? क्योंकि राम का स्वभाव मुझे दादा ने सुनाया और मैंने वरण किया कि 'राम समान प्रभु नाहि कहुं।'

मो सम दीन न दीन हित तुम्ह समान रघुबीर।
अस बिचारि रघुबंस मनि हरहु बिषम भव भीर।।
कामिहि नारि पिआरि जिमि लोभिहि प्रिय जिमि दाम।
तिमि रघुनाथ निरंतर प्रिय लागहु मोहि राम।।

यद्यपि हमारी परंपरा में रामसाधना हुई, निम्बार्की होते हुए भी। शिव तो हमारा मुकुटमणि है। माला लेकर घूमते रहो। कोई रघुवर, कोई यदुवर किसी को पसंद पड़े तो। लेकिन प्रभाव देखकर नहीं, स्वभाव देखकर चुनना।

करुनामय मृदु राम सुभाऊ।
प्रथम दीख दुखु सुना न काऊ।।

सुमंत राम को कैकेयीभवन में प्रवेश करवाते हैं। दशरथजी की दशा देखकर गोस्वामीजी राम स्वभाव का जिक्र करते हैं। राम का स्वभाव है करुनामय। करुणा दो प्रकार की होती है। एक कठोर कृपा। मैं छोटा था तब 'कठोर कृपा' पाठ पढ़ने में आता था। गरीब परिवार था और कुछ कामधंधा नहीं करते थे। आंगन में सेब का पेड़ था वो खाते थे। एक आदमी को लगा कि सेब का पेड़ इन लोगों को गरीब बनाए जा रहा है। तो वो मेहमान रात में सफरजन का पेड़ काट देता है। क्योंकि ये लोग इस पेड़ पर ही निर्भर थे, कुछ काम नहीं करते थे। सुबह घरवाले उठे तो चिल्लाये कि इसने हमारी रोजी खतम कर दी! फिर वो कमाने के लिए श्रम करने लगे और एक साल में वो धनी हो गए। फिर दूसरे साल वो ही मेहमान आया तब परिवारवालों को लगा ये कृपा ही थी लेकिन कठोर कृपा थी। राम कठोर कृपा के स्वभाववाले नहीं है। पात्रभेदे कभी-कभी ठाकुर में आरोपित क्रोध दिखता है लेकिन स्वाभाविक नहीं है। स्वभाव तो कोमल है। वो अपराधी पर भी क्रोध नहीं करते। हे विभीषण, दूसरों को सुनकर मेरे स्वभाव के बारे में यकीन न आये तो राम कहते हैं, सुन, मैं मेरा स्वभाव बताता हूं।

तो भरत कहते हैं, मैं मेरे नाथ के स्वभाव को जानता हूं। अपराधी पर भी उसे गुस्सा नहीं आता। विभीषण को राम कहते हैं, तीन लोग जानते हैं मेरे स्वभाव को। लक्ष्मणजी कहते थे, राघव, तेरा स्वभाव हमें मार रहा है ये आपको पता ही नहीं क्योंकि आप सुहृद है, सरलचित्त है, शीलनिधान है; सब पर भरोसा करते हैं। चित्रकूट में लक्ष्मणजी का आक्रोश है, भरत पर भरोसा मत कीजिए राघव, जो आदमी चतुरंगिणी सेना लेकर आये उस पर भी आप भरोसा कर रहे हो? कोई माँ के लाल निकलते हैं जो सब पर भरोसा करते हैं।

बहुत मजबूत रिश्ते थे,
बहुत कमजोर लोगों से।

लेकिन भरोसा ही भजन है। करते रहना चाहिए। राघव सब पर प्रेम करते हैं।

राम का तीसरा स्वभाव, सबको अपने समान ही जानते हैं। भगवान राम के स्वभाव को लक्ष्मण ने ठीक पकड़ा। ठाकुर, ये स्वभाव ठीक नहीं। हमें पीड़ा देता है ये स्वभाव। भरत को राज मिला है और जिसे सत्ता मिले उसे मद आता ही है। और विष की वेल को अमृत के फल नहीं लगते। ये कैकेयी का बेटा है। आप इससे क्या अपेक्षा करते हैं? आपकी शरण में आना था तो चतुरंगिणी सेना क्यों साथ लाया? मौसम के अनुसार जो फल मिले वो आप और जानकी खाते हैं तब मैं कुटिया के पीछे चला जाता हूं, क्योंकि आपका ये खाना मुझसे देखा नहीं जाता! क्या गुनाह किया अयोध्या का हमने? क्या बिगाड़ा भरत का हमने? आप कई बार कहते हैं, हमारे साथ फलाहार करो। मैं कहता हूं, जूठन खाऊंगा। ये मेरा नाटक था। मूलत: बात ये है कि ये मैं देख नहीं सकता। और चित्रकूट में भी चैन से नहीं रहने देता? और भरत आ रहा है। और आप सब पर भरोसा किया जा रहे हैं, सबको अपना समझते हैं? ये राम स्वभाव है। बहुत कम मिले। हो ही नहीं सकता ऐसा ये होता है। बहुत कठिन है।

भगवद्कथा सुनकर स्वभाव का दर्शन करें। मुझे बार-बार पूछा जा रहा है, बापू, द्वेष, इर्ष्या और निंदा जो नकारात्मक परिबल है उसकी आप बहुत चर्चा करते हैं और सत्य, प्रेम, करुणा जो जीवन का मूलमंत्र है उसकी आप बहुत चर्चा करते हैं। मेरा ये बहुत अनुभव है कि ये लोग कभी द्वेष कर सकते हैं? ये कभी इर्ष्या कर सकते हैं? मैंने राम पढ़ाया और वो हराम बोलते हैं? कहीं मेरी चूक है। इसकी कोई ग्लानि भी नहीं। लेकिन देखता तो हूं! मेरे लिए ये तीन नकारात्मक शैतानी परिबल है-द्वेष, इर्ष्या, निंदा। आदमी में कहीं न कहीं दबा द्वेष होता है और द्वेष के कारण वो इर्ष्या करने लगते हैं और इर्ष्या करते तुष्ट नहीं होते तब मुखर होकर निंदा करने लगते हैं। ये कुमारग है। सुमारग है-सत्य, प्रेम, करुणा। मेरे युवान भाई-बहन को कहना चाहता हूं, आध्यात्मिकता छोड़ो, भजन छोड़ो; तुम्हें जीवन में बौद्धिक प्रगति करनी है तो इससे मुक्त रहो। जितनी मात्रा में सत्य, प्रेम, करुणा देखे दिन दूना रात चौगुना होगा। लेकिन इसके सामने कई लोग सत्य, प्रेम, करुणा का प्रयोग भी करते हैं और इसके साथ द्वेष, इर्ष्या और निंदा से भरे होते हैं!



मेरे और आपके मन में कहीं न कहीं द्वेष पड़ा है, वो फिर इर्ष्या करवाता है। और वो ही इर्ष्या से संतोष न मिले तो हम निंदा करते हैं। ये नकारात्मक कुमार्ग है। और ऐसे जगत में सबको अपना समझना। कोई धोखा थोड़ा करेगा? क्या कोई फरेब कर सकता है? क्या कोई किसीको पीड़ा दे सकता है? ऐसा जीना मुश्किल हो जाएगा। तो राम जीए, गोविंद जीए, नरसिंह महेता, जिसस, बुद्धपुरुष जीए। लक्ष्मण कहते हैं, आप समान सब नहीं है, ठाकुर! लक्ष्मण अपनी जगह पर ठीक है और ठाकुर अपनी जगह पर ठीक है।

ठाकुर कहते हैं, मेरा स्वभाव तीन लोग जानते हैं। एक भुशुंडि। 'अस सुभाऊ सुनेहु न देखा।' हे गरुड, राम के जैसा स्वभाव मैंने किसी का सुना नहीं, देखा नहीं, महसूस नहीं किया। मैं रघुपति के समान किसको बताऊं? राम का स्वभाव एक कौआ जान गया और हंस लोग चुक गए! तथाकथित हंस न जान पाए। दूसरा शंभु। शंभु परमहंस है। मेरा स्वभाव महादेव जानता है। महादेव जानता होगा तभी तो निर्णय किया ना कि कथा तो राम की ही हो। जैसे मैंने निर्णय किया, निकला था माला लेकर कि किसके गले में डालूं? और डाल दी राघव के गले में, 'मानस' के गले में। तीसरा गिरिजा। यद्यपि सती नहीं जान पाई थी पर पार्वती के रूप में, गिरिजा जो पर्वत की पुत्री जानती है। रामकथा सुनकर राम स्वभाव को वो जान लेती है। शिव के स्वभाव को भी वो सती के रूप में ठीक से नहीं जान पाई थी। जानती तो ऐसे तर्क-वितर्क नहीं करती। 'नारद भक्तिसूत्र' में लिखा है, समझदार कभी तर्क-वितर्क नहीं करते। तर्क-वितर्क कमजोर आदमी ही कर सकता है। तुम्हें जगत में जल्दी प्रसिद्ध हो जाना है तो आलोचना करें दूसरों की। तो बाप! गिरिजा, शिव, भुशुंडि जानते हैं राम-स्वभाव को।

नाम-महिमा में तुलसी ने 'अपराध' शब्द लिख दिया है, उसके बाद चार-पांच अपराध की चर्चा उसने शिवचरित्र में की है। फिर भवानी भी पार्वती के रूप में सावधान हो गई। तो अवतार के कारण बताते हुए शिव ने कहा, एक बार नारद ने शाप दिया तो 'गिरिजा चकित भई सुनी बानी।' अब उसको पता लग गया कि अपराध क्या चीज़ है। तो भगवान शिव ने स्वभाव जानकर प्रभु का वरण किया। भुशुंडि ने स्वभाव जानकर प्रभु का वरण किया। लोमश ने ब्रह्मा का बहुत वरण किया था लेकिन माला पहनाई राम को। और भवानी ने रामकथा का वरण किया।

तो बृहस्पति राम के स्वभाव के बारे में इन्द्र को सावधान कर रहे हैं, खुद के अपराध पर गुस्सा नहीं करते। अब प्रश्न ये है कि अपराध कराता है कौन? अर्जुन 'भगवद्गीता' में कृष्ण से पूछता है कि न चाहते हुए भी आदमी पाप क्यों करता है? 'काम एष क्रोध एष रजोगुण समुद्भव:।' ये काम, क्रोध, लोभ बहुत भूखे हैं, उसकी भूख कभी पूरी नहीं होती, ये महापापी है। 'मानस' में कौन ऐसा तत्त्व है कि कुछ लोगों ने अपराध किया? एक, आदमी को जब उच्च कुल का अहंकार आता है, आदमी जब उच्च स्थान प्राप्त करता है। तब अपराध करते हैं। उसका एक दृष्टांत 'अरण्यकांड' में है, ये 'मानस-अपराध' है। डरना नहीं प्लीज़, मुझे बहुत डर लगता है कि मेरे श्रोता कहीं भयभीत न हो जाए। ये सब हम में भी होता है। संतों ने तो कह दिया, 'मो सम कौन कुटिल खल कामी।'

तो जो परिस्थिति अपराध की जनेता या जनक है, इनमें 'अरण्यकांड' में एक कारण बताया है जो आदमी को भूल-चूक करा देता है। इन्द्र का बेटा जयंत उच्च कुल है, सुरकुल है। इन्द्र उसका बाप है और ऊंचा घराना है। लेकिन राम कृपालु है, उनके पास आकर छल किया। अपराध का जन्म है। जयंत को लगा, मैं इतने बड़े बाप का बेटा हूं। और 'सीता चरन चोंच हति भागा।' जगदंबा और राम का अपराध है। राम जो कृपालु है, दीन-हीन पर स्नेह करनेवाले हैं, उसके पास जाकर इसने अपराध किया। चिंता न करे, लेकिन सावधान रहे मेरे भाई-बहन कि परमात्मा ने हमें उच्च कुल दिया हो, उच्च प्रगति दी हो तो ये उच्चता कहीं अपराध को जन्म न दे। कभी-कभी उच्च कुल प्रारब्धवश मिल जाए। पात्रता न हो और उच्च निवास मिल जाए तो भी हम अपराध को जन्म दे रहे हैं। अपराध से बचने की कुंजी बताई देवर्षि नारद ने।

नारद देखा बिकल जयंता।
लागि दया कोमल चित संता।।

उच्च कुल को लेकर, उच्च निवास को लेकर चित्रकूट में राम-जानकी प्रसन्नता से बैठे थे वहां जानकी के चरणों में चोंच मारकर अपराध कर बैठा। कभी-कभी आदमी को बाहुबल के कारण बलशाली को अभिमान होने लगता है। और अभिमान के कारण वो अपराध कर बैठता है। प्रमाण है 'किष्किन्धाकांड'; पात्र है वालि। भगवान वालि के

अपराध के सामने बोले कि तू चूक कर रहा है। सुग्रीव को तृण समान मानने लगा! भगवान के सामने तर्क करने लगा तब भगवान ने कहा, हे मूढ़, तुझे बहुत अभिमान आ गया है और ये अभिमान जनक बन गया अपराध का। हमसे भी ऐसे अपराध होते हैं, हम सावधान रहें।

अत्यंत विषयभोग अपराध कराता है। सम्यक् जरूरी है। ऐसा पात्र 'किष्किन्धाकांड' में सुग्रीव है। विषयों ने सुग्रीव का ज्ञान हर लिया। राम को बचन दे चुका था कि चातुर्मास के बाद सीताखोज में कार्यरत रहूंगा। लेकिन चार मास हो गए। भगवान प्रवर्षण पर प्रतीक्षा कर रहे थे। प्रभु ने उसको सबकुछ कर दिया। ये आदमी विषयभोग की अधिक मात्रा के कारण भूल गया। क्योंकि उसे राज, कोश और स्त्री मिल गई। प्रभु का दिया हुआ वचन चुक जाता है, ये अपराध है।

जिसको जवानी का अभिमान हो, उसे लगे जवानी में जो चाहूं कर सकता हूं। और सहज कार्यरत व्यक्ति के सामने जवानी के कारण अभिमान में कभी-कभी आदमी ऊंची उड़ान करने में भूल कर लेता है। और उसका उदाहरण है 'किष्किन्धाकांड' में संपाति। हम दो बंधु, जटायु और मैं। हमारी जवानी थी। सूर्य को मिलने की हमने सोची। हम वहां गए। बेचारा समझ गया कि सूर्य को पता ही नहीं कौन संपाति, कौन जटायु? 'परोपकाराय विभाति सूर्यः।' ये तो निरंतर दूसरों को जीवन देने में अग्रसर है। युवान भाई-बहन, यदि अच्छा संग न हो तो तरुणाई अपराध करा सकती है। तुम्हारी पंख कट जाएगी। हम जागृत हो जाए, बस इतना ही कहना है।

हमारे पास बहुत संपदा है, किसी कारणवश मिल जाए तो अत्यंत संपदा के कारण जड़ता आ गई तो वो आदमी को अपराध कराती है। उसका दृष्टांत मिलता है 'सुन्दरकांड' में। जिसके पास पैसे हो, मैं स्वागत करता हूं। पैसे न हो तो कैसे कथा होगी? आदमीओं को बहुत कमाना चाहिए प्रामाणिकता से, पुरुषार्थ से, किसी के आशीर्वाद से, पितृकृपा से। मेरी व्यासपीठ कहती है, दो हाथों से खूब कमाओ लेकिन बांटने की बात आए तो चार हाथों से बांटो। नर बनके कमाओ और नारायण बनके बांटो। हम कितने हाथों से कमाते हैं, घर के सभी सदस्य कमाते हैं, लेकिन बांटने में बिना हाथ के हो जाते हैं! युवान भाई-बहनों को खूब पढ़ना चाहिए, विज्ञान के युग में आज की टेक्नोलोजी के साथ कदम मिलाने चाहिए, लेकिन अपने मूल को भूले बिना।

समृद्धि बुरी चीज़ नहीं है पर समृद्धि आने पर आदमी जड़ हो जाता है। समृद्धि के कारण आई जड़ता विवेक चुक देती है। और विवेकहीन व्यवहार अपराध ही तो है। 'सुन्दरकांड' के अंत में एक अपराध किया। 'बिनय न मानत जलधि जड़ गए तीनि दिन बीति।' अति मृदु, करुणामय स्वभाववाले राघव को लक्ष्मण ने कहा कि इसके साथ बिनय ठीक नहीं। फिर भी राघव ने कहा, हमें हमारा स्वभाव नहीं छोड़ना चाहिए। हम तीन दिन अनशन करेंगे। समुद्र जवाब न दे तो देखा जाएगा, लेकिन बल का प्रयोग न करे। भगवान अपने हाथ से दर्भ का आसन लगाकर बिराजमान हुए। लेकिन समुद्र की अपनी तरंगायित अवस्था; रत्नाकर होने के कारण अत्यंत समृद्धि के कारण जड़ हो गया। प्रभु ने बहुत अनुनय-विनय किया लेकिन नहीं माना। राम के विनय को जड़ सागर ने ठुकराया। सागर ने अपराध किया लेकिन फिर शांत हो गया। हमें भी यही करना है।

ये सब पात्र अपराध तो करते हैं लेकिन फिर शांत हो जाते हैं और अपराधमुक्त हो जाते हैं। सुग्रीव सुधर गया। स्नान करके आ गया और राम की शरण में आ गया। वालि ने भी अपराध से मुक्ति पा ली। जयंत संत के कहने पर राम की शरण में गया। 'एकनयन करि तजा भवानी।' अपराध से मुक्ति मिल गई। संपाति ने मार्गदर्शन देकर अपने अपराध को धो डाला। सागर भी भगवान से माफ़ी मांगने लगा कि महाराज, आप बाण चढ़ाओगे तो हम सब खतम हो जाएंगे। हम जड़ प्रकृति के हैं। आपने थोड़ा डर दिखाया, अच्छा किया। और प्रभु ने उसे माफ़ कर दिया और अपराध गया।

तो 'मानस' में अपराध के कुछ जन्मस्थान है। सबसे पहले 'मानस' में 'अपराध' शब्द आया, वहीं से शुरू करूं। अपराध हो जाए तो भी डरना मत। बिना समझे निंदा करना अपराध है। जो समझा होगा वो तो निंदा करेगा ही नहीं। किसी की प्रगति की इर्ष्या करना अपराध है। अकारण द्वेष अपराध है। तो डरना नहीं। सुधरने का मौका 'मानस' देता है। मैं तो पूरी कथा करूंगा 'मानस-क्षमा।' कब करूंगा खबर नहीं! तुलसीदासजी नाम महिमा में एक विषय प्रगट करते हैं कि नाम और रूप में श्रेष्ठ कौन? भगवान का रूप श्रेष्ठ कि नाम श्रेष्ठ? तुलसी कहते हैं, नाम और रूप तो परमतत्त्व की उपाधियां है, परमतत्त्व कोई न कोई नाम धारण कर लेता है, कोई न कोई विग्रह धारण कर लेता है। नाम और रूप जो ईश्वर का है उसका वर्णन नहीं हो सकता। गुरुकृपा से जिसकी बहुत विशुद्ध बुद्धि हो वो ही उसको समझ सकता है। जैसे मालिक चले उसके पीछे उसका नौकर चले। जैन साधुलोग आगे चलते हैं, उसका सामान लेकर लोग पीछे चलते हैं। जैसे पति आगे चले, पत्नी पीछे चले। इससे बड़ी नाम की महिमा क्या हो सकती है? नाम है परमात्मा और नामी है सेवक। जहां नाम वहां नामी। जैसे किसी के दरवाजे से नाम लेकर पुकारे तो नामी बाहर निकलेगा। धन्य है तुलसी जो रामनाम को, नाम और नामी को, स्वामी और सेवक के रूप में प्रगट करते हैं। रूप और नाम की जहां भी चर्चा चले, रूप के अनुरूप नाम नहीं होते। नाम और नामी की प्रीति परस्पर है, एक-दूसरे में प्रेम है। कोई कहते हैं, रूप श्रेष्ठ। पाश्चात्य विद्वान बोल गया, नाम में क्या रखा है? और वेदांती लोग तो रूप भी नहीं, स्वरूप को मानते हैं। स्वरूप अनुसंधान करे। तो नाम श्रेष्ठ कि आत्मस्वरूप श्रेष्ठ? ये बात तुलसी ने छेड़ी तो तुलसी सुंदर सटीक न्याय देते हैं-

को बड़ छोट कहत अपराधू।
सुनि गुन भेदु समुझिहहि साधू।।

स्वरूपानुसंधान बड़ा कि नामानुसंधान छोटा ये कहने में अपराध हो जाएगा। न स्वरूप के अपराधी होओ, न नाम के अपराधी होओ। शंकर दोनों है।

संकर सहज सरूपु सम्हारा।
लागि समाधि अखंड अपारा।

अखंड और अपार नामानुसंधान भी और समाधि भी अखंड याने स्वरूपानुसंधान। गोस्वामीजी को किसी ने पूछा, नाम और रूप की चर्चा होती ही है तो कुछ तो होगा ही। उसको कौन समझेगा? तो वो बोले, उसको केवल साधु ही समझ पाएगा। कथन नहीं करेगा क्योंकि कहने में तो चूक हो ही जाएगी। लेकिन साधु समझेगा मन में। बोलेगा नहीं। और जो समझ लेता है, फिर बोलने की क्या जरूरत है? मेरे भाई-बहन, दुनिया में किसी के भी छोटे-बड़े का निर्णय न करे, अपराध होने की संभावना है। कभी-कभी छोटा आदमी क्या निकलता है, क्या पता? और कभी-कभी बड़ा आदमी क्या निकलता है, क्या पता? आज दुनिया उसीमें लगी है, नर बड़ा की नारी बड़ी? दोनों को समझो। तो शिव श्रेष्ठ कि शक्ति श्रेष्ठ, ये कहने में अपराध हो जाएगा। साधु जब समझ जाएगा तो उसकी आंखें निर्णय देगी।

तो 'मानस-अपराध' विषय चल रहा है, तब 'अपराध' शब्द नामवंदना में पहलीबार आया है। एक श्रोता की जिज्ञासा है, 'मैं श्रीराम का उपासक हूं और स्वप्न में यदातदा शिवलिंग का दर्शन होता है। आपके मतानुसार इसका क्या अर्थ है?' आप राम उपासक है तो स्वप्न में शिवदर्शन होना ही चाहिए, ये अच्छा शगुन है। क्योंकि राम और शिव में कोई भेद नहीं है। दोनों तत्त्वतः एक है।

हरिहर एक स्वरूप अंतर नव धरशो,
भोळा भूधरने भजतां भवसागर तरशो.

'मानस' के नाते तीन प्रकार के संबंध से जुड़े हुए हैं। 'सेवक स्वामी सखा सीय पी के।' भगवान शिव राम के स्वामी भी है, मित्र भी है और सेवक भी है। वैसे भगवान राम शिव के मालिक भी, मित्र भी और सेवक भी है।

मुझे बार-बार पूछा जा रहा है, बापू, द्वेष, इर्ष्या और निंदा जो नकारात्मक परिबल है और सत्य, प्रेम, करुणा जो जीवन का मूलमंत्र है उसकी आप बहुत चर्चा करते हैं। मेरे लिए ये तीन नकारात्मक शैतानी परिबल है-द्वेष, इर्ष्या, निंदा। आदमी में कहीं न कहीं दबा द्वेष होता है और द्वेष के कारण वो इर्ष्या करने लगते हैं और इर्ष्या करते तुष्ट नहीं होते तब मुखर होकर निंदा करने लगते हैं। ये कुमारग है। सुमारग है-सत्य, प्रेम, करुणा। जितनी मात्रा में सत्य, प्रेम, करुणा देखे दिन दूना रात चौगुना होगा। लेकिन इसके सामने कई लोग सत्य, प्रेम, करुणा का प्रयोग भी करते हैं और इसके साथ द्वेष, इर्ष्या और निंदा से भरे होते हैं!

मानस-अपराध : ४ :

# साधु की संगत में रुचि नहीं वो अपराध है

'रामचरितमानस' में जिस रूप में रामकथा अंकित है, उसके आधार पर हम अपराध क्या है, इसके बारे में विशेष वार्तालाप कर रहे हैं। इस कथा को शीर्षक दिया गया 'मानस-अपराध।' इसको केन्द्र में रखते हुए कुछ सात्त्विक-तात्त्विक चर्चा संवाद के रूप में हो रही है। आइए, आगे बढ़ें। मैंने इस विषय को चुना और शुरू कर दिया। कई भाई-बहनों की चिठ्ठी मिल रही है, उसमें अपराध-पाप आदि के बारे में जिज्ञासाएं प्रगट हो रही है। मैं नव दिन तक बोलता रहूंगा कि यहां अपराध की चर्चा हो रही है इसलिए प्लीज़, डरे ना। पाप और अपराध, भूल और अपराध में फ़र्क है। भूल और चूक में फ़र्क है। बिलग-बिलग शब्द यद्यपि पर्याय महसूस होता है, सगोत्री लगता है, पर है नहीं। भिन्न है। जुड़वे बच्चें करीब-करीब हमसकल होते हैं, पर है तो दो। एक माँ के गर्भ से निकले हैं, एक दिन ही, कुछ मिनट के बाद पैदा हुआ है, फिर भी परमात्मा की सृष्टि में पुनरुक्ति कहां है? कुछ ना कुछ अंतर रहेगा ही। इसीलिए पाप, अपराध, भूलचूक ये पर्याय है, फिर भी अंतर है।

कल एक जिज्ञासा थी, 'बापू, आपने कहा कि जगत ईश्वर ने नहीं बनाया, ईश्वर ही जगत बन गया है।' हां, परमात्मा कर्ता नहीं, यद्यपि 'जो पालक कर्ता संहर्ता' एक उपाधि है उनके नाम के साथ कि ये पालक, कर्ता और संहारकर्ता भी है। जैसे 'गीता' में कहते हैं-

गतिर्भर्ता प्रभुः साक्षी निवासः शरणं सुहृत्।
प्रभवः प्रलयः स्थानं निधानं बीजमव्ययम्।।

ये सब तू है। फिर भी मूलतः ईश्वर कुछ करता नहीं है। वेदांत ने एक शब्द दे दिया, साक्षी है, दृष्टा है। और जगदीश ही जगत बन गया। तो मेरे श्रोता का प्यारा प्रश्न है कि परमात्मा ही जगत बन गया है तो अपराध, पाप, क्षमा ये हमारे पर क्यों? बात तो पते की है, उपयोगी तर्क है। यदि ईश्वर ही जगत बन गया तो पाप भी ईश्वर ही कर रहा है, पुण्य भी वो कर रहा है, अपराध वो ही कर रहा है और क्षमा भी वो ही दे रहा है, ऐसा ही हो जाएगा। ईश्वर जगत बन गया इसका एक मतलब ईश्वर पानी बन गया। पानी जब ईश्वर बनता है तो पानी के गुणधर्म स्वयं ईश्वर में आरोपित हो जाता है, क्योंकि ये पानी बन गया। फिर पानी का $H_2O$ ईश्वर को भी लग गया। पहाड़ बन गया ईश्वर तो पहाड़ की कठोरता, अचलता ये उपाधि लग गई। ईश्वर चट्टान बन गया तो प्रहार करने का गुण ईश्वर में आरोपित हो ही गया। ईश्वर पृथ्वी बन गया तो सहनशील होना और क्षमा देना ये गुण उसमें आरोपित हो ही जाएगा। ईश्वर सूरज बन गया तो सूरज का ताप, उसकी दूरी ये परमात्मा पर उपाधि लगी। परमात्मा ही जगत बन गया, जीव बन गया तो हम भी तो परमात्मा है, इसीलिए तो वेदांत में आया 'अहं ब्रह्मास्मि', 'सोऽहमस्मि।' परमात्मा भी जब जीव बनता है, तो जीव के धर्म परमात्मा को लागू हो जाते हैं। और 'जीवधर्म अहमिति अधिकाई।' जीव का धर्म है अहंकार। और ये अहंकार आता है तब आदमी अपराध करता है। जीवो में जितने संत है, साधु है वो क्षमाशील है। परमात्मा साधु बन गया तो उस पर आरोपित हो गया क्षमाशील। परमात्मा चट्टान बना है तो उसमें फूल के लक्षण नहीं आएंगे। परमात्मा फूल बन गया तो उसमें प्रहारक शक्ति नहीं आयेगी, महक आयेगी।

तो प्रश्न भी अच्छा है। मुझे जो कहना है वो 'मानस' के आधार पर कहने दो। ये सब रहेगा क्षमा, अपराध लेकिन डरना मत। पाप का प्रायश्चित्त करना पड़ता है। अपराध करते हैं तो प्रायश्चित्त करने का विधान नहीं। गंदे हो गए



हो तो एक बार नहा लो। छोटे-बड़े अपराध के कारण गया या काशी जाने की जरूरत नहीं। यद्यपि हमारी श्रद्धा में सप्तनगरी मोक्षदायिका है। लेकिन ये हमारी श्रद्धा है। मुक्ति मिलती है पर्टिक्युलर मोमेन्ट से एक लम्हे में। मुक्ति के लिए स्थान आवश्यक नहीं; उसी लम्हे में सांस लग जाए परमात्मा से। काशी में ही मुक्ति मिले उसका कई ने विद्रोह किया उसमें प्रथम विद्रोही है संत कबीर। पूरी ज़िंदगी ये फक्कड आदमी डंडा लेकर पंडितों की नगरी काशी में घूमता रहा। और तुलसी 'किष्किन्धाकांड' के आरंभ में कहते हैं-

मुक्ति जन्म महि जानि ग्यान खानि अघ हानि कर।

स्थानविशेष से मुक्ति ये अच्छी बात है। श्रद्धाजगत में बहुत अच्छा है। पूरी ज़िंदगी वो काशी में रहे और मरने के समय वो मगहर चले गए। दुनिया को पता है। मुक्ति के लिए स्थानविशेष की आवश्यकता नहीं, क्षण की आवश्यकता है। मुक्ति समझ से पैदा होती है, स्थानों से नहीं। समझ याने ज्ञान। 'ग्यान मोच्छप्रद बेद बखाना।' फिर भी कोई ये न समझे कि काशी में न मिले। श्रद्धा हो तो काशी में जाओ। पूरी दुनिया काशी जाएगी तो काशी की हालत क्या होगी? एक तो गंगा पूरी तरह स्वच्छ नहीं हुई! अपने मन में मुक्ति छिपी है। मन में कई तरंगे हैं, उसमें से कोई लम्हा जिसे हमारी गुजराती पहुंची हुई समढियाला की गंगासती बोली-

वीजळीना चमकारे मोतीडां परोवो पानबाई,
अचानक अंधारां थाशे।

बीजली कौंधे और उस लम्हे में मोती पीरो देना ये बहुत कठिन है। लेकिन पीरो दे तो मोक्ष। इसीलिए शर्त होती है, घर में बैठकर बीजली नहीं देखी जाती। हम भेदों की दीवारों से आबद्ध है। दरवाजे बंद किए हुए हैं। बीजली की कौंध में मोती पीरोने के लिए साधक को मैदान में आना पड़ता है।

मान रे मूकीने तमे आवो रे मेदानमां।

●

कबीरा खड़ा बाज़ार में।

बीजली की प्रतीक्षा न करो। मेरी मशाल के प्रकाश में भी मोती पीरो लो, मुक्ति तुम्हारे हाथ में है। कबीर बोला, जो खुद को मिटाना चाहते हैं वो मेरे साथ चले।

बड़ा दुश्वार था दुनिया का ये हुन्नर भी।
तुझ से फ़ासला रखना और तुझे अपनाना भी।

कबीर ये हुन्नर लेकर खड़े थे। गंगासती कितनी गणित के साथ जाती है! बीजली तो कोंधती रहती है। सद्गुरु की कृपाएं झलकती रहती है। बुद्धपुरुषों का अनुग्रह तो बीजली की तरह है। लेकिन हम बंदी है; दीवारों में बंद है। मुक्ति किसी नगरी की बेटी नहीं है, समझदारी की बेटी हे।

एक घड़ी आधी घड़ी आधी में पुनि आध।
तुलसी संगत साधु की, कटे कोटि अपराध।

पा घड़ी किसी साधु के समीप चुपचाप बैठ लो तो मिल गई मुक्ति। न काशी जाने की जरूरत, न गया जाने की जरूरत, न प्रायश्चित्त करने की जरूरत, न हेमाद्रि स्नान की जरूरत; गरुड पुराण की तो जरूरत ही नहीं।

धर्म तें बिरति जोग तें ग्याना।
ग्यान मोच्छप्रद बेद बखाना।।

संत द्रोही नहीं होते, विद्रोही होते हैं। कबीर किसी का द्रोह नहीं करते, विद्रोह करते हैं। साधु कभी किसीका द्रोह करे? दुनिया नष्ट हो जाए। साधु तो दया करेगा।

दया गरीबी बंदगी...

गरीबी याने भीखमंगापन नहीं, गरीबी याने स्वभाव की सरलता, सहज स्वभाव। 'साधो सहज समाधि।'

ना बंदगी पसंद है, ना गंदगी पसंद है।
प्रेम में धूली-धूली फूलसी खिली-खिली।
दूध-सी धूली-धूली एक ज़िंदगी पसंद है।

- मजबूरसाहब

दया हो, द्रोह नहीं। 'साहिब मिले सबूरी में।' सबूरी छोड़ो तो साहिब को छोड़ो। ये सीढ़ी है कबीर के द्वारा दी गई। साधुता की सीढ़ी है, संतत्व की सीढ़ी है, वहां पहुंचने की ये सीढ़ी है। भजन स्वभाव से करो। अमीरी के प्रति कोई अपेक्षा नहीं लेकिन बात तो बनती है गरीबी में। 'मन लागो मेरो यार फ़कीरी में।' 'समः सर्वेभूतेषु मद्भक्तिं लभते परां।' समता। 'हनुमानजयंती' में मैंने कहा, हम सब पक्के हैं। पक्के मानी चतुर, होशियार लेकिन पके नहीं हम! पकती तो है एक पल। करोडों-करोडों अपराध माफ़ हो जाएंगे। एकमात्र काम करना है, पहुंचे हुए साधु की संगत। जिसे परमात्मा भी प्रेम करता

हो ऐसे किसी विशेष व्यक्ति की सोबत। अपराध में बदनामी मिलेगी और बदनाम हो कि सदनाम हो, क्या फ़र्क पड़ता है? जिसके पास नाम हो। बदनाम और सदनाम की ऐसी-तैसी! हम इन दिनों में साधुसंग याने कि 'रामचरितमानस' का संग कर रहे हैं। व्यासपीठ साधु है, 'रामचरितमानस' साधु है। 'रामचरितमानस' में कई साधु है। भरत, कौशल्या, विभीषण सब साधु है। साधुओं का घर है 'रामचरितमानस।' करो उसका संग। इससे बड़ा उपयोग क्या होता है? मेरे भाई-बहन, डरना मत। हो गए अपराध, जीव है। तो पाप में, अपराध में, भूल में, चूक में सब बिलग-बिलग शब्द है। परमात्मा की सृष्टि में सबमें कुछ ना कुछ भिन्न है। तो परमात्मा ही जगत बन गया है। वो जीव बना, नर-नारी बना, पहाड़ बना, पृथ्वी बना तो इनके गुणधर्म उसको लागू हो गए इसीलिए अहंकारवश जीव अपराध करता है। और क्षमा बुद्धस्वभाव ये जीव का गुणधर्म है। इसीलिए वो क्षमा भी करेगा। तो मुझे जो पूछा गया उसके बारे में गुरुकृपा से मेरी ये समझ है। साधुसंग में बैठने में कोई नुकसान नहीं। लोग थोड़ी निंदा करेंगे। मीरां ने कहा-

साधुसंग बैठ-बैठ लोकलाज खोई।

तो 'रामचरितमानस' में कुछ पातक-पाप की गणना है; कुछ अपराध की गणना है। दोनों गणना के केन्द्र में संत भरत है। अपराध का अर्थ है उपपातक। पाप में दुर्गति होती है। डरना मत। हमारे में हैसियत ही नहीं कि पाप कर सके। हम करकरके भी कैसे पाप करेंगे? किसी की जेब काटेंगे; किसीसे अपना काम करवा लेंगे; किसीसे अपनी वफ़ा तोडेंगे; झूठ बोलेंगे। जीव बेचारा ओर क्या पाप करेगा? पाप तो किया था रावण ने, कंस ने। डरो मत, लेकिन सावधानी जरूरी है।

जब महाराज दशरथजी की मृत्यु हुई तब 'अयोध्याकांड' में तुलसी कहते हैं, अयोध्या अनाथ हो गई। समय से पहले रघुवंश का सूर्य अस्त हो गया।

राम राम कहि राम कहि राम राम कहि राम।
तनु परिहरि रघुबर बिरहं राउ गयउ सुरधाम।।

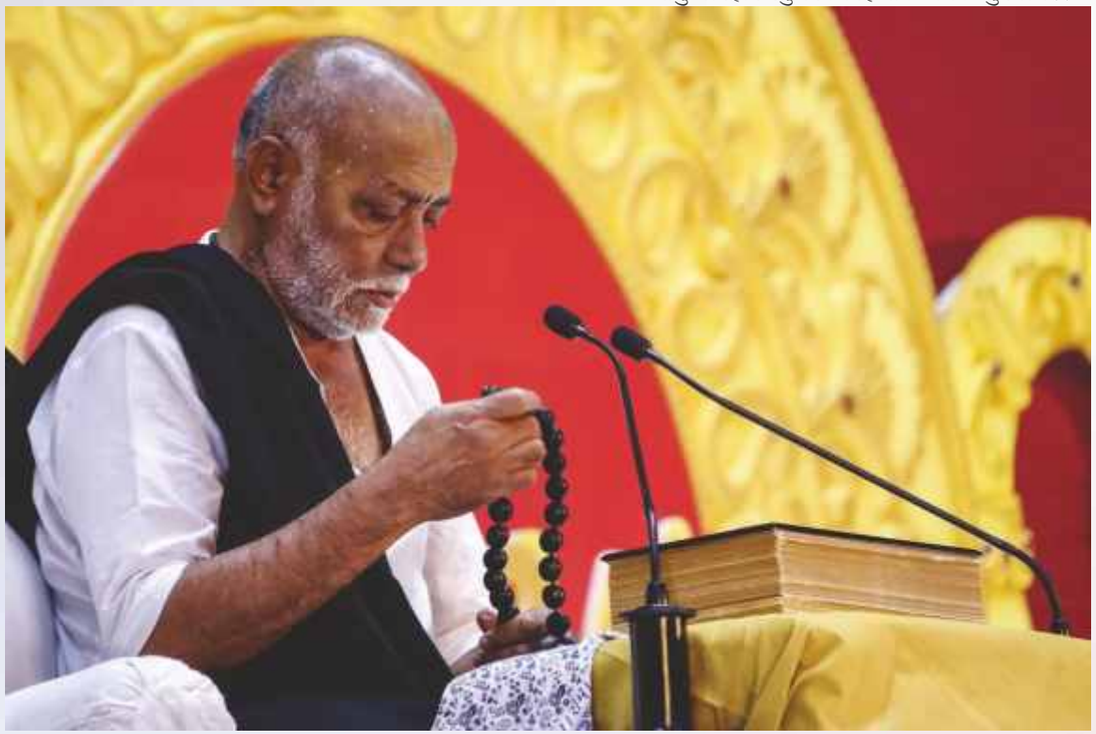



सुमंत ने खबर दी कि अब नहीं आयेंगे राम। तीनों में से कोई नहीं लौटा। तब छः बार राममंत्र का उच्चारण करके महाराज ने शरीर त्याग दिया। इस मृत्यु को नमन करते हुए गोस्वामीजी ने पंक्ति लिखी-

जीअन मरन फलु दसरथ पावा।
अंड अनेक अमल जसु छावा।।

जीवन-मृत्यु का परमफल अवधपति को प्राप्त हुआ। अवध अनाथ हुई। महाराज के शरीर को तेलनौका में रखकर भरत-शत्रुघ्न आए उसकी प्रतीक्षा की जा रही है। घावन लोग कैकेई देश पहुंचे। भरत-शत्रुघ्न को ले आए। भरतजी बहुत रोए माँ कौशल्या के अंक में सिर रखकर।

सोये कहां थे, आंख ने तकिये भिगोये थे।
हम भी किसी की याद में खूब रोए थे।

- बशीर बद्र

फिर भरत को जब ढ़ाढ़स दिया कि मत रोओ तब भरतजी पातक और उपपातक की बात करते हैं। तलगाजरडी दृष्टि में उपपातक याने अपराध। कुछ पातक की गणना पहले की जाए ताकि अपराध भी बाद में समझ में आ जाए।

पहला, अपनी माँ की हत्या करने में जो पाप लगे वो पाप से जो दुर्गति हो वो भरत कहे, मुझे मिले। यदि मैंने कैकेयी से कभी कहा हो कि मेरे लिए राज मांगना और राघव को वन भेज देना। कभी-कभी आदमी पूर्ण निर्दोष होता है और उस पर इल्ज़ाम आने लगते हैं। इल्ज़ामों में वो चुप रहेगा और कहना चाहिए वहां रोकर कहेगा कि मैं इसमें सहमत नहीं हूं। इसलिए तो भरद्वाजजी एक पंक्ति बोले, भरतजी, ये लोग जो-जो कर रहे हैं, आप भी कह रहे हैं, ये मेरे कारण हुआ, वहां तुम्हारा अल्प अपराध भी नहीं है। अबुध, अज्ञानी, असाधु ही तुम्हारा अपराध कहेगा। जो अबुध होगा, अज्ञानी होगा और असाधु होगा वो ही कहेगा। दूसरा, पिता की हत्या का पाप। हत्या याने मार देना ही नहीं है। अपमान भी हत्या है। निर्दोष को गाली दो वो भी हत्या है। तीसरा, गुरु की हत्या का पाप। चौथा, गौशाला जलाने का पाप। पांचवां, ब्राह्मणों का गांव जला दे तो उसका पाप। महिसुर याने मंदिर। किसी मंदिर को जला देना ये भी पाप है। खुमार बाराबंकवी कहते हैं-

चरागों के बदले मकां जल रहे हैं।
नया है जमाना नई रोशनी है।
न हारा है इश्क न दुनिया थकी है।
दीया जल रहा है हवा चल रही है।

दीया कहीं-कहीं होता है, इश्क कहीं-कहीं होता है। और हवा याने निंदा करनेवाले चारों ओर से आते हैं।

मेरे राहबर मुझको गुमराह कर दे,
सुना है कि मंज़िल करीब आ गई है।

छठ्ठा, किसी स्त्री की हत्या करने से पाप होता है। हत्या याने नारी का अपमान। तुलसी नारी निंदक नहीं, नारी विंदक है। स्त्री की महत्ता को जाननेवाला तुलसी। तुम्हारे घर में दासी बनकर रहती है ये उसकी खानदानी है। इसका मतलब अपने आप को लायक न समझो। हम लायक है कि नहीं उसका आत्ममंथन किया जाए। नारी सन्मान होना जरूरी है। एक समय था जब नारीओं का अपमान हुआ, लेकिन अब चक्र बदल रहा है। सातवां, बालक की हत्या पाप है। बालक का निरादर, बालक के प्रति उपेक्षा, कहीं भी, किसी से भी हो गई हो तो सावधान रहे। आठवां, अपने मित्र को तथा अपने राजा को ज़हर देने का जो पाप लगे, उसके कारण जो दुर्गति प्राप्त हो वो भरत कहे, मुझे प्राप्त हो, यदि मेरी माँ को कभी कहा हो कि राम को वन देना और मेरे लिए राज मांगना।

संसार में जितने पातक-उपपातक है। पाप-उपपातक जैसे मुख्यमंत्री-उपमुख्यमंत्री, मुख्य वक्ता-उपवक्ता। पहले कथा में भी ऐसा होता था। पहले की कथा में सब समझाते थे। मत्स्यगंधा धीवर की बेटी, श्यामवर्णी, नाजुक, सुंदर थी। पराशरमुनि के मन में उसके प्रति आसक्ति पैदा हुई और वो उसका हाथ पकड़ता है। अवाक्-सी रह गई मत्स्यगंधा। एक नारीजन्य संकोच था। मुनि का संग हुआ और एक बेटे का जन्म हुआ। वो कहती है, मुनि आप तो चले जाएंगे। ये बेटे को कहां रखूं? इतने में नौका एक द्वीप के पास चली गई थी। कहा, मत्स्यगंधा, तू इसमें उसको बड़ा कर। और भविष्य में द्वीप पर बड़ा होने के कारण इसका नाम द्वैपायन व्यास हो जाएगा। वो कहती है कि आपकी बात मैंने कुबूल की। एक पुत्र हुआ ये अच्छी बात है, लेकिन मेरे सामने कौन सन्मान से देखेगा? तब

मुनि ने कहा, मैं तुम्हें वरदान देता हूं, तेरा कन्यापणा अक्षुण्ण रहेगा। और दूसरा वरदान, आज से तुझे मत्स्यगंधा नहीं कहेगा, योजनगंधा कहेगा। तेरी खुश्बू एक योजन तक फैलेगी। दूसरा नाम है सत्यव्रती। जो दाशराजकन्या नौका चला रही थी तब शांतनु आते हैं और शांतनु इसके प्रेम में पागल होता है। दाशराज धीवर को शांतनु ने कहा, आपकी बेटी मुझे दे दो, राजराणी बन जाएगी। दाशराज ने कहा, आप जैसा पति मेरी बेटी को मिले, मेरा सौभाग्य। लेकिन दुनिया हमें छोटा आदमी मानती है, तो छोटे लोग की कुछ कमजोरियां भी होती है। जैसे बड़ो की भी कमजोरियां होती है। तो मेरी एक मांग है, मेरी बेटी से जो पुत्र होगा वो ही आपका वारसदार होगा, ओर कोई नहीं होगा। तब शांतनु को देवव्रत भीष्म याद आया। शांतनु को याद आया, ये राज मुझे अपने देवव्रत को देना है और ये शर्त लगा रहा है। पहली मुलाकात में शांतनु ने इन्कार कर दिया। कर्णोपकर्ण ये बात फैली। देवव्रत को पता लगा कि मेरे पिताजी को सत्यवती पसंद आ गई है और मेरे कारण वो प्रस्ताव कुबूल नहीं कर रहा है। धन्य है, ऐसा बाप मुझे मिला। और युवान देवव्रत अवसर पाकर सत्यवती के पास पहुंचता है, देवी, मेरे पिता ने आपके हाथ की मांग की है। मैं आपके पिता से मिलना चाहता हूं।

दाशराज धीवर आया। आदर दिया, देवव्रत ने कहा, मैं मेरे पिता की ओर से आपको वादा करता हूं कि आपकी कन्या मेरे पिता से ब्याहे और उसका जो बेटा होगा वो राजा का अधिकारी होगा। आप हां कह दो। मेरे पिता की इच्छा पूरी करनी है। फिर दाशराज ने कहा, आप तो अधिकार छोड़ रहे हैं, लेकिन आपके बच्चे अधिकार मांगे तो? उसी समय यमुना जल लेकर प्रतिज्ञा लेते हैं भीष्म कि मेरे बाप के खातर में आजीवन ब्रह्मचारी रहूंगा। तब से नाम पड़ा भीष्म याने भीषणता। कोई न कर सके ऐसी प्रतिज्ञा ली। बात शांतनु के पास पहुंची। देवव्रत को गले लगाया, बेटा, तूने मेरी वासना पूरी करने के लिए क्या बलिदान दिया है! देवव्रत ने कहा, इस कारण मैं संयमी और तपस्वी रह पाऊंगा। यहां मैं आदरणीय गुणवंतभाई शाह को याद करूं। उन्होंने अपने भाष्य में कहा, देवव्रत यदि राजा हुआ होता तो 'महाभारत' का युद्ध न हुआ होता। खयाल अच्छा है, बाकी हम सब नियति की मुठ्ठी में है। यहां तो मेरा गोविंद चाहे वो ही होता है। हम अपने इरादे रख सकते हैं, बाकी नियति किसीको नहीं छोड़ती।

तो पाप और उपपाप। पातक है पाप और उपपातक है अपराध। 'करम बचन मन भव कवि कहही।' पाप का जन्म है कर्म से, बचन से, मन से। काम को मन का बेटा बताया। इसीलिए उसे मनोज, मनसिज कहा गया है। मानवी के मन में पाप जन्म लेता है। फिर मन में जन्मा पाप कभी-कभी बचन में आने लगता है। उपनिषद का एक सूत्र है, मेरी वाणी मेरे मन में समाहित हो। मेरा मन मेरी वाणी में समाहित हो। मन और वाणी को एक-दूसरे में डूबोते हैं। मैं जो बोलूं उसमें पूरा का पूरा मेरा मन ऊतरो। और मेरे मन में जो हो वो पूरा का पूरा मेरी वाणी में निकलो। ये उपनिषद का अर्थ है। वाणी में रहा पाप कर्म में प्रवृत्त होने लगता है। उसकी जो-जो गति होती है वो दुर्गति विधाता मुझे दे, यदि मेरा मन उसमें हो, ऐसा भरत कहते हैं। भरत कहते हैं, हरि-हर के चरण का आश्रय और उनकी भक्ति छोड़कर जो भूत-प्रेत की घोर साधना करते हैं, उसकी जो दुर्गति हो वो मेरी हो जाए। भरत कहते हैं, यदि मैंने माँ से राज की मांग की हो।

भूत-प्रेत की साधना माने चमत्कारोंवाली साधना, अंधश्रद्धा, तंत्रसाधना; उसकी गति अच्छी नहीं होती ऐसा तुलसी ने कहा। और मैंने मेरी आंखों से देखा है कि ऐसी साधना करनेवाले की आखिर में गति अच्छी नहीं। कई को मैंने कोमा में देखा जो मशहूर भूत-प्रेत की उपासनावाले थे! और राष्ट्र के नेतालोग उनके चेले थे! मेरे भाई-बहन, कबीरसाहब ने उस काल में अंधश्रद्धा निवारण का अच्छा काम किया। तुलसी ने, गुरुनानक ने अच्छा काम किया। 'सभी सयाने एक मत।' रोज सुबह में सूरज निकलता है, ये चमत्कार नहीं है तो क्या है? हमारे तो कोई कर्म ऐसे नहीं कि सूरज निकले। रोज फूल खिलते हैं, चमत्कार नहीं है क्या? रोज हमारे में विश्राम के बाद स्फूर्ति का संचार होता है, चमत्कार नहीं है? ऐसी भूत-प्रेत की साधना में मत जाओ। हरि-हर शरण या तो शिव या तो राम-कृष्ण, या तो तुम्हारे कोई सद्गुरु हो उसकी शरण पकड़ो। अच्छे-अच्छे पदवालों को भी माताजी आती है! पाश्चात्य देशों में भी ये अंधश्रद्धा बहुत चल रही है! मेली विद्या की साधना में मत जाओ, सद्विद्या में जाओ। ज्योतिषी को अपनी रेखा बताओ तो ऐसा पूछो कि हमें कृष्णदर्शन कब होंगे? हमें राघव के दर्शन कब होंगे? हमारे सुख तो तिल के दाने जैसे छोटे हैं, लेकिन दु:ख तो मेरु के समान है।

दुर्गति देनेवाला पातक कौन है? जो वेद को बेचेगा। और धर्म का शोषण करेगा। जो दूसरों के पापों को जाहिर करता है, जैसे निंदक। उसकी जो दुर्गति होती है वो भरत कहे, मेरी हो। मेरे भाई-बहन, वेद को बेचना याने चार्ज निश्चित्त करना। ग्रंथ का पूर्णभावेन आश्रय करे उसे ग्रंथ क्या नहीं देता? लेकिन भरोसा चाहिए। तुलसी कहते हैं, कपटी आदमी की बुद्धि ठीक नहीं होती। कुटिल याने टेढ़ापना। जिसको कंकास-कलह प्रिय है, अत्यंत क्रोधी है और सब बात का विरोध करे ये दुर्गति का मार्ग है, ऐसा तुलसी कहते हैं। लोभी की दुर्गति है। तुलसी ने कहा, जिसके आचरण में लुच्चाई है। जिसका भजन बढ़ेगा, समझदारी बढ़ेगी वो बोलेगा नहीं लेकिन पता लग जाएगा कि ये लुच्चाई कर रहा है। जिसकी दृष्टि पर पैसे पर रहती है और पर नारी को देखकर जिसकी दृष्टि में वासना प्रवेश करती है ये दुर्गति का प्रतीक है। इन सबकी जो दुर्गति होती है, माँ, मैं वही दुर्गति को प्राप्त करूं यदि मेरे माता के निर्णय में मेरा साथ हो।

अब की चर्चा अपराध की है। मैंने उस दिन भी कहा कि महोब्बत यदि अपराध है तो खूब करो। प्रेम परमात्मा का मार्ग नहीं है, प्रेम परमात्मा है।

ढ़ाई आखर प्रेम का पढ़े सो पंड़ित होय।

जिसस क्राईस्ट ने कहा, परमात्मा प्रेम है। लेकिन खुद ने जब महसूस किया तो कहा, प्रेम ही परमात्मा है। और गांधीबापू ने कहा, परमात्मा सत्य है, लेकिन महसूस किया तो कह दिया, सत्य ही परमात्मा है। मेरी जीवनयात्रा का निचोड़ ही मैंने दुनिया के सामने रखा है- सत्य, प्रेम, करुणा। सत्य खुद के लिए। दूसरा सत्य बोले न बोले। कोई तुम्हारे सत्य को समझे, न समझे; फ़िकर न करो। प्रेम दूसरों के लिए हो। प्रेम दाता है, भिखारी नहीं है। खलिल जिब्रान तो कहते हैं, मैं दान उसको कहता हूं जिसमें दानी स्वयं अपने को दे दे। प्रेम परस्पर है।

सब नर करहिं परस्पर प्रीती।

आधी घड़ी नहीं, पा घड़ी भी नहीं, इससे भी कम साधुसंग में बैठ लिया तो अपराध गया। लेकिन अपराध वो है कि ज़िंदगी चली गई लेकिन जिसने साधुसंग में प्रीत न की। ईश्वर यदि मिल जाए और आपको आवाज़ दे कि मैंने तेरी प्रार्थना सुन ली है, क्या दूं? तो कुछ भी मत मांगना। ईश्वर से इतना ही कहना कि हे प्रभु, तू मेरे पास आ जाएगा तो मेरी औकात नहीं कि मैं तुझे पचा पाऊं। एक काम कर, तू जिसे प्यार करता हो, ऐसे किसी साधु की मुलाकात करा देना। ये न हुआ तो थोड़ी ग्लानि महसूस करो कि पूरी ज़िंदगी चली गई, किसी साधु का संग नहीं किया!

चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीती।।

सत्य है एकवचन, प्रेम है द्विवचन और करुणा है बहुवचन। करुणा पूरे जगत के लिए।

राम हि केवल प्रेमु पिआरा।
जानि लेउ जो जाननिहारा।।

इसीलिए मेरी रामकथा को मैं प्रेमयज्ञ कहता हूं। जगत प्रेम से धन्य हो गया। मैं कहता हूं कि जीवन में सत्य यदि मात्राभेदे कम हो तो भी चिंता नहीं, प्रेम खूब करो।

भरतजी अब उपपातक कहते हैं, जिसे मेरी तलगाजरडी दृष्टि अपराध कहती है। मैं शुरूआत में बोला, 'कटे कोटि अपराध।' आधी घड़ी नहीं, पा घड़ी भी नहीं, इससे भी कम साधुसंग में बैठ लिया तो अपराध गया। लेकिन अपराध वो है कि ज़िंदगी चली गई लेकिन जिसने साधुसंग में प्रीत न की। ईश्वर यदि मिल जाए और आपको आवाज़ दे कि मैंने तेरी प्रार्थना सुन ली है, क्या दूं? तो कुछ भी मत मांगना। जगद्गुरु शंकर ने कहा-

न मोक्षस्याकांक्षा भवविभववांछापि च न मे
न विज्ञानापेक्षा शशिमुखि सुखेच्छापि न पुनः।

भरत ने कहा, और कुछ नहीं चाहिए, 'जनम जनम रति राम पद।' ईश्वर से इतना ही कहना कि हे प्रभु, तू मेरे पास आ जाएगा तो मेरी औकात नहीं कि मैं तुझे पचा पाऊं। एक काम कर, तू जिसे प्यार करता हो, ऐसे किसी साधु की मुलाकात करा देना। ये न हुआ तो थोड़ी ग्लानि महसूस करो कि पूरी ज़िंदगी चली गई, किसी साधु का संग नहीं किया! 'पाई रे जिसने साधु की संगत पाई।' बैठना है तो साधु के साथ बैठो। यात्रा करनी है तो साधु के संग करो। अवसर मिले और वो हां कहे तो! खाना हो तो साधु के संग खाओ। और प्रेमरस पीना है तो साधु के संग पीओ। साधु अपने आप में मैखाना होता है।

हमारी बज़्म में आकर बैठकर देखो,
पता लगेगा, जिंदगी क्या चीज है?

●

कभी रोती कभी हंसती कभी लगती शराबी-सी।
महोब्बत करनेवालों की निगाहें कुछ और होती है।

बोलने का अवसर मिले तो साधुसंग बोलो और मौन रहने का अवसर मिले तो साधुसंग में मौन रहो। और सोने की इच्छा हो जाए तो कथा में सो जाओ। तुलसी ने तो यही सिखाया है, आनंद में रहो। मुस्कुराना मुक्ति है।

मुस्कुराते रहो, गुनगुनाते रहो।
जीवन संगीत है, स्वर सजाते रहो।

दुनिया में कई लोग ऐसे हैं जो सदियों से मुस्कुराये नहीं! मुस्कुराइए, आप रामकथा में हो। तुलसी कहते हैं, जिसने साधुसंग में प्रीत नहीं की वो अभागी है। उसने अवसर खोया है। जिस साधु के संग से अपराध से मुक्ति मिलती है, ऐसे साधु की संगत में जिसे रुचि नहीं, रति नहीं वो अपराध है। परमार्थ के मार्ग से जो विरुद्ध है, वो अपराध करता है। स्वार्थ के मार्ग में तो सब संलग्न होते हैं। जो परमार्थ के मार्ग से विरुद्ध है वो दुर्भागी है।

मनुष्य शरीर मिला और जिसने हरि को न भजा तो अपराध हो रहा है। चिंता करने की जरूरत नहीं, शुरू कर दो भजना। मनुष्यशरीर मिलने पर जिसने हरि-हर की सुयशयुक्त कथा नहीं भाती वो लोग गए बीते हैं। वेदमार्ग छोड़ दे और वामपंथ चले! वेद सनातनधर्म का अद्भुत ग्रंथ है। वेद का अर्थ है, जिसने जान लिया है, पा लिया है। ऐसे मार्ग को छोड़कर कुमार्ग पर चले। हमारे देश में एक मार्ग, एक पंथ चला वामपंथ, वाममार्ग। जो वंचक है और कपट करके वेश बनाकर पूरी दुनिया को जो छलता है, दुनिया का शोषण करता है वो अपराध है। ये सब जो करता है ऐसा जिसका जीवन है उसकी जो दुर्गति होती है वो भगवान शंकर मुझे प्रदान करे, यदि मैं मेरी माता के मत के बारे में जानता हूं तो, ऐसा भरत ने कहा। भरत की बात सुनकर सिर पर हाथ घुमाती हुई कौशल्या ने कहा, तू ऐसा मत बोल। तेरे में कोई पाप प्रगट नहीं हुआ है। तू तो मन-वचन-कर्म से राम का दास हो गया है। मेरे कहने का मतलब 'मानस-अपराध' की चर्चा चल रही है तब हम जागृत हो जाए कि थोड़ी मलिनता यदि आ गई है तो उसको धो डाले। और अपराधों के बारे में चिंतित मत रहना। मिट सकते हैं साधुसंग से। ओर कुछ न करो। प्रश्न ये है, साधु कहे किसको? तो साधु की कई परिभाषा है। तो 'मानस-अपराध' के बारे में गुरुकृपा से हमारी और आपकी बातचीत चली।

मानस-अपराध : ५ :

# इक्कीसवीं सदी भगवत्कथा की सदी है

'रामचरितमानस' अंतर्गत जो रामकथा है उसमें से 'अपराध' शब्दब्रह्म को उठाकर हम और आप संवादी सूर में परस्पर बातचीत कर रहे हैं। कुछ आगे बढ़ें उससे पूर्व दो-तीन श्रोता भाई-बहनों की शिकायत है कि 'हम इतने प्रश्न आपको व्यासपीठ पर देते हैं। आप दो-तीन के ही उत्तर देते हैं, बाकी के क्यों नहीं देते?' आप कथाश्रवण में इतने तल्लीन हो गए होंगे कि आपने जो पूछा है, उसका उत्तर किसी ना किसी संदर्भ में एक-दो दिन पहले ही कथा में आ गया है। मुझे सब स्मरण है। आप तल्लीनता के कारण शायद भूल गए हैं! आप विशेष जागृतिपूर्वक सुने इतनी ही मेरी प्रार्थना। दूसरी बात, मेरी व्यासपीठ हर वक्त कहती है कि व्यासपीठ उत्तर नहीं देती, व्यासपीठ जागृत करती है। जवाब तो कोई भी बुद्धिमान दे सकता है तर्क-वितर्क कुछ भी करके। जागृत करना कठिन है। बाकी कुछ प्रश्न आपके घरेलू होते हैं कि घर में तकरार है, फलां है, फलां है। अब आप ये लिखें कि हमारी गली में इलेक्ट्रिसिटी का खंभा नहीं है! आप जाओ उससे पहले लाइट का कुछ करके जाना! तो इसमें मैं क्या करूं? मैं खड़ा रहूं खंभे की जगह?

तो आज पहले सब प्रश्न के उत्तर दे ही दूं। एक तो गंगासती के दो पद दिए हैं मुझे। वृंदावन बांके बिहारी के यहां पर्दा गिरता है, फिर हटता है। वैसे ही हम व्यासपीठ के सामने बैठे हैं तो व्यासपीठ कभी ओर प्रगट हो जाती है, कभी ओर अपने आप को पर्दे में छिपा लेती है। ये सब क्या है? ये सब है और कुछ नहीं है। जमील हापुडीदादा का शेर भेजा है किसीने-

मेरी आंखों ने देखा है, सुना है मेरे कानों ने।
गैरत ये कहती है कि किसीका राज़ क्यों खोलूं?

'कई संतों को हम सुनते हैं, कथा-प्रवचनों में, हमारी भक्ति-भावना प्रगट होती है, लेकिन सनातन टिकती नहीं है। ये टिकी रहे, इसके लिए हम क्या करें?' हम जीव है। हमारी एकाग्रता, श्रद्धा, विश्वास, ज्ञान ये बहुधा अखंड नहीं रहता, लेकिन जितना बढ़े, इन्हीं पल को, लम्हों को संभाले रखो। फिर सत्संग करो, फिर जगेगा। आप 'मानस' के पात्रों से समझने की कोशिश करे। 'मानस' में एक पात्र है कुंभकर्ण। जब उसको जगाया गया तो युद्ध शुरू हो चुका था, इतनी घटनाएं घट चुकी थी और रावण ने उसको जगाकर सब बातें बता दी कि ऐसा-ऐसा हुआ है। मैंने सीता का अपहरण किया और युद्ध हो रहा है। बड़ी हानि हो रही है। तब जागा हुआ कुंभकर्ण रावण को कहता है कि तुमने बहुत बड़ी भूल की है रावण। तुमने मुझे पहले क्यों नहीं जगाया? पहले जगाता तो नारदमुनि ने मुझे जो ज्ञान दिया है वो मैं तुम्हें सुनाता। पहले तो कुंभकर्ण ने रावण को डांटा कि जगदंबा जानकी का अपहरण करके हे शठ, तू कल्याण चाहता है? ये तूने क्या किया? उस समय जागा हुआ कुंभकर्ण बड़ा ज्ञानी और विश्वासु लगता है। लेकिन कुछ मिनटों के बाद रावण ने उसको मांसाहार करवाया, शराब पिलाई और फिर उसका दिमाग बदल जाता है। वो भयंकर रूप में तमोगुणग्रस्त बनकर युद्ध के लिए प्रवृत्त होता है। कहां गया ज्ञान? हमारी भी यही स्थिति है! भक्तिभाव जगता है लेकिन टिकता नहीं है। विवेक, विश्वास जगता है, फिर टूट जाता है।

रावण को ये भान हो गया जब शूर्पणखा से सुना कि खर-दूषण, त्रिशिरा, चौदह हजार राक्षसों का तपस्वी राम ने निर्वाण कर दिया है। तो रावण सोचने लगा कि खर-दूषण मेरे समान बलवान है। उसको भगवान के सिवा कोई नहीं मार सकता। क्या भगवान ने अवतार ले लिया है? मैं भजन तो नहीं कर पाऊंगा। मैं बैर करूं? तो एक ओर उसका विश्वास दिखता है कि ये भगवान है, मेरे से भजन नहीं होगा। और फिर वो अपहरण की योजना बना लेता है। वो बदल जाता है। वो ही रावण जानकी का अपहरण करने के लिए पंचवटी की कुटिया के बाहर जाता है तो तुलसी ने लिखा है, जानकी को वो मन ही मन प्रणाम करता है। इसका मतलब ये कि जानकी जगदंबा है, ये सोचकर प्रणाम करता है और दूसरी ही क्षण

क्रोधित रावण जानकी का अपहरण करता है। हम सबकी चित्तवृत्ति पल-पल बदलती है। सुनते रहो संत-महात्माओं को। और मैं ये नहीं कहूं कि कथा ही सुनते रहो। अच्छी किताब पढ़ो। अच्छी नवलकथाएं-कविताएं पढ़ो। अच्छे शेरो-शायरी जो इश्के-हकीकी की ओर ले चले वो भी सत्संग है। अच्छी फिल्म देखो, जिससे तुम्हारी आत्मा विकसित हो, जिसमें अच्छा संगीत हो, अच्छी शब्दावलि हो, जो मन को वासनाग्रस्त न करे लेकिन मन को रसग्रस्त करे ऐसा नृत्य देखो। कोई अपराध नहीं है। आप सत्संग को सीमा में मत लो।

व्यासपीठ इतनी ही नहीं है यारों! 'नमोऽस्तुते व्यास विशालबुद्धे।' विश्व में जो समा न पाए उसको मैं व्यासपीठ कहता हूं। दरिया की गहराई शर्मिंदी हो जाए, आसमान की विशालता मुंह लटकाए खड़ी हो जाए, मेरु की ऊंचाई गद्‌गद् हो जाए, उससे कई गुनी विशाल ऊंची है विश्व में भारत की व्यासपीठ। उसको सीमा में मत बांधो कि कोई आदमी आया है, तिलक किया है, पोथी रखी है। ये तो अद्‌भुत है ही। इक्कीसवीं सदी भगवत्‌कथा की सदी है। बीसवीं सदी वैज्ञानिकों की सदी थी; उद्योगों की सदी थी; ज्ञान की सदी थी। मुझे दिख रहा है, इक्कीसवीं सदी भक्ति की सदी होगी। और वैज्ञानिकों को भी भक्ति पर संशोधन करना पड़ेगा कि मीरां ने ज़हर पीया, कौन से केमिकल बदले कि मीरां मरी नहीं? उसकी खोज व्यासपीठवाले नहीं करेंगे, लेबोरेटरी में बैठे बुद्धिमान वैज्ञानिकों को करनी पड़ेगी। जिसको तीन दिन लटकाया गया और कहते हैं, इतने खीले ठोके और तीन दिन बाद जिसस को उतारा तो ज़िंदा हुआ। कैसे ज़िंदा हो सकता है? विज्ञान इसी पर खोज करेगा। नरसिंह महेता को जेल में बंद कर दिया गया था। बिलकुल पेक था वो जेल का कमरा। फिर कहां से आया वो हार? विज्ञान शोध करेगा। वैज्ञानिक याने ऋषि-मुनि। आप आगे-आगे देखियेगा कि इक्कीसवीं सदी के मध्यांतर में वैज्ञानिक भाव, भक्ति, प्रेम पर टूट पडेंगे कि ये क्या है? एक आदमी किसी को देखता है तो उसकी आंख में आंसू क्यों आ जाते हैं? एक आदमी किसी को छूता है तो क्यों अपने आप को खो जाता है? एक आदमी किसीसे बात करता है कि बेटा, कैसे हो? तो क्यों वो लिफ्ट हो जाता है? क्यों वो स्पेस में उड़ने लगता है? ये राज़ है। वैज्ञानिकों को इसकी खोज करनी पड़ेगी। व्यासपीठ के सामने इतने लोग क्यों टकटकी लगाए बैठते हैं? यहां पर आप आते हैं तो कोई किराये पर नहीं आये। ये राजनीति की रेली नहीं है, ये प्रेम का रेला है। क्यों आते हैं आप? क्या भोजन करने आते हैं? नहीं। ये तो प्रसाद के रूप में आप पाते हैं। यदि भोजन करने आते हैं तो कितने लोग भोजन करते हैं? एक सौ सत्तर देश जो टी.वी. के सामने बैठे हैं, वो कहां से गुलाबजामुन खाते हैं? इसकी खोज करनी पड़ेगी कि ये क्या था? कथा में संगीत की सुरावली बजती है और लोगों का झुमना शुरू हो जाता है! उस पर वैज्ञानिकों को खोज करनी पड़ेगी कि क्या ये रुहानी संगीत है? यहां इन्स्ट्रुमेन्ट नहीं बज रहे हैं, आत्मा बज रही है। मैं क्यों फिल्म की पंक्तियां गाता हूं? ये आत्मा की बातें हैं, जो आत्मा को संबोधित हो रही है। तो इस पर खोज करनी पड़ेगी। गुरुकृपा से इतनी तो मेरी समझ रही होगी कि व्यासपीठ पर से फिल्म की पंक्तियां क्यों गाऊं? मुझे आपको रिझाना है? नहीं। शरफ़साहब का शे'र है-

शायरी तो सिर्फ़ बहाना है,
असली मक्सद तुझे रिझाना है।

ये सब बहाने हैं गाना, प्रस्तुति, बोलना। उसके मुख पर मुस्कुराहट हो जाए यही मोक्ष है। तो सत्संग को कोई फ्रेम में मत बांधो। एक बच्चे के पास बैठो, उसकी तड़प को देखो, ये सत्संग है। हमने सत्संग को कितना डबरा बना दिया! संकीर्णता में कैद कर दिया! सोचो, कथा को क्यों सीमित कर देते हो? तुलसीदासजी ने कहा है, 'सकल लोग जग पावनी गंगा।' एक अच्छा नृत्य मंच पर एन्जोय करो। जो हमें विकसित करे और विकसित करने के बाद विश्राम तक पहुंचा दे ऐसी कोई भी चीज हरिकथा है, सत्संग है।

तथाकथित भावुकता ने सत्संग को सीमित कर दिया, साधुता को सीमित कर दिया। ये महात्मा तो सोता नहीं! ये साधुता का लक्षण हो गया। कई लोग नहीं सोते। प्लीज़, इसे साधुता से मत जोड़ो। अच्छा है नहीं सोता है, रातभर भजन करता है। लेकिन उसको साधुता के लक्षण में यूझ मत करो। ये साधु तो एक ही बार खाता है। अरे! कई लोगों को एक बार की रोटी भी नसीब नहीं है! उसको आप साधु नहीं कहते। जंगलों में देखो, अपने शरीर की मर्यादा को वृक्ष के पत्तों से छिपाते हुए अगणित लोग बैठे हैं। कोई दिगम्बर बनके घूमता है तो 'ओहो...! ये साधु है।' अरे! कई दिगम्बर घूम रहे हैं जो कपड़ों से मुक्त है। इसका मतलब मैं इसकी आलोचना नहीं कर रहा हूं। इसकी महिमा अवश्य है। ये महात्मा तो किसी बहन-बेटी से बात ही नहीं करता। ये अच्छा है, लेकिन क्या ये साधुता का लक्षण हो गया? वस्त्र न पहने ये अपने आप में महान तप अवश्य है, आई एग्री बट साधुता का लक्षण वस्त्र नहीं पहनता, इतने में सीमित नहीं है। निष्कपट होने से साधुता का लक्षण आता है, केवल पट बदलने से नहीं। फलां बाबा तो हाथ में ही खाते हैं! लेकिन खाता तो है ना? काष्ठ पात्र में खाता है, ठीक है ये स्वभाव बन जाए। आप थोड़ा जाग सको ये ठीक है। आप कम कपड़ों में जीओ ये सादगी अच्छी है। मर्हूम शायर बैकल उत्साही साहब का एक शे'र है-

सादगी शृंगार बन गई।
आईनों की हार बन गई।

साधु की सादगी ही उसका शृंगार है। भोजन न करना, उपवास करना अच्छी बात है। मैं किसीके व्रत को तोड़ना नहीं चाहता लेकिन खुद भूखे रहकर दूसरे का पेट भरना ये साधु का लक्षण है। बहन-बेटी से बात न करना! कोई तो कहता है, छूना मत! तुम्हारी माता पुरुष नहीं थी, एक औरत थी। औरत ने जन्म दिया मर्दों को, महात्माओं को और उन्होंने ही उसे दूर कर दिया! तुम्हारे दिमाग में ये नर है कि नारी ये भेद मिट जाए वो साधु है।

कितनी छोटी-छोटी बातों में हमने साधुता को सीमित कर दिया है! साधु स्वादिष्ट भोजन क्यों न करे? क्या उनका कोई प्रारब्ध नहीं है? साधु भजियां, जलेबी क्यों न खाए? तुम कुछ नकारात्मक करना सोच लो तो तुम्हें बड़ी प्रतिष्ठा मिलेगी। ये दुनिया बड़ी विचित्र है! कोई वाहन में नहीं बैठता, पैदल ही चलता है तो बड़ा दर्जा मिल जाता है। न तो ईश्वरदत्त सुविधा का अहंकार करो, न तो अपने त्याग का अहंकार करो। बहनों की सभा हो तो कई लोग वहां जाते नहीं! मेरे साथ ऐसी घटनाएं होती है। बहनों उस सभा में होती है तो मेरे साथ जो परमपूज्य लोग होते हैं वो तो मना करते हैं कि बहनों को स्टेज पर मत लाओ! मैंने कहा, उसका सन्मान करने के लिए वो जहां बैठी है वहां मैं जाऊंगा, आप न आओ। और मैं जाता हूं। दुनिया कभी नासमझ की तरह दौड़े जा रही है! अब तो जागो यारो! इक्कीसवीं सदी भक्ति की कसौटी है। छोटी-छोटी फ्रेमों में हमने मढ़ लिया है। जागना अच्छा है, लेकिन ये कोई लक्षण न बन जाए। मैं मेरी युवान पीढ़ी को जवाब नहीं दे रहा हूं, जागृत कर रहा हूं। मेरी कथा धर्मशाला नहीं है, प्रयोगशाला है। नव दिन के बाद कोई परिणाम आना चाहिए।

अब आगे का प्रश्न, 'अपनी दुर्बलता को स्वीकार करने का हम नैतिक साहस कैसे प्राप्त करें?' आप कम से कम एक जगह साहस करो, अपने बुद्धपुरुष के पास। माँ-बाप, भाई, जमाने को न कह सको, लेकिन एक जगह ऐसी है जिसको शीख परंपरा गुरुद्वार कहती है। किसी बुद्धपुरुष के पास कह दो, सब जगह पहुंच जाएगा। न कहो तो भी शायद भजन के कारण वो जान जाएगा। सब को कहने की भी जरूरत नहीं। एक बार पुकारकर बुद्धपुरुष को कह दो कि मेरी हिंमत नहीं हो रही है तेरे सामने बोलने की, लेकिन मुझे पीड़ा हो रही है। तो वो सुनेगा 'सुनहि बिनु काना।' हम में कमजोरी है, लेकिन पहुंचे हुए फ़कीरों की दुनिया कुछ ओर है। तुलना मत कीजिए साहब! ये मस्तों की टोली है। बुद्धपुरुष देह छोड़ता है फिर तीन रूप में हमारे पास रहता है। तीन स्तर है साधना के। बुद्धपुरुष को मुक्ति नहीं होनी चाहिए। मुक्ति तो उसकी मुठ्ठी में है। वो मुक्त ही है। अवतारी बुद्धपुरुष है, सुनियोजित व्यवस्था के रूप में समय-समय पर जो धराधाम पर आते हैं वो माँ के गर्भ में भी मुक्त होता है।

बुद्धपुरुष देह छोड़कर तीन प्रकार से काम करते हैं। पहला, सूक्ष्म रूप से काम करते हैं। ये महसूस किया जा सकता है। थोड़ी गुरुनिष्ठा बढ़े तो आपको लगेगा कि मैं जहां हूं वहां कोई मेरा रक्षण कर रहा है। मैंने तो बहुत महसूस किया है कि कोई बात मेरी समझ में नहीं आती तो मैं वो तलगाजरडा के घर में चला जाता हूं, जहां मैं बैठता था। कुछ समय मैं अकेला बैठ जाऊं, गाऊं, रोऊं, तब मुझे लगता है, कोई मुझे जवाब दे रहा है। ये हो सकता है, असंभव नहीं है। ये एक स्तर है। वहां दूरी होती ही नहीं। करोड़ों मिल दूर कोई क्यों न हो? दूसरे लोक में जीवात्मा क्यों न हो? बुद्धपुरुष काम करता है। दूसरा, जब हमारी पात्रता बनती है तब हमारा हृदय गुरु बन जाता है। तब हमारा हृदय नहीं धड़कता, गुरु धड़कता है। तीसरा, चेतना के रूप में साधक गुरु को महसूस करता है। तो आपका जो प्रश्न है उसका जवाब है, अपने बुद्धपुरुष को कह दो अथवा तो जिसके प्रति हमने कोई गुनाह किया है उनके सामने तो दिल खोलने की नैतिक हिंमत करो।

आगे प्रश्न पूछा है, 'बापू, हम आपकी बगियां के फूल हैं। आप 'मानस-अपराध' पर कथा कह रहे हैं तो मैं आपसे पूछना चाहूं कि हमारे बड़े हमसे कहते हैं कि मंगल, गुरु और शनिवार को नाखून और बाल मत काटो, दोष लगता है। तो ये कितना सही है? कृपया समाधान करें।' मंगल, गुरु और शनि क्या कोई भी चीज बड़ी हो

जाए उसी क्षण उसे काट लो। बड़े जो कहते हैं वो आउट ओफ डेईट हो चुका है! अब इक्कीसवीं सदी की हवाओं में घूमो। आपको डर लगे, शंका-कुशंका हो जाए, ये बात ओर है। बाकी मैं इसमें मानता नहीं। आपकी श्रद्धा तोड़ना नहीं चाहता। बुध, रवि, सोम और शुक्रवार को बाल और नाखून मत काटो; मंगल, गुरु और शनिवार को खास काटो! मैंने तो व्यासपीठ पर एक लड़के के बाल काटे थे! बारडोली में हम कथा कर रहे थे। दूबला जो आदिवासी जाति है, उसमें माना गया होगा कि देवी का कर करे तभी बाल काटे और बेचारा इतना मेलाघेला हो गया था! मैंने उसको बुलाया और बाल काटे। यदि कोई काल में ऐसा रहा होगा तो भी डरो ना।

आगे पूछा है, 'मैं शाकाहारी हूं। मेरे पति नोनवेज खाते हैं और उनके लिए नोनवेज बनाना पड़ता है। क्या ये मेरा अपराध है? मैं कभी मना भी नहीं कर सकती, क्योंकि भले ही वो नोनवेज खाए लेकिन उनका मन बहुत ही अच्छा है। किसी के लिए वो बुरा नहीं सोचते। मैं तो कभी-कभी जिद्द कर लेती हूं; अपने-पराये में भी भेद करती हूं; वो कभी नहीं करते। तो मैं उसको ये खाने में मना करूं कि नहीं?' आपने जिस तरह जिक्र किया है कि वो किसी का बुरा नहीं सोचते, बुरा नहीं करते तो घर में शांति रहे तो समझ जाओ ना यार! इतना अच्छा आदमी और आप कह रही है कि मैं तो कभी भेद करती हूं। इतना आपका आत्मनिवेदन का साहस और आपका पति इतना अच्छा है; आप भी अच्छी मालूम हो रही हो क्योंकि आपने चिठ्ठी लिखकर कहा। तो इतनी निखालसता और इतना शुद्ध मन घर में आये तो प्यार से समझाते जाओ। धीरे-धीरे घर में से नोनवेज निकल जाएगा। उसको मिर्ची के भजिये, जलेबी खिलाओ। इसका मतलब ये नहीं कि मैं मांसाहार की भलामण करता हूं। घर में शांति रहती हो; आपको कथा में आने देता है ये उसका बड़प्पन है। घर में कोई शराब पी रहा है, उसको धीरे-धीरे समझाओ। आप प्यार-महोब्बत से सुधार सकते हैं। कुछ चीजें अच्छी नहीं है, लेकिन जल्दी में निकालना भी ठीक नहीं। इसका मतलब मांसाहार को प्रोत्साहित नहीं कर रहा हूं। अपने पेट को कब्र मत बनाना। पेट में वैश्वानर अग्नि बैठा है।

एक प्रश्न है, 'हम माताएं हैं, हमारी स्थिति कभी शुद्ध-अशुद्ध होती है। उसी समय हम 'हनुमानचालीसा' या कुछ और कर सकते हैं?' हां, कर सकते हो, कोई आपत्ति नहीं। आगे एक प्रश्न है, 'हनुमानचालीसा' में परिवर्तन करके पाठ करना उचित है?' परिवर्तन करने की क्या जरूरत? हम कहां इतने बड़े हो गए कि परिवर्तन करें? परिवर्तन मत करो, 'हनुमाचालीसा' बंद कर दो। परिवर्तन करने का किसीको अधिकार नहीं है। ये सब कोपीराइट तुलसी का है। तुलसी तो देहाती भाषा में लिखते हैं इसीलिए 'मन' की जगह 'मनु', 'जस' की जगह 'जसु' कर देंगे। इसमें सुधार करने की जरूरत नहीं है। शंकर भगवान ने 'रामचरितमानस' की रचना संस्कृत में की है। तुलसी ने शिव के चरण में मस्तक रखा कि बाबा, आपने जो संस्कृत में लिखा वो मैं देहाती भाषा में लिखूं? कैलासी श्लोक को आखिरी आदमी तक पहुंचाने के लिए देहाती भाषा में लिखूं? महादेव ने तुलसी के सिर पर हाथ रखा। तुलसी कहते हैं, मेरे पर सपनों में भी हर-गिरिजा प्रसन्न है तो मैं कुछ भी जो कहूं, सत्य हो जाए। और आज 'रामचरितमानस' जगत का परम सत्य बनकर बैठा है। तो 'हनुमानचालीसा' को ऐसे ही रहने दो, या बंद कर दो, या कोई नई चालीसा रचो। मैं विनय के साथ इस बात से सहमत नहीं हूं। 'हनुमानचालीसा' ही तुलसी का जीवन है। कई लोगों ने प्रयास किया है कि 'रामचरितमानस' के पाठ में सुधार करे। महापुरुष करते भी है, लेकिन इसको सार्वजनिक करने की जरूरत नहीं है।

बाप! 'मानस-अपराध' की तीन बात है। पहली, 'रामचरितमानस' में जो अपराध की बातें आई है, उस पर हम बातचीत कर रहे हैं। दूसरी, मानस माने हृदय, मन। तुलसी ने लिखा है, 'रचि महेस निज मानस राखा।' शंकर भगवान ने 'मानस' की रचना करके अपने मानस में याने हृदय में रखा। तो 'मानस-अपराध' का दूसरा अर्थ हो गया मन के द्वारा होते हुए मानसिक अपराध। मानस का तीसरा अर्थ है, मानुष याने मनुष्य। हमारे यहां व्रजभाषा में रसखान आदि ने 'मानुष' शब्द का प्रयोग किया है। तो 'मानस' में जो अपराध हमें जगाने के लिए बताए वो अपराध की बात अथवा हम मनुष्य है, हमारे द्वारा येनकेन प्रकारेण जानते न जानते भी कुछ हो जाता है, इसकी चर्चा हम सावधान होने के लिए कर रहे हैं। डरने की कोई जरूरत नहीं है।

अपराध करने के ओर छः केन्द्र मेरी व्यासपीठ को मिले उसकी मैं चर्चा करूं। पहला अपराध, हमारी कोई पूजा करे, सेवा करे, आदर दे, सन्मान दे, हमें अच्छे आसन पर बिठाए ये सब होता है और उसीको हम गलत अर्थ में लें तो अपराध है। वो सहृदयता से सन्मान कर रहा है और हम तक-वितर्क से गलत अर्थ निकाले, अपने आपको आदरणीय समझकर सामनेवाले को निम्न समझने की कोशिश करो, उसे अपराध का एक बिंदु माना है। बाप! इससे बचे। उसका दृष्टांत सती और कुंभज ऋषि। शिवजी सती को लेकर कुंभज ऋषि के आश्रम में कथाश्रवण हेतु गए, वहां कुंभज ऋषि ने शिव और सती की पूजा की, आदर दिया। भगवान शंकर ने अच्छा पक्ष लिया कि बाबा कितने महान है कि मैं कथा सुनने आया, मुझे पूजा करनी चाहिए, लेकिन ये वक्ता होकर मेरी पूजा करने लगे। और सती ने उसका गलत अर्थ किया कि क्या कथा सुनायेगा ये आदमी, जो कुंभज है, घडे से पैदा हुआ है, कथा तो समुद्र जैसी है। सब गलत अर्थ किए सती ने। हृदय से पूजा करे, आदर करे उसका गलत अर्थ न करे कि ये निम्न है। ऐसा करना अपराध है। सती ने ये अपराध किया है।

दूसरा अपराध, सती को यदि कथा में रस नहीं लगा था, सुख नहीं मिलेगा कथा से ऐसी कोई ग्रंथि सती को थी तो पहले से वो भगवान शंकर को बोल देती कि आप कथा सुनने जाओ, मैं कैलास में विश्राम करती हूं। और शंकर भगवान राजी भी होते हैं कि अकेले जाना ठीक है। सती गई। ये जगजननी न होती और कथा का अनादर करती तो शायद क्षम्य है। सामान्य होती तो कथा न सुने, अनादर करे तो ठीक है। लेकिन ये जगजननी है। कोई छोटा आदमी कथा को नासमझ करे तो क्षम्य है, लेकिन समझदार आलोचना करे तो अक्षम्य है, अपराध है। तुलसी ने बहुत आत्मनिवेदन में ये लिख दिया कि जो समझदार है वो कथा को ठीक से समझेंगे बाकी तो लोग तर्क-वितर्क लगायेंगे। तो कथा में रस नहीं लिया, ये दूसरा अपराध। 'सुनी महेस परम सुख मानी।' शिव ने कथा सुख से सुनी, भवानी ने एन्जोय ही नहीं किया। वो शोभा में अभिवृद्धि करने बैठी ये अपराध है। यद्यपि मैंने तो सब छूट दे रखी है, फिर भी सावधान तो होना ही है। कथा केवल कुतूहल नहीं है। यद्यपि लोग कौतुक से भी आते हैं। कथा एक महिमावंत प्रेमयज्ञ है।

तीसरा अपराध, सती ने तीसरा अपराध किया परमात्मा राम के बारे में तर्क-वितर्क किया। जब राम-लक्ष्मण सीताजी की खोज करके दंडकवन में निकले तो शिव और सती कथा सुनकर जा रहे थे। भगवान राम सीता

के वियोग में रो रहे थे। शिवजी ने 'जय सच्चिदानंद' कहकर दूर से प्रणाम किया और सती के मन में उहापोह शुरू हो गया! परमतत्त्व के बारे में केवल बौद्धिक घमंड से तर्क-वितर्क करना अपराध है। मैं आपसे निवेदन करना चाहूंगा कि आप महर्षि अरविंदो को पढ़ो। उनका वाक्य है, बौद्धिकता के कारण तर्क-वितर्क शरूआत में मुझे सहयोगी लगते थे लेकिन अब मेरी गति में अवरोध पैदा कर रहा है। सती ने तर्क-वितर्क किया ये अपराध है। चौथा अपराध, पति के वचन पर अविश्वास। महादेव ने कहा कि देवी, ये ब्रह्म है, फिर मान लेना चाहिए था। आश्रित को विश्वास के सिवा मजबूत कोई साधन नहीं है। धनवान के केन्द्र में धन है। बुद्धिमान के केन्द्र में बुद्धि होती है। बलवान के जीवन का केन्द्रबिंदु बल होता है। भोगियों का केन्द्रबिंदु विषयभोग होता है। वैसे आश्रित का केन्द्रबिंदु केवल विश्वास है। जगद्गुरु शंकर कहते हैं, 'गुरुवेदान्तवाक्यादिषु विश्वासः श्रद्धा।' अपने गुरु और वेदांत के वाक्यों में दृढ़ भरोसा ये विश्वास है। अंधविश्वास अच्छा नहीं है, मैं कुबूल करता हूं। विश्वास को गाली देना शंकरापराध है, ऐसा मैं व्यक्तिगतरूप में समझता हूं। आश्रितों का प्राण ही विश्वास है। बुद्धिमानों ने विश्वास को, भाविकों को गालियां दी है!

गुरु पांच प्रकार के होते हैं। पहला योगगुरु, जो आपको योग बताए। योग महिमावंत स्थिति है। मेरे आत्मीय रामदेवजी बाबा ने गुफा और ग्रंथों से योग को निकालकर मैदान में रखा है। योग की इतनी बोलबाला दुनिया में हुई और हमारे आदरणीय प्रधानमंत्रीजी का थोड़ा आग्रह रहा जिन-जिन संत-महापुरुषों ने काम किया, २१ जून 'विश्व योगदिन' के रूप में मनाया जाता है। और संयुक्त राष्ट्रसंघ ने उसको कुबूल किया है, ये गौरववंती घटना है।

दूसरा ध्यान गुरु, जो हमें शास्त्र का बोध करवाए। स्वाध्याय, वेद-व्याकरण, उपनिषद पढ़ाए वो ध्यानगुरु। तीसरा तंत्रगुरु, जो तंत्रविद्या सिखाए। चौथा ब्रह्मनिष्ठ गुरु, जिन्होंने ब्रह्म को पूरा पाया हो। कबीर को वेद नहीं आते थे। वो कहते हैं, मैंने कागज और स्याही को छुआ नहीं यानी ज्ञान की बात नहीं करते लेकिन कबीर ज्ञाननिष्ठ गुरु है, क्योंकि वो कहते हैं, 'कह कबीर में पूरा पाया।' पाकर अपने में प्रतिष्ठित कर दिया है वो ब्रह्मनिष्ठ गुरु, वो ब्रह्मनिष्ठ होता है। उसमें प्रासादिक योग भी होता है। उसको बिना पढ़े तंत्र के बारे में भी जानकारी होती है। पांचवां प्रेमगुरु। मुझे कोई पूछे कि इनमें से कौन गुरु श्रेष्ठ? तो मैं चारों को प्रणाम करू लेकिन एक पांचवां गुरु है, प्रेमगुरु। जो हमें सबसे प्रीत करे; प्यार से हमारा योग बना दे; हमें ब्रह्मज्ञान करवा दे; तंत्र समझा दे लेकिन तंत्र से अंतर भी बता दे। चाहिए महोब्बती मुर्शिद।

अब प्रसंग आया तो चेला भी कैसा होना चाहिए, सुन लो। चेले भी पांच प्रकार के होते हैं। पहला सेवक शिष्य, जो केवल सेवा में ही जानता है। उसे न ज्ञान चाहिए, न भजन। दूसरा साधक शिष्य, जो गुरु के मार्गदर्शन में साधना करता है, अनुष्ठान करता है। तीसरा भावुक शिष्य, वो गुरु को देखे और रोए। गुरु की बात चली और आंखें ड़बड़बाई। गुरु की याद दिलाई और रो पड़े। चौथा परिपूर्ण रूप में समर्पित शिष्य। न मन मेरा, न बुद्धि मेरी, न चित्त मेरा, न अहंकार मेरा। मैंने सब एक सदा-सर्वदा शीतल यज्ञ है उसमें आहुत कर दिया है। पांचवां कपटी शिष्य।

हम मूल बात में आए। शंकर समझाने लगे कि मेरे बचन पर भरोसा करो, ये ब्रह्म है। और पति की बात पत्नी ने न मानकर अपराध किया। कई लोग पूछते हैं, बहनों को गुरु की जरूरत है? निष्ठा हो तो आपका पति ही आपका गुरु है। भटकने की जरूरत नहीं है।

लाग न उर उपदेसु जदपि कहेउ सिव बार बहु।
बोले बिहसि महेसु हरिमाया बलु जानि जियँ।।

ये है वचन अपराध। इसीलिए गंगासती कहती हैं-

सद्गुरु वचनोना थाव अधिकारी पानबाई।

पांचवां अपराध, वेश पलटकर राम के सामने जाना। छठ्ठा अपराध, सती का छठ्ठा अपराध महादेव के सामने झूठ बोलना।

कृपासिंधु सिव परम अगाधा।
प्रगट न कहेउ मोर अपराधा।।

भवानी कहती है, मेरे प्रभु कृपासिंधु है, जो परम अगाध है। उसने मुझे सामने से एक बार भी नहीं कहा कि तुमने ये अपराध किया है। ये करुणा की चरमसीमा है। 'अपराध' शब्द को लिए सती 'मानस-अपराध' को सपोर्ट कर रही है।

पति परित्याग हृदयँ दुख भारी।
कहइ न निज अपराध बिचारी।

पति ने त्याग किया वो सती बोल नहीं पाती क्योंकि ये निज अपराध है। अपराध के दो प्रकार। पहला पर अपराध; दूसरा निज अपराध। हमने जो चौपाई ली उसमें 'निज अपराध रिसाहिं न काऊ।' एक खुद का अपराध। दो व्यक्ति नहीं बोलती, एक तो कहती है, मेरा अपराध मैं कैसे बोलूं? और शंकर इसका अपराध जानते हैं लेकिन करुणा के कारण प्रगट बोलते नहीं है। फिर सती के प्रसंग में-

सिय बेषु सती जो कीन्ह तेहिं अपराध संकर परिहरीं।
हर बिरहँ जाइ बहोरी पितु कें जग्य जोगानल जरीं।।

तो छः अपराध पार्वती को जब बिदा देते हैं तब हिमाचल के मन में कहां से आया इसीलिए कहते हैं, 'नाथ उमा मम प्रान सम गृहकिंकरी करेहु।' गुजरी बात भूल जाना। उसके सभी अपराध क्षमा कर देना। ये अपराध सती के प्रसंग में 'मानस' में मिले उसके जो केन्द्रबिंदु है वो इतने लगते हैं।

तो ये 'मानस-अपराध' हमें जागृत करने के लिए है। तुलसीदासजी ने 'रामचरितमानस' की रचना की, उसका संपादन किया, प्रकाशन किया और सोलह सौ इकतीस की रामनवमी के दिन 'रामचरितमानस' का प्रगटीकरण हुआ। तुलसीदासजी ने मानस सर का रूपक बनाया। तुलसी ने चार घाट बनाए। रामकिंकरजी ने इन घाटों का नाम दिया है। पहला ज्ञानघाट, जहां शिवजी पार्वती को कथा सुनाते हैं। दूसरा उपासनाघाट, जहां कागभुशुंडि गरुड को कथा सुनाते हैं। तीसरा कर्मघाट, जहां त्रिवेणी के तट पर अक्षयवट की छाया में, तीर्थराज प्रयाग में परमविवेकी याज्ञवल्क्य भरद्वाजजी को कथा सुनाते हैं। चौथा शरणागति घाट, जहां तुलसी अपने मन को सुनाते हैं। तुलसी शरणागति के घाट से कथा का आरंभ करते हैं। अपने मन को श्रोता बनाकर हम सबको लिए चलते हैं तीर्थराज प्रयाग कर्म के घाट पर, जहां याज्ञवल्क्यजी भरद्वाजजी के सामने कथा का आरंभ करते हैं।

तीर्थराज प्रयाग में प्रतिवर्ष कल्पवास के लिए सब इकठ्ठे होते हैं, कुंभस्नान करते हैं। एक बार बहुत बड़ा कुंभमेला लगा। याज्ञवल्क्यजी भी गए। भरद्वाज ऋषि के आश्रम में ठहरे। कल्पवास पूरा हुआ। सब साधु-संतों ने बिदा ली। याज्ञवल्क्य ने भरद्वाजजी से बिदा मांगी तो भरद्वाजजी चरण पकड़कर उनको रोक लेकर कहते हैं, बाबा, आप न जाओ। मेरे मन में बहुत बड़ा संशय है। महाराज, मुझे बताओ कि रामतत्त्व है क्या? 'जागबलिक बोले मुसुकाई।' याज्ञवल्क्य मुस्कुराए। 'मानस' के आधार पर कहता रहता हूं कि धर्म की गादी जिसको प्राप्त होती है उसको मुस्कुराना चाहिए। राम की प्रकृति थी, वो किसीसे भी बात करे तो पहले मुस्कुराहट होती थी, फिर मुखरता होती थी। याज्ञवल्क्य बोले, आप राम की प्रभुता से परिचित हो। आपने मूढ़ की तरह प्रश्न पूछे। मैं जान गया क्योंकि आप मेरे मुख से राम के गूढ़ तत्त्व को जानना चाहते हो। याज्ञवल्क्य ने कथा का प्रारंभ किया। जिज्ञासु की जिज्ञासा रामकथा की थी, लेकिन कथा शुरू करते हैं शिवचरित्र से। ये तुलसी का सेतुबंध विचार था कि रामकथा वैष्णवी है और मैं शिव से शुरू करूं ताकि शैव और वैष्णवों में सेतुबंध हो जाए। समाज जुड़ जाए, धर्म के नाम से टूटे ना। भगवान शिव कथा कहते हैं तो कितना जोड़ हो गया! शंकर स्वयं शिव और पार्वती सुनती है तो शाक्त और रामकथा वैष्णवी। तो शैव, वैष्णव, शाक्त सबका मिलन हो गया। जो वेदों ने किया वो रामकथा कर रही है, 'संगच्छध्वं संवदध्वं।' ये रामकथा का केन्द्रवर्ती विचार है। धर्म का वैश्विक अर्थ है सेतुबंध। शिव है राम तक पहुंचने का द्वार। याज्ञवल्क्य ने कहा, पहले शिवकथा कहकर मैं आपका मर्म जानना चाहता हूं कि आपको शिवकथा में रस-रुचि जगे तो ही रामकथा का अधिकार मिल सकता है। वक्ता ने ये कसौटी की, उनकी गति नांप ली। शिवचरित्र की कथा कल करेंगे।

> इक्कीसवीं सदी भगवत्कथा की सदी है। बीसवीं सदी वैज्ञानिकों की सदी थी; उद्योगों की सदी थी; ज्ञान की सदी थी। मुझे दिख रहा है, इक्कीसवीं सदी भक्ति की सदी होगी। और वैज्ञानिकों को भी भक्ति पर संशोधन करना पड़ेगा कि मीरां ने ज़हर पीया, कौन से केमिकल बदले कि मीरां मरी नहीं? उसकी खोज व्यासपीठवाले नहीं करेंगे, लेबोरेटरी में बैठे बुद्धिमान वैज्ञानिकों को करनी पड़ेगी। आप आगे-आगे देखियेगा कि इक्कीसवीं सदी के मध्यांतर में वैज्ञानिक भाव, भक्ति, प्रेम पर टूट पडेंगे कि ये क्या है? एक आदमी किसी को देखता है तो उसकी आंख में आंसू क्यों आ जाते हैं? एक आदमी किसी को छूता है तो क्यों अपने आप को खो जाता है? वैज्ञानिकों को इसकी खोज करनी पड़ेगी।

# कथा-दर्शन

- अस्तित्व का स्वयंवर है रामकथा; इसमें से किसी सूत्र को श्रेष्ठ समझकर उसके गले में माला पहना दो।
- रामकथा अभय करती है। जो धर्म अभय न दे वो धर्म कौन काम का?
- जो हमें विकसित करे और विश्राम तक पहुंचा दे ऐसी कोई भी चीज हरिकथा है, सत्संग है।
- हनुमानजी बिनसांप्रदायिक तत्त्व है।
- संत द्रोही नहीं होते, विद्रोही होते हैं।
- बुद्धपुरुष का तो हरेक शब्द मंत्र हो जाता है।
- उपेक्षा किसी की न करो, अपेक्षा भी अपने बुद्धपुरुष के सिवा किसीसे न रखो।
- धर्मगुरु बहुधा ग्रूपों को सावधान करता है। लेकिन सद्गुरु वैश्विक जागरण का प्रदाता है।
- शिष्य बहुधा प्रभाव से परिचित होता है और गुरु हंमेशा स्वभाव से परिचित होता है।
- साधु पाप कर ही नहीं सकता, क्योंकि साधु के पास पाप जा ही नहीं सकता।
- सत्य है एकवचन, प्रेम है द्विवचन और करुणा है बहुवचन।
- प्रेम परमात्मा का मार्ग नहीं है, प्रेम परमात्मा है।
- सत्संग बड़ा भाग्य है। कुसंग न मिले ये तो उससे भी बड़ा सद्भाग्य है।
- कुसंग से अपराध होता है लेकिन मुझे कहना है, कुसंग स्वयं अपराध है।
- आश्रितों का केन्द्रबिंदु केवल विश्वास है। आश्रितों का प्राण ही विश्वास है।
- हम संध्या कैसे बिताते हैं उस पर भोर कैसी होगी इसका आधार है।
- पाप स्वाभाविक होता है और अपराध किसी ना किसी मजबूरी के कारण होता है।
- परमतत्त्व के बारे में केवल बौद्धिक घमंड से तर्क-वितर्क करना अपराध है।
- बिना सोचे दूसरे के सूत्र अपने नाम चढ़ाना भी सूत्र अपराध है।
- सबसे बड़ा अपराध है बिनअपराधी पर अपराध का इल्ज़ाम लगाना।
- तुम्हें जगत में जल्दी प्रसिद्ध हो जाना है तो आलोचना करें दूसरों की।

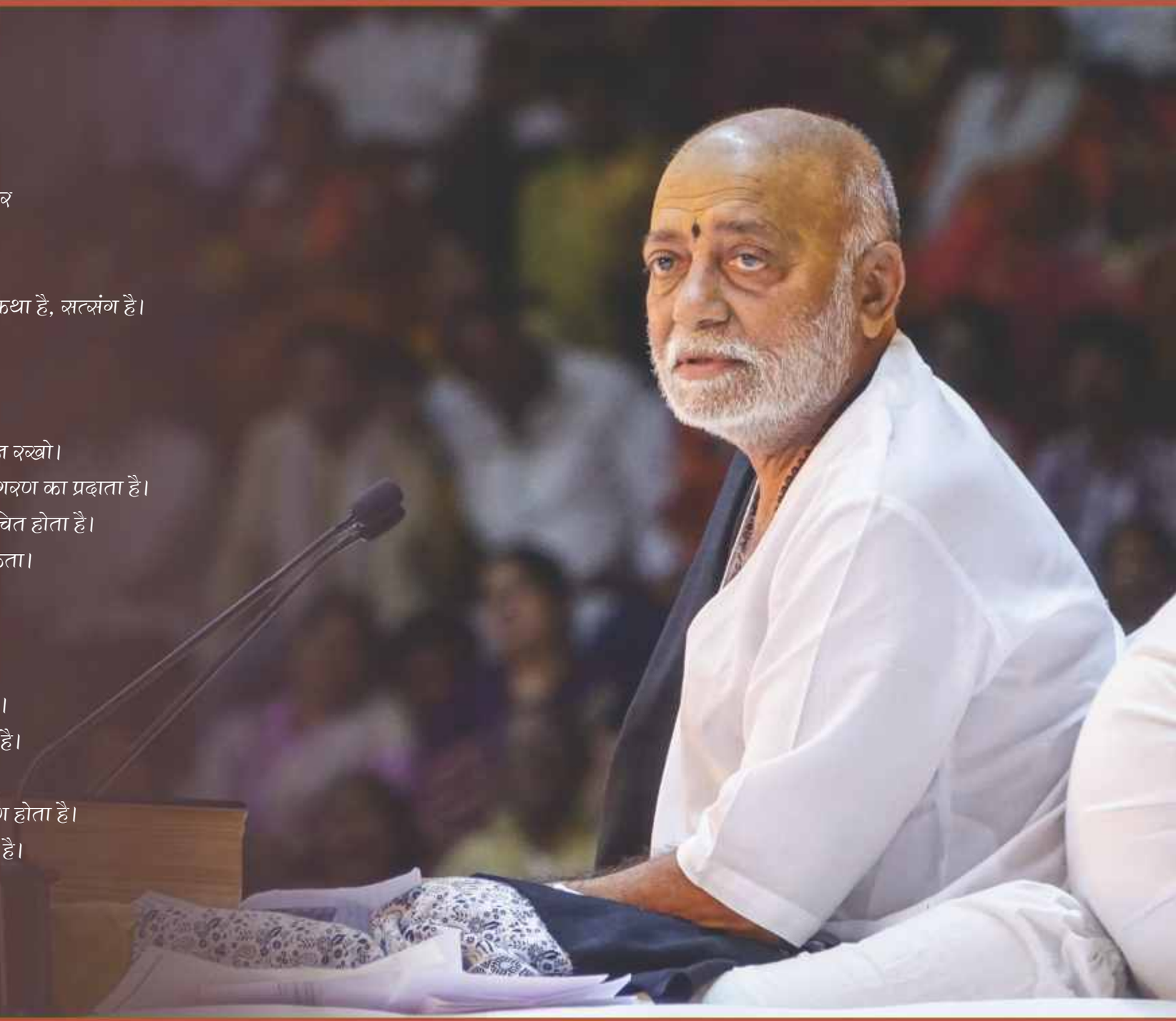

मानस-अपराध : ६ :

# कुसंग स्वयं अपराध है

'मानस-अपराध', जिसकी मूल रूप में संवादी सूर में हम बात कर रहे हैं, आपकी बहुत-सी जिज्ञासाएं थी। कुछ बातें ऐसी पूछी गई जो राजनैतिक थी। मेरा क्षेत्र राजनीति नहीं है। सत्य, प्रेम, करुणा मेरा क्षेत्र है। इसीलिए न अधिक रस-रुचि है राजनीति में, न उसके बारे में हम जानते भी हैं, इसीलिए ये प्रासंगिक नहीं है। कुछ बातें घरेलू है, जो मेरे पर श्रद्धा रखकर पूछी गई है, लेकिन उसका जवाब सार्वजनिक रूप में कहना योग्य नहीं मालूम होता इसीलिए मैंने छोड़ दिए। और कुछ प्रश्न ऐसे है कि जिसका जवाब मुझे भी नहीं पता। मेरी भी मर्यादा है। यद्यपि व्यासपीठ की कोई मर्यादा नहीं है। दो-चार चीज मैंने रख ली है, वो आपके सामने रखूं, जिसका जवाब मैं दे सकता हूं।

'बापू, आपके मुख से ओशो के बारे में सुनकर बहुत आनंद आता है। ओशो के बारे में जो दुष्प्रचार किया गया, आप जैसे निर्भीक उसको दूर कर सकते हैं। आपसे विनम्र आग्रह है कि ओशो के बारे में कुछ ओर कहे।' देखो, मैं बार-बार कहता हूं, दुनिया में सबसे मेरा एक विवेकपूर्ण अंतर है। किसी के साथ खुलकर बातें करूं, हंसे, कोई मेरे साथ घूमे, कोई राजनैतिक लोग आए तो मैं पूरा आदर दूं, साधु-संत के प्रोग्राम में जाऊं, सामाजिक क्षेत्र है, हर जगह जाऊं लेकिन आपको मैं सावध करना चाहूंगा कि तुम्हारा मोरारिबापू सबसे एक रिस्पेक्टेबल डिस्टन्स किए हुए हैं। ये मेरा स्वभाव है। इसीमें आदमी का भजन सुरक्षित रहता है। मैं फिर वसीम बरेलवी साहब का शे'र कहूं-

बहुत दुश्वार था दुनिया से हुन्नर आना भी,
तुझसे फ़ासला रखना और तुझे अपनाना भी।

ये एक साधना है साहब! आप और हम यदि कर सके तो ये भी एक साधना है। सबके साथ सम्यक् अंतर रखो। न इतनी दूरी भी, न इतना नैकट्य भी। जिसको गोस्वामीजी 'मानस' में उदासीनता कहते हैं। याने उदास रहना नहीं, सबके लिए एक निश्चित अंतर। तो आप इस रूप में समझिएगा कि मैं सबके साथ आनंद बांटता हूं, आनंद लेता हूं। ओशो की जो शुभ बातें है जो मैं समझ पाता हूं, जो हमारे आंतरिक विकास और विश्राम के लिए जरूरी है, उसको मैं स्वीकार कर उनका नाम लेकर अहोभाव से पेश करता हूं। कई बातें है, जो मैं नहीं स्वीकार पाता, नहीं समझ पाता; उसकी मुझे चर्चा ही नहीं करनी है।

मुझको उस राह पे चलना ही नहीं,
जो मुझे तुझसे जुदा करती है।
- परवीन शाकीर

गुजरात के बहुत विद्वान निरंजन भगत साहब कृष्ण को कहते हैं, कृष्ण, तू भी मेरे से दूर रहना। मानो भगवान ने पूछ लिया, आपसे कितना दूर रहूं? तो निरंजन भगत साहब कहते हैं-

सांभळुं तारो सूर,
सांवरिया, एटलो रहेजे दूर!

मुझसे पूछा कि कथा में कोई व्रत नहीं है? तो मैंने कहा, ऐसा व्रत तो नहीं है, लेकिन मैं आपसे कहूं, कथा में आओ तो पांच वस्तु का ध्यान रखो। कथा में आओ तो प्रमाद छोड़कर, प्रफुल्ल बनकर आओ। कथा में बैठो तब कीर्तन आए, चौपाई आए, उस समय स्वर ऊंचा जाए तो गहरी सांस लो। यद्यपि ये योग की प्रक्रिया है, लेकिन कथा में अपने आप योग हो जाता है। कई लोग कहते हैं, बापू तो योग करते होंगे। मैं योगा नहीं करता। योगा करे रामदेवबाबा! व्यासपीठ पर



मेरा योग हो जाता है। मैं क्यों आग्रह करूं कि कीर्तन करो, चौपाई गाओ? आपको और मुझे पता नहीं, ऐसा तीन घंटे का योग हम कर रहे हैं। इससे शारीरिक फायदा तो है, मानसिक फायदा भी है।

तो मेरी बात है, उदासीन याने उदास नहीं, प्रफुल्ल होकर आओ। ऊंडी सांस लो। आपको कोई कहे कि बापू का कार्यक्रम रखना है तो बोलना, बापू को संदेशा पहुंचा देंगे बाकी आप खुद जाओ। आज मुझे किसी युवान ने लिखा है, बापू, हम आपको मिलना चाहते हैं। कुछ कार्यक्रम भी देना चाहते हैं। बेटा, मुझे मिलना चाहते है तो जरूर आइए। युवानों के लिए मैं बैठा हूं। मैं सबको सुलभ हूं। आपके कारण में दुर्लभ हूं, मेरे कारण नहीं। मेरी दूरी सबसे होती है। इसीलिए आप आये तो विवेक का उपयोग करके संग करना।

आज एक बात कहनेवाला हूं कि कुसंग से अपराध होता है लेकिन मुझे कहना है, कुसंग स्वयं अपराध है। आज एक प्रश्न ये भी है कि, 'बापू, गुरु के लिए कोई अभद्र टिप्पणी उसका शिष्य सुने तो क्या करे? ऐसी बात शिष्य को गुरु को जनानी चाहिए? शिष्य न बता पाता हो तो, क्या ये अपराध है? ऐसी व्यक्ति जिसे गुरु भी आदर देता है तो हम क्या करे?' गुरु को पता लग जाता होगा कि जिसने आलोचना की है वो कल था वो तो नहीं है। आज वो दूसरा हो गया है। आपके गुरु के बारे में अभद्र टिप्पणी कोई करे उसके पास यदि आप खड़े हो तो जितना हो सके वहां से रवाना हो जाओ। ये कुसंग ही अपराध है। आप निकल न पाए तो आपके स्वभाव के अनुकूल यदि जवाब देनेवाला आपका स्वभाव है तो विवेक से जवाब दे दो। यदि आपकी प्रकृति जवाब देनेवाली नहीं है, तो उसको माईन्ड न करे। मेरी तरह आप भी उससे निश्चित डिस्टन्स रखो। मेरी व्यासपीठ आपको प्रिय है, आप उसे महोब्बत करते हैं तो सबसे प्रमाणित डिस्टन्स रखो। पचपन साल से मैं घूम रहा हूं। पुस्तक नहीं पढ़े इतने मस्तक पढ़े हैं। हर खोपरी का अभ्यास किया है और मेरा डिस्टन्स बनाए रखा है। मैं अपने आप में स्वतंत्र हूं। दूसरों को स्वतंत्रता देता हूं। अपने को अहंकारमुक्त स्वतंत्र रखता हूं मैं। निश्चित दूरी साधना है। कबीर ने कहा, 'ना काहु से दोस्ती, ना काहु से बैर।' उपनिषद के मंत्र के अनुसार ये दर्शन है कि परमात्मा दूर से भी दूर है और निकट से भी निकट है। विशुद्ध चेतना से देखो तो निकट से निकट; स्वार्थी चेतना से देखो तो दूर से दूर।

तो कोई आपके बुद्धपुरुष के बारे में अभद्र टिप्पणी करे और आपका स्वभाव ऐसा है तो जवाब दो। 'मानस' में तो आक्रमक लिखा है कि ऐसा कोई करे तो उनकी जीभ खींच लो लेकिन ये प्रासंगिक नहीं है। 'मानस' की बात हो तो भी उसमें संशोधन जरूरी है। या तो विनय से जवाब दो कि आप अभद्र टिप्पणी करते हो तो अगल-बगल में क्यों घूमते हो? क्या तुम्हें इज्जत चाहिए? पैसे चाहिए? तुम तो इज्जत गिरा रहे हो! या छोड़ दो उसके कर्म पर, क्योंकि कुसंग अपराध है। ये मन का भटकाव हमें मंज़िल तक नहीं पहुंचने देता।

एक प्रश्न ओर, 'पूजा में ध्यान नहीं लगा। मन भटकता है। मन विचारों से खाली नहीं होता है। इसके कारण अपराध बोध होता है, तो क्या करे?' पूजा में आपका ही मन नहीं लगता ऐसी बात नहीं, जितने लोग पूजा करते हैं उनका भी नहीं लगता! आपने साहस किया, वो चुपचाप बैठे हैं! जब तक मन है, विचार करेगा। पूजा करते समय विचार आये तो विचार छोड़ो, पूजा मत छोड़ो। ध्यान पीपल के वृक्ष के नीचे करें, जो काग भुशुंडि करते थे। भुशुंडि ने बताया, बाहर पत्ते हैं, भीतर मूल है। तू मूल का ध्यान कर, बाहरी सब छोड़ दे। 'गीता' में लिखा है, आप जब कुछ करते हैं तब अनंत शाखा प्रगट हो जाएगी आपमें। जब तक मूल केन्द्रित ध्यान नहीं होता है तब तक पीपल के पत्ते हिलेंगे। पीपल की तरह मन डोलता है, लेकिन मूल में ध्यान है। ध्यान तभी लगेगा जब आप मूल में जाओगे। पूरा दिन जो किया है वो भूलते नहीं तब तक नींद नहीं आती। यदि तुम्हें मूल में समाधि तक जाना है, तुम्हें सब भूलना पड़ेगा। मन भटके तो अपराध की चिंता मत करो। वो अपना काम करे, आप पूजा करो। पूजा के समय ज्यादा विचार आते हैं, इसका मतलब विचार आपसे घबराए हुए हैं। वो तुम्हारा ध्यान आकृष्ट करने के लिए उछलकूद कर रहे हैं। उस समय अनदेखा करो, अनसुनी करो।

तो बाप! कथा में प्रफुल्ल होकर जाओ, गहरी सांस लो। कथा से शारीरिक रोग भी मिट जाते हैं यदि यकीन है। भगवद्कथा होती है उस इलाकों में गुनाह कम हो जाते हैं। ये मेरी सालों की यात्रा का अनुभव है। सरकार ने उसकी रिपोर्ट भी पेश की है कि इन दिनों क्रिमिनल गुनाह कम हुए थे, ऐसा राजकोट की कथा में सर्वे हुआ था। इसमें व्यक्ति की महिमा नहीं है, रामकथा की महिमा है। कथा में इतना भोजन परोसा जाता है, आदर के साथ लो लेकिन दो-पांच कंवल कम खाना। नव दिन कथा सुननी हो तो हल्का खोराक लेना, कम लेना। आरोग्य का नियम है,

आधा पेट अन्न से भरो, पा भाग का पानी से और पा भाग को हवा का स्वतंत्र संचार हो इसीलिए खाली रखो। 'गीता' ने जिसको 'युक्ताहार' कहा है। बुद्ध भी कहते हैं, 'सम्यक् आहार।' अन्न का बिगाड़ मत करो। क्योंकि आपकी थाली में पिरोसा जाता है वो ब्रह्म है। उपनिषद ने कहा, 'अन्नं ब्रह्मेति व्यजानात्।'

चौथा सूत्र है, उपवास नहीं करना लेकिन हो सके तो इन्द्रियों का उपवास करना। कथा सुनने के बाद कान को उपवासी रखो। इधर-उधर की बातें ना सुनो ये है कान का उपवास। कथा के बाद आंखरूपी इन्द्रियां इधर-उधर मत दौड़ाओ, ये है आंख का उपवास। कथा के दौरान खास उपवास है वाणी का। हो सके तो मौन रहो। तो वाणी का उपवास मौन है। मैं यहां तीन-चार घंटे बोलूंगा तो मेरे बोलने के कारण चूक भी हो सकती है, शब्द इधर-उधर हो सकते हैं। आप मौन रखकर सुन रहे हो, आपकी भूल होने की संभावना ही नहीं है। शरफ़ साहब का शे'र है-

हजार आफतों से बचे रहते हैं वो,
जो सुनते है ज्यादा, कम बोलते हैं।
फले-फूले कैसे ये गूंगी महोब्बत।
न हम बोलते हैं न वो बोलते हैं।

पांचवीं और आखरी बात, कथा में मुस्कुराते हुए आओ, कथा के बीच में मुस्कुराते हुए सुनो और कथा में से जाओ तो भी मुस्कुराते जाओ। कथा में आओ तो जगत के सर्वश्रेष्ठ कार्यक्रम में जा रहे हैं, ऐसे मुस्कुराते हुए आनंद से आओ। खुमार बाराबंकवी साहब का शे'र है-

ये मिसरा नहीं है, ये वजीफ़ा है मेरा,
खुदा है महोब्बत, महोब्बत खुदा है।

मजबूर साहब कहते हैं-

मज़ाक ज़िंदगी में हो तो ये कोई बात है।
मज़ाक ज़िंदगी से हो ये दिल को नापसंद है।

कोई मज़ाक किसीकी ज़िंदगी के लिए खतरा बन जाए। ऐसी मज़ाक अपराध है। अब आइए, 'रामचरितमानस' में एक अपराध है, केवल अपने मनोरंजन के लिए दूसरों की मजाक उड़ाना ये अपराध है। भवानी ने शंकर को पूछा कि-

कारन कवन श्राप मुनि दीन्हा।
का अपराध रमापति कीन्हा।।

शिवजी ने कहा, हे भवानी! एक बार नारद ने विष्णु को शाप दिया और विष्णु को मनुष्यरूप लेना पड़ा। ये नारदप्रकरण की कथा में दो जगह अपराध की बात आई।

हर गन हम न बिप्र मुनिराया।
बड़ अपराध कीन्ह फल पाया।।

शंकर के गणों ने नारद जैसे मुनि की मजाक की ये दूसरा अपराध है। शिव पार्वती को कथा कहते हैं कि भगवान राम का अवतार क्यों हुआ उसके कारण में नारद प्रकरण में 'बालकांड' में से सुनाया। नारदजी ने हिमालय में एक बार काम पर विजय प्राप्त किया फिर उनको अहंकार आ गया जो बढ़ता गया और उन्होंने सोचा कि ये बात शंकर के पास तो खास जानी चाहिए, क्योंकि शंकर की समाधि तो काम ने तुड़वा दी। मेरी समाधि को काम कुछ नहीं कर सकता। शंकर मेरे प्रतिस्पर्धी है। नारदजी शिव के पास गए। विष्णु समझ गए कि नारद के मन में गर्व के अंकुर फूटे। तुरंत ही उसको उखाड़ डालूं, क्योंकि बड़ा होगा तो भक्त को नुकसान होगा। विष्णु भगवान को लगा, मुनि का कल्याण हो और मुझे थोड़ा विनोद भी मिलेगा। विष्णु भगवान ने माया से ऐसे नर-नारी बनाये कि कामदेव और रति उसके सामने कुछ नहीं। इस कौतुकी नगर में जाकर नारदजी पूछने लगे कि कौन-सा नगर है? पता चला कि यहां स्वयंवर हो रहा है। शीलनिधि राजा का ये नगर है। उसकी कन्या विश्वमोहिनी का स्वयंवर है। नारदजी शीलनिधि के घर जाते हैं। शीलनिधि ने अपनी बेटी को बुलाकर कहा कि बाबा के चरण छू। प्रणाम करने गई तो बाबा हट गए। चेहरे की सुंदरता देखी और बाबा आकर्षित हो गए। नारदजी को हुआ, ये कन्या तो मुझे मिलनी चाहिए। लेकिन सोचा कि इस कन्या को पाने के लिए सुंदर रूप चाहिए, जो मेरे पास नहीं है। नारदजी ने सोचा, मुझे रूप कैसे मिले? भगवान विष्णु को पुकारने लगे और कहा, आपका रूप मुझे दे दो। दूसरा कोई उपाय नहीं है कन्या को पाने का। भगवान ने कहा, देवर्षि, आप अपना हित सोच रहे हैं, लेकिन मेरा स्वभाव है, मेरे आश्रित का हित नहीं, परमहित। भगवान ने कौतुक किया और नारद को कहा, आपका परमहित होगा। फिर भगवान अंतर्धान हो गए।

स्वयंवर में नारदजी आए और उसको आभास हो रहा है कि मैं विष्णुतुल्य हूं। सब राजे-महाराजे आ चुके थे। नारदजी पहले आसन पर बैठे। उसी समय जो अपराध हुआ है एक वो भगवान विष्णु की बात। और दूसरे वहां शंकर के दो गण थे, कैलास में नारदजी कामविजय कहने गए और

शंकर को कहा कि मैं विष्णु के पास जा रहा हूं तब शिव को चिंता हुई कि पतन होगा नारद का। उसी समय ये दो गण नारद के पीछे-पीछे चले और वो ब्राह्मण के वेश में घूमते थे। जिस आसन पर नारदजी बैठे वहां जाकर दो गण बैठ गए और नारदजी की मज़ाक करने लगे। नारद सुने ऐसे बात करने लगे, क्या सुंदर रूप बनाया है! इसको ही कन्या ब्याहेगी। नारद मन ही मन मुस्कुराने लगे। स्वयं विष्णु की माया सुंदर मोहिनी रूप लेकर हाथ में माला लेकर धीरे-धीरे स्वयंवर में प्रवेश करती है। अब पूरा वर्तुलाकार मंडप था और नारद पहले बैठे थे उसके दूसरे छोर से माया शुरू करती है। नारदजी को लगा, माया ने मुझे देखा ही नहीं! नारद अकुलाने लगे। उसी समय स्वयं नारायण विष्णु राजकुमार का रूप लेकर मंडप में बैठ गए। इतने में विष्णु भगवान जहां बैठे थे, वहां गई। और नारदजी तो कामवश है इसीलिए उसके विचार बिलग हो गए लेकिन जगत को तुलसी ने बताया, कैसे भी हो, नारद संत है। जहां संत होता है, वहां माया फ़डक नहीं सकती। संत की लाइन में जो बैठे हैं, वो भी बच जाते हैं माया से। ये साधुसंग की महिमा है। विष्णु में करुणा करके उनके कंठ में विश्वमोहिनी ने माला पहना दी। भगवान नारद के सामने देखते हैं। नारदजी अकुला गए। भगवान मुस्कुरा रहे हैं और रथ में विश्वमोहिनी को लेकर निकल पड़े। नारदजी को लगा, मेरे से धोखा हुआ है।

शिवगण जो ब्राह्मण के वेश में थे वो मज़ाक करते थे वो ठीक थे, लेकिन मर्यादा चुक गए और कहा कि महाराज, आप कितने रूपवाले है! हाथ में दर्पण न हो तो पानी में जरा मुंह तो देखो! ऐसी मज़ाक साधु से नहीं करनी चाहिए थी। ये अपराध है। एक तो ब्राह्मण के वेश में नहीं करनी चाहिए थी और शिव के गण है, घराना ऊंचा है। नारद समझ रहे थे कि मैं हरिरूप हूं लेकिन 'मर्कट बदनं' कहा ये सुनकर नारदजी को बहुत गुस्सा आया! एक तो मर्कट बदन कहा दो गणों ने और दूसरा वो असफल हुए। और तुरंत शाप दे दिया, तुम मेरी मज़ाक कर रहे हो, तुम दोनों भयंकर असुर हो जाओगे! नारदजी आक्रोश में निकले और ये कौतुकी नगर के बाहर गए तब उनका चित्त भी थोड़ा तरंगरहित हुआ होगा तभी अपने आपको पहचान गए और बंदर का चेहरा देखा तो बहुत गुस्सा गाया और विष्णु

पर भी क्रोध आया कि मेरी ये दशा की इसने! दूसरी बार पानी में मुंह देखा तो जैसे थे वैसे हो गए। लेकिन क्रोध भड़क उठा कि विष्णु मिले तो उसे शाप दे दूं या मैं मर जाऊं! विष्णु को पकड़ने के लिए नारद दौड़े।

भगवान को लीला और कौतुक करना था तो भगवान रथ में बैठे हैं। लक्ष्मीजी और विश्वमोहिनी भी साथ में है। रथ को धीरे चलाया ताकि नारद आ जाए। भगवान का रथ था वहीं से गुस्से में दौड़कर गुज़र गए। आदमी गुस्से में होता है तो हरि रास्ते में मिले तो भी भान नहीं रहता। नारद निकल गए तो भगवान ने कहा, देवर्षि, कहां जा रहे हो? रथ में बैठ जाओ, जगह है। नारद विष्णु को कहते हैं, आप जैसा कोई स्वार्थी नहीं है! आप धोखेबाज है! कपटी है! तुमने समुद्रमंथन किया तब नखशिख कपटयुक्त व्यवहार किया। उस समय आप लक्ष्मी को ले गए, शंकर को फुसलाकर ज़हर पीला दिया। ये तो हम तुम्हारे गुणगान करके तुम्हारी प्रतिष्ठा बढ़ाते हैं। बाकी सब रहस्य खोल दूं, तुम मूल में कैसे हो! सबको छलते हो। आज छोड़ूंगा नहीं! आपने मुझे देवर्षि से मनुष्य बना दिया! आपको मानवदेह धारण करना पड़ेगा। आपने मेरी बंदर की आकृति बना दी। जब आप मनुष्य बनोगे तो कोई मनुष्य आपके काम में नहीं आयेगा, बंदरों की ही सहायता लेनी पड़ेगी। नारद ने ये गालियां बोल दी! शाप दे दिया फिर भगवान ने अपनी माया का निवारण कर दिया।

मायामुक्त हुए नारदजी रो पड़े! मैं आपको पहचान नहीं पाया। मुझे माफ़ करो। मेरा शाप झूठा हो जाओ। भगवान ने कहा, मेरी इच्छा से सब हुआ है। देवर्षि, आप साधु है। आप मायाबंधन में आ गए। मेरे आश्रित माया के बंधन में आए मैं ये नहीं चाहता। आप कहते हैं, तुम्हारे सिर पर कोई नहीं है। देखो, मेरे मस्तक पर आप जैसे बुद्धपुरुष का बचन है। मैं मानवरूप लूंगा। आपके शाप को सार्थक करूंगा। नारद शांत हुए। आवेश ऊतर गया। जब रुद्रगण आ गए तो कहा, हम शंकर के गण है, विप्र नहीं है। हमें क्षमा कर दीजिए। अब नारदजी को करुणा आई कि मेरे मुख से निकल आया इसलिए तो राक्षस होना पड़ेगा लेकिन परमात्मा के हाथ से तुम्हारा मरण होगा। मुक्त हो जाएंगे आप। शिवगण शाप को शिरोधार्य करके निकलते हैं।

तो यहां दो जगह 'अपराध' शब्द आया इसीलिए ये कथा सुनाई। एक तो पार्वती ने पूछा कि मुनि ने रमापति को कौन से अपराध का शाप दिया और शिवगण ने अपराध किया। बड़ौदावाले हरीशभाई ने जो लिस्ट भेजा है अपराध का उसके क्रम में चलूं।

बिप्रहु श्राप बिचारि न दीन्हा।
नहिं अपराध भूप कछु कीन्हा।।

पार्वती के पूछने पर भगवान प्रगट होते हैं उसके एक कारण में राजा प्रतापभानु का चरित्र बताया। वहां प्रतापभानु कपटमुनि के संग में आ जाता है, फिर वो ब्राह्मणों को भोजन के लिए बुलाता है। राजा निर्दोष है लेकिन कपटमुनि के संग के कारण इस भोजन में वो बिलग-बिलग पशुओं का मांस डाल देता है कि ब्राह्मण अभक्ष्य भक्षण देखे और राजा को शाप दे दे तो हमारे वैर का बदला मिल जाए। वहां राजा परोसता है तब आकाशवाणी हुई कि हे विप्रवृंद, आप उठकर चले जाओ, आपके वैदिक धर्म को हानि होगी। ये आपके खाने योग्य रसोई नहीं है। इसमें मांस है। ब्राह्मण प्रतापभानु को शाप देते हैं, ईश्वर ने हमारा धर्म बचाया है। हम ये भोजन करते तो भ्रष्ट हो जाते लेकिन तेरा पूरा कुल खत्म हो जाएगा। पानी पिलानेवाला कोई नहीं बचेगा। और दूसरे जन्म में तू राक्षसराज रावण होगा। तब आकाशवाणी ने कहा, हे विप्रगण, आप जल्दी में शाप दे रहे हो, राजा का कोई अपराध नहीं है। राजा को बिनअपराध घोषित किया तो बिनअपराधी को दंड कैसे मिले? तो मेरी समझ में इतना ही आया कि कुसंग के कारण अपराध नहीं हुआ है, कुसंग स्वयं अपराध है। तुलसी कहते हैं, नरक में रहना ज्यादा बेहतर है, लेकिन कुसंग से परमात्मा बचाए।

हमारे एक युवक को किसी ने पूछा कि तेरा सत्संग बढ़ा? तो उसने कहा, सत्संग बढ़ा कि नहीं पता नहीं पर कथा सुनते-सुनते मेरा कुसंग कम हो गया है। मेरे युवान भाई-बहन, सत्संग करो तो अच्छी बात है लेकिन कुसंग मत करो। आपकी युवानी कुसंग के कारण भटक रही है। मैं युवानों को इतना ही कहूं, एन्जोय करो दुनिया को, लेकिन आप नव दिन मुझे दो, मैं आपको नवजीवन दूंगा। देश की युवानी कथा में आ रही है ये बहुत बड़ा शगुन है। कथा सुनो और कोई फायदा न हो तो दूसरी बार नहीं सुनना। आप हर क्षेत्र का अनुभव करते हो तो एक बार भगवद्कथा का भी अनुभव करके देखो। फ़ायदा होगा और हो रहा है। सत्संग बड़ा भाग्य है। कुसंग न मिले ये तो उससे भी बड़ा सद्भाग्य है। आगे-

कौसिक कहा छमिअ अपराधू।
बाल दोष गुन गनहि न साधू।।

लक्ष्मण और परशुराम का संवाद चलता है तब बहुत गुस्से में आकर परशुरामजी बोलते हैं, तब विश्वामित्र कहने लगे, महाराज, बालक के गुण-दोष को नहीं गिना जाए। बालक के गुण-दोष को न देखा जाए, ये हमारे लिए बड़ी प्रेरणा है, उसे अपराध करार न दिया जाए। वहां भी 'अपराध' शब्द का प्रयोग आया।

खर कुठार मैं अकरुन कोही।
आगें अपराधी गुरुद्रोही।।

परशुरामजी कहते हैं, मेरे हाथ में हथियार है। मैं कठोर आदमी हूं और अपराधी गुरुद्रोही आगे है। उसने मेरे गुरु शिव के धनुष्य का अपराध किया है। वहां भी 'अपराध' शब्द है। भगवान राम परशुरामजी को कहते हैं, 'तेहिं नाहीं कछु काज बिगारा। अपराधी मैं नाथ तुम्हारा।।' भगवान, लक्ष्मण ने कोई काम नहीं बिगाड़ा, मैं अपराधी हूं। मेरे साथ जो करना है वो कीजिए। आखिर में -

सब प्रकार हम तुम्ह सन हारे।
छमहु बिप्र अपराध हमारे।

कह दिया, हम आपसे हार गए और हमें क्षमा कहिए। कभी-कभी आदमी बिनअपराधी हो, फिर भी उस पर अपराध के इल्ज़ाम लगते हैं, वो अपराध नहीं है। इल्ज़ाम लगानेवाले इल्ज़ाम नहीं लगा रहा है। उसका क्रोध, द्वेष, उसकी अपूर्त इच्छा अपराध का दोष लगाते हैं। ऐसा कोई आदमी तुमको अपराधी करार करे, यद्यपि तुम बिनअपराधी हो फिर भी कह दो, हम सब प्रकार हार चुके।

तो 'बालकांड' में इतनी गिनती है अपराध की। अब शिवविवाह की कथा में जाए। याज्ञवल्क्यजी भरद्वाजजी को शिवकथा सुनाते हैं। शिव और सती कुंभज ऋषि के आश्रम में कथा सुनने गए। राम रो रहे हैं। लीला कर रहे हैं। ये दृश्य देखकर सती को शंका हो जाती है। शिव समझाते हैं कि ये ब्रह्म है, लीला कर रहे हैं। आप संदेह न करो। पर सती न मानी। परीक्षा करने गई। शिव ने सती का त्याग किया। अपने पति का अपमान सहा न गया तो सती दक्षयज्ञ में जलकर भस्म हो जाती है। दूसरा जन्म नगाधिराज हिमालय के घर पार्वती के रूप में प्रगट होती है। हिमालय के घर कन्या का प्रागट्य हुआ तो हिमालय की समृद्धि ओर बढ़ने लगी। मेरे भाई-बहन, घर में बेटी का जन्म हो तो पुत्रजन्म से भी ज्यादा उत्सव मनाना। तब हिमालय के घर सभी संत अपना-अपना स्थान छोड़कर हिमालय जाने लगे। एक दिन घूमते-घूमते नारदजी पधारे। हिमाचल और मैना ने उनका स्वागत किया। अपनी बेटी को उनके चरणों में रखी। कहा कि महाराज, आपकी कृपा से मेरे घर पुत्रीरत्न प्राप्त हुआ है। आप उसका नामकरण करो और भविष्य बताओ। नारद ने कहा, आप बहुत बड़भागी है, इस कन्या के कई नाम हैं- उमा, अंबिका, भवानी। तुम्हारी बेटी के मंदिर बनेंगे। पतिव्रता धर्म की आचार्या मानी जाएगी। तुम्हारी बेटी का नाम लेने से संसार की स्त्रियां पतिव्रताधर्म का तीक्ष्ण व्रत निभा पाएगी। सब तरह सुलक्षणी है तुम्हारी बेटी। हिमालय ने कहा, मेरी बेटी को वर कैसा मिलेगा? नारद ने कहा, अगुन होगा, निर्मान होगा, जिसके माँ-बाप नहीं होंगे ऐसा पति मिलेगा। उदासीन होगा, सब संशय से मुक्त होगा, जटिल होगा, कामनामुक्त होगा, नग्न दिगंबर रहता होगा, अमंगल वेश धारण करता होगा। ये सुनकर माँ-बाप रोने लगे कि इतनी सुंदर कन्या और ऐसा पति मिलेगा? भवानी समझ गई, नारद जिस वर का वर्णन कर रहे हैं वो भोले बाबा के सिवा ओर कोई नहीं हो सकता। दंपती को दुःख हुआ लेकिन उमा हर्षित हुई। नारद को कहा, 'बाबा, आप कहो इतने जप-तप करे लेकिन मेरी

हमारे एक युवक को किसी ने पूछा कि तेरा सत्संग बढ़ा? तो उसने कहा, सत्संग बढ़ा कि नहीं पता नहीं पर कथा सुनते-सुनते मेरा कुसंग कम हो गया है। मेरे युवान भाई-बहन, सत्संग करो तो अच्छी बात है लेकिन कुसंग मत करो। आपकी युवानी कुसंग के कारण भटक रही है। मैं युवानों को इतना ही कहूं, एन्जोय करो दुनिया को, लेकिन आप नव दिन मुझे दो, मैं आपको नवजीवन दूंगा। देश की युवानी कथा में आ रही है ये बहुत बड़ा शगुन है। सत्संग बड़ा भाग्य है। कुसंग न मिले ये तो उससे भी बड़ा सद्भाग्य है।

बेटी को ऐसा वर न मिले।' नारद ने कहा, विधाता ने जो लिखा है, उसको कोई नहीं मिटा सकता। मैंने जो लक्षण बताए वो मेरे अनुमान से सब शिव के पास है। यदि आपकी बेटी को शिव मिल जाए तो दूषण भूषण हो जाएगा। लेकिन शिव को पाना सुलभ नहीं है। तुम्हारी बेटी तप करे और फिर शिवप्राप्ति होगी।

माता-पिता सोचते हैं, तप करने की उम्र हमारी है, बेटी को कैसे कहें? सुबह में बेटी ने ही प्रस्ताव रखा, माँ, मुझे सपने में गौर विप्र ने उपदेश दिया कि तुम्हें शिवप्राप्ति करनी है तो तप करो। माता-पिता दु:खी हृदय से तप करने की इज़ाज़त देते हैं। पार्वती बहुत तप करने लगी तब आकाशवाणी हुई, हे भवानी, तुम्हें शिव मिलेंगे। शिव अकेले घूमते रहे। कहीं ध्यान करते हैं, कहीं रामकथा सुनते हैं। भगवान शिव के नेम-प्रेम को देखकर भक्ति की अविचल और अखंड रेखा समझकर भगवान राम शिव के सामने प्रगट हुए। शिव जागे। रामजी कहते हैं, महादेव, आपने जिस सती का त्याग किया, जो दक्षयज्ञ में जल गई, वो हिमालय के घर प्रगट हुई है। नारद को गुरु समझकर उसके बचन पर बहुत तप किया। मैंने आकाशवाणी से वरदान दिया कि शिव मिलेंगे। मैं आपसे मांग रहा हूं कि भवानी से शादी करो। शिव ने कहा, आपकी आज्ञा मैं शिरोधार्य करता हूं। उसी समय तारकासुर नामक राक्षस ने पूरे समाज को त्रस्त कर दिया। सब चिंतित हो गए कि क्या करे? तब ब्रह्मा ने कहा, शिव का बेटा ही उसे मार सकता है। शिव को जगाओ। उनकी शादी करवाओ।

शिव के पास स्वार्थी देवता आए। प्रशंसा करने लगे। शिवजी ने कहा, मूल बात पेश करो। ब्रह्मा ने कहा, देवसमाज में किसीकी शादी नहीं हो रही है। बारात में जाने का अवसर नहीं मिल रहा है तो मैंने कहा, शिव को कहे ब्याहे, हम आनंद करे। शिव हंसे कि आप कहे और मैं शादी के लिए घोड़े पे चढ़ जाऊं ऐसा मूर्ख नहीं हूं! मेरे इष्टदेव ने मेरे से मांगा है, इसीलिए ब्याह कर रहा हूं। जैसे शिव ने 'हां' कहा, सब देवता तैयारी करने लगे! शिव के गणों ने कहा, देवतालोग ने प्रशंसा की ओर आप शादी के लिए मान गए! शादी के लिए कितनी ज़रूर पड़ेगी। शिव ने कहा, मेरी जटा का मुकुट कर दो। सांप को मोड बना दो। छोटे-छोटे सांप को कंगन-कुंडल बना दो। सर्प की उपवित लगा दो। चिता की भस्म लगा दो, शरीर पर मृगचर्म लेकर कमर पर लपेट दो। शिव के हाथ में त्रिशूल और डमरू पकड़वाया। भस्म का लेपन। त्रिनेत्र है। बाबा तैयार हुए। बूढ़े बैल की सवारी। पूरे जगत में से भूत-प्रेत आए।

शिव की बारात आई। सब नाच रहे हैं। सब शिव के वेश को देखक बेहोश हो गए! पार्वती की माता महाराणी मैना परिछन करने स्वर्णथाल में ज्योति प्रगटाकर गई। जैसे आरती ऊतारने गई, कंचनथाल आरती गिर पड़ी! मैना बेहोश हो गई। शिव का विकट रूप देखा। सखियां महाराणी को लेकर निजभवन में गई। मूर्छा ऊतरी तब कहने लगी, मेरी बेटी का ब्याह मैं ऐसे दुल्हे से नहीं होने दूंगी। पार्वती माँ के अंक में बैठकर बोली, रोओ मत। मेरे भाग्य में जो सुख-दु:ख लिखा है वो जहां भी जाऊंगी भोगना ही पड़ेगा। ये भारत की कन्या की समझ है। नारदजी, हिमाचल, सप्तर्षि सबको खबर मिली, सब चिंतित हुए। नारद के प्रति दुर्भाव जगा सबको। नारद समझाने लगे, महाराज, मैं जानता हूं, आप सब मेरे पर नाराज़ है, लेकिन आप मानती है कि भवानी तुम्हारी बेटी है, लेकिन ये पूरी जगत की माँ है। गतजन्म में दक्षकन्या सती थी। राम पर संदेह किया, सीता का रूप लिया इसी अपराध में शिव ने उसका त्याग कर दिया था लेकिन कठिन तपस्या करके आज तुम्हारे घर जन्मी है। अपने पति को प्राप्त करने के लिए तप किया। ये सदासर्वदा पराम्बा जगदम्बा है। नारद ने मूल बात खोल दी तब सब भवानी को प्रणाम करने लगे। हरवक्त मेरी व्यासपीठ कहती रही, अपने द्वार पर शिव आ जाए, घरमें ही शक्ति होती है लेकिन कोई सद्गुरु परिचय न करवाए तब तक कहां पता लगता है? इसीलिए जरूरी है बुद्धपुरुष हमें गाईड करे। सबमें नूतन भाव जगा। दूसरी बार जब भगवान शिव निकले तब अद्भुत सौंदर्य चंद्रशेखर का है! ब्राह्मणों ने वेदमंत्र का गान किया। भगवान शिव का परिछन हुआ। वेदरीति, लोकरीति से विवाह संपन्न हुआ।

शिव कैलास पहुंचे। देवतागण शिव-पार्वती के स्तोत्रगान करते-करते बिदा हो गए। पार्वती और शिव का नितनूतन विहार चला। कुछ काल बीता। पार्वती ने पुत्र को जन्म दिया। जिसका नाम कार्तिकेय है। कार्तिकेय ने तारकासुर को निर्वाण देकर देवताओं की समस्या दूर की। भगवान शिव का ये चरित्रगान याज्ञवल्क्य महाराज ने किया। ऐसे भगवान शिव कैलास के वेदविदित वटवृक्ष के नीचे सहजासन में बैठते हैं। योग्य समय देखकर पार्वती आती है और शिव को रामकथा के बारे में पूछती है। उसकी जिज्ञासा के उत्तर में भगवान शिव कैलास के ज्ञानघाट से रामकथा का आरंभ करते हैं; उस कथा को हम

मानस-अपराध : ७ :

# समाज को निर्भय करे वो साधु

देवगुरु बृहस्पति ने इन्द्र को कहा, हे इन्द्र, भगवान राम का ऐसा स्वभाव है कि स्वयं राम का कोई अपराध करे तो राम को जरा भी पीड़ा नहीं होती, गुस्सा नहीं आता। लेकिन यदि कोई राम के भक्त का अपराध करता है तो राम-रोषाग्नि में ये जलकर भस्म हो जाता है। इन दो पंक्तियों का आश्रय लेकर हम और आप सब संवादी सूर में 'मानस-अपराध' को केन्द्र में रखते हुए, हमारी विशेष जागृति और सावधानी के लिए बातचीत कर रहे हैं। आप भी सोचियेगा, इतिहास को याद करियेगा। वर्तमान को देखियेगा और भविष्य का अन्दाज भी करियेगा। इस जगत में यदि ज्यादा से ज्यादा मेरे देखे, मेरी तलगाजरडी अक्ल के मुताबिक सबसे ज्यादा अपराध का इल्ज़ाम यदि किसी पर भूतकाल में, वर्तमान में, या भविष्य में लगा, लगते होंगे, लगेंगे तो वो है केवल साधु। जितने साधु पर इल्ज़ाम लगे हैं भूतकाल में। इतिहास के पन्ने देख लीजिए। इवन राम से शुरू करें। इससे पूर्व तो हम कहां जाय? राम पर भी अपराध इल्ज़ाम लगा! ज्यादा विस्तृत करने का अवकाश नहीं लेकिन आप समझते जाईयेगा। वालि को छिपकर क्यों मारा? अपराध ऊंगली ऊठी! जानकी की अग्निकसौटी क्यों की? अपराध लगाया गया! दूसरी बार सगर्भा स्थिति में सियाजु को वन क्यों भेज दिया गया? इल्ज़ाम लगा। और ये छोटे-बड़े इल्ज़ाम नहीं। आज तक पीटाई होती है! बौद्धिक लोग पीटाई करते हैं तर्क-वितर्क से! यदि अवतार परंपरा में देखे तो राम को विष्णु का अवतार भी माना है। तो विष्णु पर भी इल्ज़ाम लगा। इसी अवतार की शृंखला में भगवान श्रीकृष्ण के पास जाइये। कितने अपराध के इल्ज़ाम लगाये गये कृष्ण पर! कभी लगा, पक्षपात किया। कभी लगा, वादा तोड़ा। कभी लगा, मथुरा को छोड़कर भाग गया। कभी चोरी का इल्ज़ाम लगा!

चलिये आगे। तथागत बुद्ध के पास जाइये। और भगवान बुद्ध के उपर भी ऊंगलिया उठी। सबसे पहला इल्ज़ाम तो ये है कि बुद्ध का अपराध था कि मध्यरात्रि को अपनी पत्नी और अपने बालक को छोड़कर भाग जाना। उस समय के पंडित लोग ये भी अपराध डालते रहे कि ईश्वर इतनी बड़ी तपस्या से नहीं मिलता, बुद्ध बुद्धु है! वहां तक इल्ज़ाम लगा; अथवा तो बहुत बड़ा सार्वजनिक आक्षेप, सार्वजनिक इल्ज़ाम तो बुद्ध पर ये लगा और अपराधी कोशिश की गई कि बुद्ध ईश्वर को नकारता है; बुद्ध आत्मा को नकारता है। महावीर के पास जाइये। महावीर ने भी आत्मा को नकारा। स्यादवाद का स्थापन किया महावीर ने। इल्ज़ाम लगा। जिसस क्राईस्ट के पास जाइए। अपराध लगा कि ये युवकों को बिगाड़ रहा है। ये ईसाई धर्म के बिलकुल विरुद्ध काम कर रहा है। अपने आप को पिता के इकलौते बेटा घोषित करके दूसरों का अपमान करता है, ऐसा इल्ज़ाम लगा है। और अपराध का भारी कडा दंड़ मिला कि वधस्तंभ पर खीले ठोक दिये!

सोक्रेटिस के पास जाइये। उस पर इल्जाम लगाया गया कि ये अपराधी है। और ज़हर पिलाकर मार दिया जाय वहां तक! और उस पर भी यही इल्ज़ाम कि ये युवानों को बिगाड़ रहा है। गुमराह कर रहा है। मन्सूर पर इल्जाम लगा कि ये अपराध कर रहा है क्योंकि ये कहता है कि 'अनलहक।' 'अहं ब्रह्मास्मि।' मैं ही ईश्वर हूं। और इसी अपराध पर मन्सूर को शूली पर चढ़ाया था। अपराधियों ने अपराध का इल्ज़ाम लगाया! शरमद; इस्लाम धर्म में जाओ। उस पर अपराध का इल्ज़ाम लगा। छ सौ साल पहले गुजरात के नरसिंह महेता पर इल्ज़ाम लगा कि ये प्रपंच कर रहा है। उसको भगवान, भक्ति का कोई पता नहीं। ये गुमराह कर रहा है। और सम्राट ने स्वयं उसको जेल में बंद कर दिया। मीरांबाई को कहा कि ये राजस्थानी मर्यादा को छिन्नभिन्न कर रही है! अपराध का इल्ज़ाम किस पर नहीं लगे? पूरा इतिहास ये है। ये तो अच्छा है कि इन प्रबुद्ध पुरुषों ने लोगों ने जो अपराधी करार कर दिये उसको दिल में नहीं लिये। जिनजिन ने कहा उनके लिए भी प्रभुप्रार्थना करके उनको मुक्ति का वरदान दिया। वरना ये जगत प्रायश्चित्त नहीं कर पाता!

तो ये जगत कुछ ऐसा लगता है। और मैं 'साधु' शब्द का प्रयोग करता हूं तो समझिये, साधु कोई वर्ण नहीं है। न ब्राह्मण है; न क्षत्रिय है; न वैश्य है; न शुद्र है। ये वर्ण है ही नहीं। ये वर्ण से पर है। इसलिए साधु कोई भी हो सकता है। ब्राह्मण भी हो सकता है। वैश्य भी हो सकता है। क्षत्रिय भी साधु हो सकता है। जिसको हम अधम मानते हैं वो भी साधु हो सकते हैं। साधु वर्णातीत है। एक बच्चा साधु का दर्शन करा सकता है। युवान भी साधु हो सकता है। हिन्दु हो सकता है, मुस्लिम हो सकता है, ईसाई हो सकता है, भारतवासी हो सकता है, ओर मुल्कों के हो सकते हैं। कोई देश का बंधन नहीं; कोई काल का बंधन नहीं; कोई जाति का बंधन नहीं; कोई भाषा का बंधन नहीं; कोई वर्ण का बंधन नहीं।

मुझे दो-तीन दिन से पूछा जा रहा है कि बापू, साधु के लक्षण क्या? बहुत है। साधु की पहचान क्या? खास करके युवान भाई-बहन पूछते हैं। साधु हम किसको समझे? कुछ ओर साधु के पहचान के संकेत समझे। एक साधु तापस होता है। तपस्वी होता है वो साधु। पेन्ट पहना हो, मुझे कोई आपत्ति नहीं। हाफ पेन्ट पहनो, मुझे कोई आपत्ति नहीं। धोती पहनी हो, पीताम्बर हो, श्वेताम्बर हो, दिगंबर हो कोई चिन्ता नहीं। तपस्वी है, तापस है वो साधु। आप कहेंगे कि तापस? ईक्कीसवीं सदी का तापस कौन? तो मेरी व्यासपीठ मेरी जिम्मेवारी से कहना चाहेगी कि विश्व में सबसे ज्यादा सहन करे वो तापस। हम और आप तो क्या सहन करते हैं यार! सबसे ज्यादा साधुओं ने सहन किया है। सबसे ज्यादा वर्तमानयुग में साधु जो होंगे वो सहन कर रहे हैं। और मुझे लगता है कि जगत ऐसे ही चलेगा। भविष्य में भी साधुओं को सहन करना पड़ेगा। साधु को तापसी होना पड़ता है। साधु सहन न करे तो कौन करे यार!

युवान भाई-बहन, आप बार-बार पूछते हैं कि साधु, बुद्धपुरुष, संत, सद्गुरु उसकी परिभाषा क्या? आप परखे। गणवेश की महिमा है। अवश्य महिमा है। इसका अनादर न करे। लेकिन साधु पहचाना जाता है वस्त्र से नहीं, वृत्ति से। वृत्ति क्या है? जैन धर्म में एक महापुरुष हुए; अभी है। उसकी बोलबाला एक समय रही जैनधर्म में। आचार्य चित्रभानुजी-

मैत्रीभावनुं पवित्र झरणुं मुज हैयामां वह्या करे।

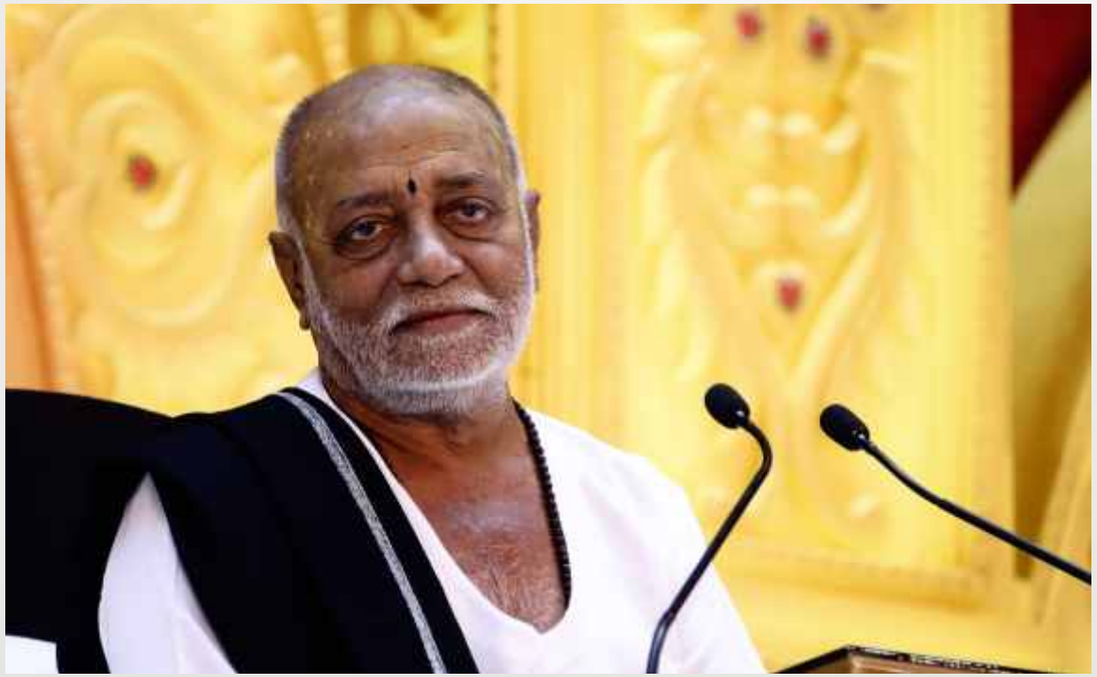



बहुत स्नेहादर रखते हैं। जैन धर्म के साधु के वेश में थे और उसने साधुवेश छोड़ दिया और एक महिला से शादी भी कर ली। न्यूयोर्क चले गये। ये जो हुआ उसमें मुझे नहीं जाना। लेकिन उसका एक जवाब मुझे बहुत प्यारा लगा। उसको जब पूछा गया कि ये जैन आचार्य, आपकी इतनी प्रतिष्ठा; आपके बारे में लोग पागल होते थे और आपने इतना झटका दे दिया समाज को और आपने शादी कर ली? चित्रभानुजी ने कहा था कि मुझे लगा कि वेश से साधु होने से वृत्ति से साधु बने रहना ज्यादा अच्छा है। इसलिए मैं वेश का साधु न बनकर मैं वृत्ति का साधु बन जाऊं।

दूसरा लक्षण, जो समझता है कि परमात्मा सब जगह है समान रूप में। जो अनुभव कर चुका है कि ईश्वर सबमें है, सब जगह है, समान रूप में। 'सर्वं खलु इदम् ब्रह्म।' 'सिय राममय सब जग जानी।' दो वस्तु जो जानता है उसको साधु समझना प्लीज़। दो वस्तु जाने 'मानस' के आधार पर। एक, जो जानता है कि ईश्वर व्यापक है। इस व्यापक को प्रगट कैसे किया जाय? ये दूसरी चीज भी जो जानता है। प्रेम के सिवा ओर कोई उपाय नहीं है व्यापक ब्रह्म को व्यक्त करने का। और ये जानने के बाद जो अपने नाम से, अपने कर्तव्य से, अपनी लीला से, अपने धाम से, अपने रूप से विश्व का कल्याण करता है। ये तीन काम; दो जाने और एक करे उसको 'मानस'कार ने साधु कहा है। वो है भगवान शंकर। उसने कहा देवताओं को-

हरि व्यापक सर्वत्र समाना।
प्रेम तें प्रगट होहिं मैं जाना।।

परमात्मा समान रूप में सर्व जगह व्याप्त है। ये जानते हैं। शब्द 'जाना' है वहां चौपाई में। वो प्रेम से प्रगट होगा। जो जानता है। प्रभु सबमें है। प्रेम से उसको प्रगट किया जा सकता है। और केवल जानना काफी नहीं। कुछ करना पड़ेगा। और करना है सबका कल्याण। वहां लोगों का कल्याण करना ये साधु है। ऐसे साधुओं की व्याख्या मैं 'मानस' के आधार पर आपके सामने रख रहा हूं ताकि हम अपराध से बचे। 'तात भरत तुम्ह सब बिधि साधु।' गोस्वामीजी ने कहा, भरत, आप सब प्रकार से साधु हैं। भरत साधु है। विश्व का भरनपोषण करे वो भरत। जो समाज का शोषण न करे, समाज का पोषण करे वो साधु। तापस हो वो साधु। परमात्मा की सर्वव्यापकता को जाने और उसको प्रगट करने की विधि भी जाने और जानने के बाद समाज के कल्याण में कार्यरत हो वो साधु। और तीसरा साधु समाज का पोषण करे। किसीका शोषण न करे। एक शे'र सुनियेगा-

जिस दीये में हो तेल खैरात का,
उस दीये को जलाना नहीं चाहिए।

- ज़हूर आलम

जिस ऊंचाई से इन्सान छोटा दिखे वो ऊंचाई कोई काम की नहीं। महामुनि विनोबाजी कहा करते थे, हमारे देश में इतनी ऊंची विभूतियां, ऐसी प्रगल्भ शख्सियत हुई है लेकिन इतनी ऊंचाई पर रही कि आम आदमी वहां जा न पाया और न वो नीचे आ सके!

'रामचरितमानस' में माँ कौशल्या को साधु कहा है। पुरुष-स्त्री साधुता में कोई भेद नहीं। साधु कहा है कौशल्या को। ये कौशल्या की भूमि है। कौशल्या वो है समस्त ममताओं को सिमटकर किसीको बताने न दे और समता को व्यवहार में स्थापित कर दे वो कौशल्या है। साधु कौन? कोई भी हो, ममता तो होती ही है साहब! लेकिन ममता को समेटकर पता न लगे ऐसे रखे और समता का कभी द्वेष न करे। समता को कभी खंडित न होने दे। क्या कहती है कौशल्या 'अयोध्याकांड' में, जब सुना कि राम का वनवास है। राघव आये। वनवास की बात कैकेयीभवन से उनको बता दी गई और माँ कौशल्या से जब आज्ञा, आशीर्वाद लेने वनगमन के पहले जब आये। और माँ तो उत्साह से भरी थी कि आज राघव राजा होनेवाला है। अब राम सोचने लगे इस माँ को मैं कैसे समजाऊं कि मुझे वन जाना है? मैं ये कहूंगा तो इसकी दशा क्या होगी? राम ने कहा, माँ, मेरे पिता ने मुझे राज दिया है; मेरे पिता ने मुझे वन का राज दिया है। अयोध्या तो सीमा है माँ। थोड़ा छोटा नगर है। मुझे वन का राज दिया है। कितनी सरलता से प्रभु ने ये बात ले ली! और दुनिया के समस्त सत्ताधीशों को मैं व्यासपीठ से कहना चाहूंगा कि राज्य केवल पाटनगर में नहीं होता है; वनों में होता है। दूरदराज आदिवासी, गिरिवनवासी है वहां राज्य होता है। पाटनगर में व्यवस्था होती है। वहां से संचालन होता है।

पिता दीन्ह मोहि कानन राजु।

वन का राज मुझे मिला। माँ समझ नहीं पाई। फिर धीरे-

धीरे राघवेन्द्र कहते हैं कि दो वचन की बात आई माँ और फिर तू तो जानती है कि भरत मुझे कितना प्रिय है? तो भरत को युवराजपद दिया है। चौदह साल वन में रहूंगा। अब आप कल्पना कीजिये कि माँ को कितना धक्का लगा होगा? लेकिन अपनी ममता को समेटकर क्या समता की प्रतिष्ठा की है! माता-पिता दोनों ने तुम्हें वन की बात कही हो तो वन तुम्हें शत अयोध्या की तरह सुख दे। ये समता जो है वो साधुता है। इसलिए माँ को साधु कहा। साधु समता रखेगा। हां, व्यवहार में थोड़ी पात्रता देखकर विषमता करनी पड़ेगी। कई लोग कहते हैं कि बुद्धपुरुष के वचन भिन्न-भिन्न क्यों होते हैं? कभी तो वो ये कहता है, कभी ये कहता है। कौन समाज उसके सामने है? कौन आश्रित उनके पास आया? कभी उसको वो कर्मयोग सिखाये, कभी किसी को ज्ञानयोग देगा। कभी भक्ति की चर्चा करेगा। पात्रभेद से समयानुकूल वो बोलेगा। समता अखंड होती है। समता रखे सो साधु। इसलिए माँ को साधु कहा। भरत को साधु कहा। शिव को साधु कहा। कहने दो, विभीषण को साधु कहा।

युवान भाई-बहन, मेरी व्यासपीठ ने साधु की परिभाषा ये महसूस की है। साधु मानी जो आक्रमक नहीं है, जो भीषण नहीं है, वो साधु है। जिसका किसीको भय न लगे वो साधु है। भयभीत करे वो धर्माचार्य हो सकता है, यस। ये करोगे तो नर्क में जाओगे! ये करोगे तो स्वर्ग में! मानो ये स्वर्ग-नर्क अपनी जेब में हो! समाज को भयभीत करे वो साधु क्या? समाज को निर्भय करे। हनुमानजी ऐसे साधुता के पक्षपाती है। राम ऐसे साधु है। हनुमानजी कहते हैं, ये सुग्रीव को अभय करो। आप साधु है। साधु समाज को निर्भय करे। हमें कितना डराया गया धर्म के नाम से! हां, सावधान करना चाहिए लेकिन समाज भयभीत हो गया! आक्रमकता साधुता नहीं है। तो साधु की एक परिभाषा ये हो जाएगी मेरे भाई-बहन कि जिसमें आक्रमकता नहीं है; जिसमें सौम्यता है; शील है।

'अपराध' शब्द के लिए तुलसी 'दोहावली' में एक दोहा लिखते हैं-

समरथ को न राम सों तीय हरन अपराधु।
समयहिं साधे काज सब समय सराहहिं साधु।।

राम के समान समरथ कौन? और जानकी के अपहरण के समान विश्व में अपराध कौन? लेकिन मेरे राघव ने शांति धारण की। समय साधे वो साधु। तुलसी लिखते हैं, तुरंत रावण को नहीं मारा। समय देखा। समय आने दो, समय आने दो, समय आने दो। और राम एक मिनट में रावण को चुरचुर कर देते। जानकी का अपहरण जैसा अपराध उसके सामने राम शांत रहे कि समय आने दो, समय आने दो, समय आने दो। समर्थ होते हुए भी जो सह ले। गरीब स्वभाव, रांक स्वभाव हो। तो साधु आक्रमक नहीं है, रांक है। दो गाली दो तो साधु तुम्हें गाली नहीं देगा। तुम्हारे कल्याण के लिए कोने में रात को बैठकर थोड़ा रो लेगा ये साधु है। आक्रमकता न हो। और कोई हमें 'साधु' शब्द से संबोधन करे न करे, कोई चिंता नहीं। हम अपने जीवन में जहां है; कोलेज में पढ़ते हो वहां भी आप साधु हो सकते हो; दुकान में दुकानदारी करते हो वहां भी आप साधु हो सकते हो; कोई पर्टिक्यूलर जगह की जरूरत नहीं है।

मेरा आज का जो आरंभ है वो ये है कि विश्व में इतिहास में सबसे ज्यादा इल्जाम साधु पर लगे। वर्तमान में भी कई साधु हो गये; कई होंगे। ये हमारा दुर्भाग्य है कि हम उसको पहचान नहीं सकते! बाकी कई बुद्धपुरुष होंगे जो हमारे जीवनकाल में रहे होंगे। तो अपराध का इल्ज़ाम लगाया जाता है। कहां नहीं लगता? और भविष्य में भी ये दुनिया ऐसा ही करती रहेगी। भगवान राम के बारे में तुलसी ने कहा-

कहु तजि रोषु राम अपराधू।
सबु कोउ कहइ रामु सुठि साधू।।

किसके शब्द है? महाराज दशरथ के ये शब्द है। कैकेयी के कोपभवन में मंथरा ने बाजी बिगाड़ दी है। मंथरा ने कैकेयी को तीन बात कही कि ये तीन काम करो। एक तो राम के लिए वनवास मांगो। भरत के लिए राज मांगो। और तीसरा जब वरदान मांगो तब महाराज दशरथजी के मुख से राम की कसम बुलवाना। और ये मंथरा ने किया। मेरे युवान भाई-बहन, सत्संग न हो तो इतनी चिंता नहीं है लेकिन कुसंग से बचियेगा। भरत जैसे संत को जिसने जनम दिया ऐसी माँ कैकेयी की बुद्धि मंथरा के कुसंग से बिगड़ चुकी है। हम और आप किस खेत की मूली है? सावधान! हल्के लोगों का संग न करो। उदासीन रहो। उपेक्षा भी न करो। उसके कल्याण के लिए तुम्हारे पास भजन की संपदा हो तो थोड़े भजन से दुआ करो। फिर तो दशरथजी की जो दशा हुई उसी समय दशरथजी बोले हैं ये अपराधवाली पंक्ति-

कहु तजि रोषु राम अपराधू।

चौपाई के शब्द पर ध्यान दे। कभी-कभी सामनेवाली व्यक्ति अपराधी न होते हुए भी हमारा रोष उसमें अपराध का आरोपण करता है। वो गुनहगार नहीं है, क्रोध है। किसी का दोष देखकर आप क्रोध करे तो मेरी व्यासपीठ चला लेगी कि उसमें दोष है, आप रोष कर रहे हैं कि उसने भूल की; आपने थोड़ा डांटा। माफ़ करने योग्य है। यद्यपि क्रोध कभी भी प्रशंसनीय नहीं है। दोष हो रोष करो चलो मान लिया। लेकिन तुम्हारे रोष के कारण तुम नये-नये दोषों का आरोपण करो ये अपराध है। दशरथजी कहते हैं, कैकेयी, पूरी दुनिया कहती है, हमारा राम साधु है। क्रोध को छोड़कर मुझे राम का अपराध बता। राम तो साधु है।

राउ धीर गुन उदधि अगाधू।
भा मोहि तें कछु बड़ अपराधू।।

अब निर्दोष साधु, जिसने कोई अपराध नहीं किया है; रोष के कारण अपराध आरोपित हो रहा है तब साधु क्या करेगा? निर्दोष साधु क्या करेगा? वो अपने उपर लेगा। अब ये राम का वक्तव्य है। महाराज दशरथजी को देखते हैं तो सोचते हैं कि मेरे पिता तो धैर्यवान है, गुणवान है, गुण के समुद्र अगाध सागर है। फिर भी मेरे पिता की ये दशा है? तो गुणवान पिता कोई भूल तो नहीं कर सकता। मुझे लगता है माँ कि मुझसे कोई अपराध हो गया है।

साधुपुरुष कौन है? जो फिर अपने उपर ले ले। कोई मेरी ही भूल हो गई होगी चल, चल मेरी भूल है। अब कैकेयी का स्वयं का अभिप्राय 'मानस' में कहा। जब राम ने कहा, मेरे से कोई अपराध हो गया होगा माँ। मेरे पिता तो गुण के सागर है। मेरे पिता की ये दशा मेरे अपराध के कारण होगी वो बता नहीं पाते इसलिए दु:खी है। अब कैकेयी भी देखो। सत्य तो कभी न कभी निकल जाता है; लाख दबाओ। कैकेयी क्या कहती है?

तुम्ह अपराध जोगु नहिं ताता।
जननी जनक बंधु सुखदाता।।

राघव, तू तो माता-पिता-बंधु सबको सुख देनेवाला है। तू अपराध के योग्य है ही नहीं। सत्य कभी न कभी निकल जाता है। एक निवेदन ओर क्रम में।

करहु राम पर सहज सनेहू।
केहिं अपराध आजु बनु देहू।।

ये वक्तव्य ऋषि पत्नियों का है। ऋषिनारियां कैकेयीभवन में आयी। अब सुना उसको वनवास तो ऋषि नारी समझाने के लिए आती है और कैकेयी को कहती है कि तू भी सहज स्नेह राम को करती थी। आज कौन अपराध के कारण तू ये कर रही है?

एक वक्तव्य ओर देखा और वो वक्तव्य माँ कौशल्या का।

राजु देन कहुँ सुभ दिन साधा।
कहेउ जान बन केहिं अपराधा।।

बेटा, राज के लिए सुन्दर दिन निर्णित किया; ये कौन-सा अपराध है कि तुम्हें बन जाने को कहा? आखिरी एक वक्तव्य-

औरु करै अपराधु कोउ और पाव फल भोगु।
अति बिचित्र भगवंत गति को जग जानै जोगु।।

ये दुनिया के समस्त साधुओं का लिया हुआ निर्णय है। इसकी भूमिका मैंने आज की कथा में बनायी। जब बिनअपराधी पर आक्षेप लगता है तब साधु जो जान लेता है कि अपराध किसी का और भोग कोई बन रहा है। फिर साधु कौन-सा समाधान लेगा? नियति, परमात्मा की गति अतिविचित्र होती है। इसको ठीक से यथावत जाननेवाला

मेरी व्यासपीठ ने साधु की परिभाषा ये महसूस की है। साधु मानी जो आक्रमक नहीं है, जो भीषण नहीं है, वो साधु है। जिसका किसीको भय न लगे वो साधु है। भयभीत करे वो धर्माचार्य हो सकता है, यस। ये करोगे तो नर्क में जाओगे! ये करोगे तो स्वर्ग में! मानो ये स्वर्ग-नर्क अपनी जेब में हो! समाज को भयभीत करे वो साधु क्या? समाज को निर्भय करे। हनुमानजी ऐसे साधुता के पक्षपाती है। राम ऐसे साधु है। साधु समाज को निर्भय करे। हमें कितना डराया गया धर्म के नाम से! हां, सावधान करना चाहिए लेकिन समाज भयभीत हो गया! आक्रमकता साधुता नहीं है।

कौन होता है? तो ये साधु जो है उस पर इल्ज़ाम लगते हैं और उसको अपराधी करार करने की चेष्टा होती है तब ये सभी सूत्र हमें 'मानस-अपराध' सब्जेक्ट के लिए बड़ा सपोर्ट कर रहे हैं।

कल हमने शिवविवाह की कथा आपको सुनाई। भगवान शिव कैलास के वटवृक्ष के नीचे बैठे हैं। पार्वती ने योग्य समय देखा और भवानी शिव के पास गई। महादेव ने प्रिया को आदर दिया और वाम भाग में आसन दिया। पार्वती पूछती है, महाराज, एक प्रश्न है। एक जनम बीत गया। फिर भी अभी संदेह नहीं गया, राम ब्रह्म है कि मनुष्य है? भगवान शिवजी मुस्कुराये प्रश्न सुनकर। 'धन्य हो देवी, धन्य हो। हे हिमाचलपुत्री, आप धन्यवाद के पात्र है क्योंकि आपके समान कोई उपकारी नहीं है। आपने मुझे रघुपति की कथा पूछी देवी, जो कथा समस्त लोक को पावन करनेवाली गंगा है।' प्रसन्नता व्यक्त की। परमतत्त्व की चर्चा की। वो ही तत्त्व वो ही निराकार नराकार क्यों हुआ? निर्गुण सगुण क्यों हुआ? व्यापक व्यक्ति क्यों हुआ? जगत का बाप किसीका बेटा क्यों हुआ? जगनिवासी अवधनिवासी क्यों हुआ? उसके कई कारण है देवी। और तत्त्वत: कोई कारण है ही नहीं। क्योंकि ईश्वर को कार्य-कारण संबंध लागू नहीं होता। फिर भी निराकार साकार होता है तो कोई न कोई कारण वो स्वीकार करता है। पांच कारण बताये। पहला कारण जय-विजय को मिला सनतकुमारों का शाप। दूसरा कारण सतीवृंदा ने भगवान विष्णु को दिया हुआ शाप। तीसरा कारण नारद ने विष्णु को शाप दिया। चौथा कारण स्वयंभू मनु और शतरूपा नैमिषारण्य में गोमती नदी के तट पर कड़ी तपस्या की। परमात्मा ने वरदान दिया, मैं अयोध्या में आपके घर पुत्ररूप में आऊंगा। ये चौथा कारण। पांचवां और अंतिम कारण राजा प्रतापभानु। ब्राह्मणों ने प्रतापभानु को शाप दे दिया। यद्यपि प्रतापभानु का कोई अपराध नहीं था लेकिन कल मैंने कहा, कुसंग ही अपराध था। प्रतापभानु रावण होता है।

'मानस' में राम के प्रागट्य से पहले रावण की कथा आई है। पहले रात्रि होती है फिर दिन होता है। इसलिए तुलसी पहले निशिचरवंश की कथा कहते हैं। उसके बाद सूर्यवंश की कथा कहते हैं। रावण, विभीषण, कुंभकर्ण ने बहुत तप किया। कठिन, दुर्गम, दुर्लभ वरदान प्राप्त किये और उसका दुरुपयोग शुरू कर दिया। जहां समृद्धि मिली, लूंटी। सौन्दर्य का शिकार किया। रावण के अत्याचार से पूरा संसार भ्रष्टाचार हो गया। धरती अकुला उठी। गाय का रूप लेकर ऋषिमुनियों के पास गई, मुझे बचाओ। ऋषिमुनियों ने कहा कि हमारा चिंतन-मनन रुक चुका है रावण के जुलम से। देवताओं के पास गये। देवताओं ने कहा, रावण आता है तो हम मेरु पर्वत की गुफाओ में जाते हैं। हमारे पुण्य करीब-करीब खत्म होनेवाले है। हम कुछ नहीं कर पाते। सब मिलकर ब्रह्मा के पास गये। ब्रह्मा ने कहा, अब तो एक ही उपाय है। पूरे जगत को जिसने बनाया वो परमात्मा के चरण में हम जाये। सबने भगवान को पुकारा। आकाशवाणी हुई, सिद्ध देवगण, ऋषिमुनि, पृथ्वी, डरो ना। मैं अंश सहित प्रगट होऊंगा। परमात्मा की आकाशवाणी सुनकर सब देवगण राजी हो गये।

मेरे भाई-बहन, प्रागट्य तक पहुंचने की एक छोटी-सी फोर्म्यूला। पहले देवताओं ने पुरुषार्थ किया कि रावण के जुलम से कैसे भी बचे। लेकिन पुरुषार्थ की सीमा आ गई। कुछ न हो पाया। फिर प्रार्थना का आश्रय किया। फिर प्रार्थना की सीमा पूरी हो गई उसके बाद प्रतीक्षा करने लगे कि अब हरि आयेंगे। पुरुषार्थ, पुकार और प्रतीक्षा तीन साधक करेंगे तब जाके परमात्मा का प्रागट्य होगा। हम पुरुषार्थ करते हैं, प्रार्थना नहीं करते। तो पुरुषार्थ के बाद प्रार्थना। प्रार्थना भी करते हैं, साधना भी करते हैं, लेकिन प्रतीक्षा नहीं कर पाते। थक जाते हैं। प्रतीक्षा करो। हमारे गुजराती कवि कृष्ण दवे की कविता है-

आवशे, ए आवशे, ए आवशे, ए आवशे.
तुं प्रतीक्षामां अगर शबरीपणुं जो लावशे.

अहल्या की तरह प्रतीक्षा, शबरी की तरह प्रतीक्षा। माँ जानकी की तरह अशोकवाटिका में चल रही प्रतीक्षा। प्रतीक्षा भी साधना है। पुरुषार्थ भी एक साधना है। पुकार भी एक साधना है। तीनों मिल जायेंगे उसके बाद तुरंत प्रागट्य। उसके बाद राम की अनुभूति। देवतालोग प्रतीक्षा करने लगे।

रघुवंश का शासन। सूर्यकुल का शासन। वर्तमान सम्राट अवधपति दशरथ है। वेदविदित महाराज है। भक्तियोग, ज्ञानयोग और कर्मयोग का त्रिवेणी विग्रह वो है महाराज दशरथजी। महाराज की कौशल्यादि प्रिय रानियां



है। और मेरे युवान भाई-बहन, यहां आदर्श दांपत्य की एक छोटी-सी फोर्म्यूला है। ये तीन सूत्र जिसके जीवन में आ जाय उसके घर राम जैसा बेटा प्रगट हो जाएगा। तीन सूत्रीय फोर्म्यूला। क्या करते हैं दशरथ? कौशल्यादि नारी, दशरथजी को अपनी पत्नी अपनी रानियां प्रिय है। और रानियां क्या करती है? पवित्र आचरण, पवित्र व्यवहार। अपने पति को आदर देती है। फिर पति और पत्नी दोनों क्या करते हैं मिलकर? परमात्मा के चरणों में प्रीत करते हैं। पुरुष को चाहिए अपनी पत्नी को प्रेम दे। स्त्री को प्रेम चाहिए, गहने नहीं चाहिए। अपवाद हो सकते हैं कि जिसको प्रेम नहीं चाहिए, गहने चाहिए! हरेक पुरुष को चाहिए अपनी स्त्री को प्रेम दे। हरेक स्त्री को चाहिए अपने पति को आदर दे। क्योंकि पुरुष जरा घमंडी होता है उसको आदर दो। उसको सन्मान दो। उसको अच्छा लगे ऐसा पवित्र आचरण करो। और फिर दोनों मिलकर तुम्हारा जो मज़हब हो, तुम्हारा जो धर्म हो, तुम्हारी जो साधनापद्धति हो, हरिस्मरण करो। ये तीन जो करेंगे उनके घर राम प्रगट होगा। लेकिन इतना नहीं हो पा रहा है!

महाराज दशरथजी का ऐसा दाम्पत्य था। लेकिन पुत्रप्राप्ति नहीं हो रही थी। महाराज सोचने लगे, मेरे भाग्य में पुत्रसुख नहीं है? दुनिया में किसी को समस्या है तो मेरे पास आते है। मेरी समस्या मैं किसको सुनाऊं? तो दशरथ ने बताया कि जब कहीं भी आप बात न कर पाओ तब अपने गुरुद्वार जाना। अपने गुरु के पास अपनी वेदना रखना। दशरथजी गुरु के पास गये। 'महाराज, एक पीडा लेकर आया हूं। मेरे भाग्य में पुत्रसुख नहीं है क्या? रघुवंश मेरे से खत्म हो जाएगा?' मुस्कुराते हुए महाराज वशिष्ठजी ने कहा, राजन्, इतना धैर्य रखा है, ओर धैर्य रखो। एक नहीं, चार पिता के पुत्र हो जाओगे। पुत्र कामेष्टि यज्ञ करो। शृंगी को बुलाया। यज्ञ का आरंभ हुआ। भक्ति सहित आहुतियां डाली गई। और प्रसाद की खीर लेकर यज्ञपुरुष बाहर आये। महाराज वशिष्ठजी को प्रसाद दिया। राजा ने अपनी प्रिय रानियों को बुलाकर यज्ञप्रसाद की क्षीर है उसको बांटा। आधा प्रसाद कौशल्याजी को दिया। आधा था उसमें से दो भाग करके एक चौथाई पा भाग कैकेयी को और पा भाग बचा उसका दो भाग करके कौशल्या और कैकेयी के हाथों से प्रसन्नता से सुमित्रा को दिलवाया। तीनों रानियों ने इस प्रसाद को उदरस्थ किया। गोस्वामीजी कहते हैं, परमात्मा गर्भ में पधारे। सब जगह सुख-समृद्धि छाने लगी। परमात्मा को प्रगट होने की बेला निकट आने लगी। पूरा पंचाग अनुकूल हो गया। त्रेतायुग, चैत्रमास, शुक्लपक्ष, नवमी तिथि, अभिजित, मध्याह्न का सूर्य है। मंद सुगंध शीतल वायु बहने लगी। पृथ्वी के देवता यानी ऋषिमुनि, ब्राह्मण देवता, पाताल के नाग देवता और आकाश के सूर्य देवता स्तुति करने लगे। माँ कौशल्या के भवन में जगनिवास परमात्मा प्रगट हुए हैं।

माँ करबद्ध खड़ी रह गई! कहने लगी, मैं किन शब्दो में स्तुति करूं? भगवान मुस्कुरा दिये। मैंने संतों से सुना कि इतनी बात के बाद कौशल्याजी जो भगवान प्रगट हुए उससे मुख फेर लेती है। प्रभु ने कहा, मैं आया और तू मुंह फेर रही है? कौशल्या ने कहा आप आये, आपका स्वागत। लेकिन आप वचन चुक गए हैं! आपने हमें कहा था, मैं आपके घर नररूप लेकर आऊंगा। आप नारायण लगते हो। मुझे नररूप में नारायण चाहिए। बड़ा क्रांतिकारी विचार है ये। मुझे मानवरूप में परमात्मा चाहिए। माँ ने कहा, जनम लेनेवाला बच्चा सीधा इतना बड़ा नहीं होता, आप छोटे हो जाओ। परमात्मा नवजात शिशु की तरह छोटे हो गये। माँ से पूछा, अब तो हो गया? माँ ने कहा, आप बालक तो बन गये लेकिन बातें बड़ों की तरह करते हो! बालक तो रोयेगा। आप रोओ। माँ के अंक में परात्पर ब्रह्म बालक के रूप में रोने लगे और बालक का रुदन सुनते ही ओर रानियां भ्रमसहित दौड़ आयी, क्या हुआ? आये ब्रह्म और अन्य रानियों को हुआ भ्रम! दासदासियों को खबर मिली। महाराज दशरथजी के पास बधाई देते हुए जाकर कहा, महाराज, बधाई हो। कौशल्या माँ ने पुत्र को जनम दिया है। पुत्रजन्म सुनते ही पहली अनुभूति राजा को ब्रह्मानंद के समान आनंद हुआ। जिसका नामश्रवण करने से शुभ हो क्या तत्त्व वो मेरे घर आया? कौन मानेगा? वशिष्ठजी आये। कहा कि महाराज, बड़भागी हो! साक्षात् ब्रह्म आपके घर भक्तों के कारण बालक के रूप में प्रगट हुए। और पूरी अयोध्या में, पूरे जगत में बधाईयां शुरू हुई, उत्सव शुरू हुआ। रायपुर छत्तीसगढ़ की इस व्यासपीठ से आप सबको रामजन्म की बधाई हो, बधाई हो, बधाई हो!

मानस-अपराध : ८ :

# विषयी पाप करता है, साधक अपराध करता है और सिद्ध भूल करता है

बाप! माँ कौशल्या की भूमि पर छत्तीसगढ के इस मुख्य नगर रायपुर में चल रही स्वान्त: सुखाय रामकथा में आठवें दिन के आरंभ में पुन: एक बार सभी को व्यासपीठ से मेरा प्रणाम। और आज जगद्गुरु श्रीमन् महाप्रभुजी वल्लुभाचार्यजी का प्रागट्य दिन है। प्रागट्य दिन की आप सबको बहुत-बहुत बधाई और जयश्री कृष्ण। उसीकी भूमि में हम बैठे हैं। चंपारण्य निकट है। एक-दो मिनट-

श्री वल्लुभ विठ्ठल गिरधारी।
यमुनाजी की बलिहारी।
दृढ इन चरनन केरो भरोसो।
श्री वल्लभ नख चंद्र छटा बिन
सब जग माही अंधेरो । भरोसो...

दूसरी बात, कल सायंकाल को जो यहां कविसंमेलन हुआ। मैं अपनी बहुत-बहुत प्रसन्नता व्यक्त करता हूं। कविओं ने तो संमेलन को चार चांद लगा दिये। लेकिन मुझे ज्यादा प्रसन्नता इसमें हुई कि छत्तीसगढ़ की जनता को साहित्य में और कविता में इतना रस है।

'रामचरितमानस' में तीन संध्या का वर्णन है। एक लंका की संध्या, एक जनकपुर की संध्या और एक अयोध्या की संध्या। संध्या कैसी होनी चाहिए यह व्यक्ति के हाथ में है। संध्या उसको ही मत समझो कि जब सूरज डूबता है। संध्या का मतलब है उजाला और अंधेरे का मिलन स्थान; उसको कहते है संध्या। 'संध्या' शब्द आता है तो हम सोचते हैं, सायंकाल को सूरज डूबता है, चलो संध्या हो गई। जहां दिन का प्रकाश खतम होने पर और रात्रि का अंधेरा प्रकाश स्वागत कर रहा है और उसकी पतली-सी रेखा उसको कहते हैं संध्या। उजाला और अंधेरे का जहां भी बारीक मिलन होता है वो हरेक काल संध्या है। दुपहर-सुबह से बारह बजे तक उजाले का साम्राज्य होता है। बारह बजे के बाद फिर प्रकाश कम होने लगता है। इसलिए दोपहर के इस संधिकाल को भी संध्या कहते हैं। हमारी वैदिक परंपरा में प्रात:संध्या, मध्याह्न संध्या और सायं संध्या है। विचार आया है तो कह दूं कि 'मानस' में भी तीन प्रकार की संध्या है। हम और आप इन संध्या को किस रूप में लेना चाहते हैं, उसी पर हमारी कक्षा निर्मित होती है कि हम कहां है, हम कैसे हैं?

चलो, लंका की संध्या से शुरू करें। क्या संध्या है! एक तो संध्याकाल आपको लंका का मिलेगा कि रावण नृत्यशाला में जाता है अखाडे में जहां मनोरंजन होगा, अप्सराएं आएगी, गंधर्व आएंगे। इधर एक भगवान राम की संध्या है। सुग्रीव की गोद में ठाकुर का मस्तक है और चंद्र उदित हो रहा है। वो भी संधिबेला है। एक रजोगुणी संध्या है, जहां नृत्य और मेहफ़िल जमी है। सुर, गंधर्व, किन्नर सब आ गये हैं। अप्सराएं नर्तन करने लगी है। रावण मंदोदरी के साथ स्वर्ण जुले पर जुल रहा है, क्या मेहफ़िल जमी है! तो मेरी व्यासपीठ कहना चाहेगी कि लंका की संध्या रजोगुणी संध्या है। इधर भगवान राम की संध्या सतोगुणी संध्या है। कितनी मीठी चर्चा कर रहे हैं! रजोगुणी संध्या है जहां मनोरंजन है। सतोगुणी संध्या है, जहां मेरा ठाकुर रिलेक्स लेटे हैं, मित्रों से चर्चा कर रहे हैं। बीच में है एक तमोगुणी संध्या।

संध्या समय जानि दससीसा।
भवन चलेहु निरखत भुज बीसा।।

दस मस्तकवाला आदमी, बीस भुजावाला आदमी; संध्या के समय दशानन अपने भवन में जा रहा है। लेकिन क्या कर रहा है? अपनी बीस भुजाओं को देख रहा है। मानों कह रहा है, मेरी यह बीस भुजा में सभी का सूरज डूब जाएगा। कोई नहीं बचेगा। यह अहंकार का गौरव लेकर जा रहा है। उसीको मेरी व्यासपीठ तमोगुणी संध्या कहती है। मेरे भाई-बहन, संध्या के समय अपनी क्षमता हो तो भी क्षमता का गौरव मत करना। संध्या के समय जो गर्व करता है उसके लिए अच्छी सुबह मुश्किल हो जाएगी; अच्छा सवेरा दुर्लभ हो जाएगा। संध्या हम सबको कहती है कि तेरा बल भी अस्त हो जाएगा। तेरी बुद्धि भी अस्त हो जाएगी। तेरा धन, तेरी प्रतिष्ठा भी अस्ताचल में चली जाएगी। इसलिए दो हाथ जोड़। बीस भुजाएं फैला मत। तुम्हारी संध्या पर तुम्हारा सूर्योदय डिपेन्ड है। हम संध्या कैसे बिताते हैं उस पर भोर कैसी होगी इसका आधार है। प्लीज़, संध्या के समय अपने धन, बुद्धि, प्रतिष्ठा, बल का, कुल का गर्व मत करना। संध्या का समय है हाथ जोड़ने का, मस्तक झुकाने का।

यार! आज कथा जमी और कल जानेका है! लेकिन जल्दी आएंगे बक्सर। बक्सर की कथा हो तब मैं मंत्रीसाहब को कहना चाहूंगा कि आप ही व्यवस्था संभालना सरकार की ओर से। और कथा भी ऐसी जगह रखना जहां मैं अपने आदिवासी भाईयों के पास सरलता से जा सकूं। ईर्द-गिर्द में कहीं मेरी कुटिया बना देना। मैं वहां रहूंगा और हो सके तो मैं गंगाजल दूंगा अपने आदिवासी भाईयों को। रात को मेरी सब्जी और रोटी बना दे। कल मैं गाडी में भी कह रहा था कि यदि परमात्मा ने जो अवसर दिया; यहां जो विस्तार है मैं इनको भी मिलने जाऊंगा। यदि संभव हुआ तो; यदि तकलीफ़ न हो तो। जिसको तकलीफ़ लगे वो मेरे साथ न आए। हम तो अब कफ़न बांधकर घूम रहे हैं! आतंकवादी को किसीका डर नहीं तो आत्मवादी को किसका डर है? न मेरे साथ सिक्यूरिटी चले। आदमी को अपनी अहिंसा की, श्रद्धा की कसौटी करनी चाहिए।

एक बात समझ लो, जिसने अहिंसा को पूर्णरूप में अपने जीवन में स्थापित किया हो तो सामनेवाला हिंसा नहीं कर पाएगा। एक अपवाद है नियति। नियति अपवाद है। गांधी की अहिंसा में कोई कसर नहीं थी। एक आदमी निकट आ गया रिवोल्वर लेकर उसको अहिंसा की असर क्यों नहीं हुई? गोडसे आ गया था। गांधी की अहिंसा में कोई कमी नहीं थी। वहां गांधी की हत्या की नियति थी। बुद्धपुरुष नियति को बहुत सन्मान देता है। जिसस क्या हिंसक थे? इसको वधस्तंभ पर लटका दिया! यह इसकी नियति है। बुद्धपुरुष नियति को बहुत आवकार देता है।

मुझे यह विचार आ रहा है, जब कथा होगी तब मैं चाहूंगा कि मैं मिलूं। नियति हो तो हो। यदि वो चाहे मिलना जो हमारे भाई है, मेरे देश के लोग है। हम पृथ्वी के संतान है। जो हुआ उस पृथक्करण में मैं जाना नहीं चाहता। लेकिन यह व्यासगादी है, तुम आओ। मुझे बुलाओ तो मैं आऊं। बिना सिक्यूरिटी आऊं। मैं उसको कहूंगा कि आप चाय बनाकर पिलाओ ना साधु को! एक घूंट तू भी पी, एक घूंट मैं भी पीऊं। मेरी कथा कोई धर्मशाला नहीं है, प्रयोगशाला है।

तो बाप! एक संध्या है लंका की। एक संध्या है अयोध्या की। जैसे भगवान राम का जन्म हुआ वो मध्याह्न संध्या तो थी। बारह बजे का प्रकाश। कल हम सबने अयोध्या की मध्याह्न संध्या की। 'अवध में आनंद भयो, जय रघुवर लाल की।' गोस्वामीजी कविता में संध्या का उल्लेख करते हैं।

देखि मानु मनु सकुचानी।
तदपि बनी संध्या अनुमानी।

जब भगवान राम का जन्म हुआ तब गोस्वामीजी कहते हैं, क्या हुआ? अबील-गुलाल उड़ रहे हैं। मध्याह्न का समय है। दोपहर को रात्रि मिलने को आई। वो समझती है कि दिन में मैं जा पाऊंगी। साहस किया। आ तो गई अयोध्या में रात्रि भगवान राम का दर्शन करने दोपहर बारह बजे लेकिन सूर्य को देखा अररर! यह तो मध्याह्न का सूरज! मैं कहां आ पड़ी? भागी नहीं। कम से कम रात के रूप में न रही। 'तदपि बनी संध्या अनुमानी।' अयोध्या की संध्या है राम का प्रागट्य। लंका की संध्या है अहंकार का प्रागट्य। मैं भुजावाला, मैं प्रतापी! तो यह अयोध्या की संध्या है। जनकपुर में वो दूसरे दिन की सायंकाल। पुष्पवाटिका का प्रसंग पूरा हुआ। सायंकाल को गुरु की आज्ञा पाकर के राम-लक्ष्मण संध्या करने के लिए पधारे हैं। संध्या का नियम होता है। सुबह की संध्या पूर्वाभिमुख होती है। सायंकाल की संध्या उधर देखकर करनी पड़ती है जहां

अस्ताचल को सूरज जाता है। मेरे भगवान को भान नहीं रहा। सायंकाल की संध्या पूर्व दिशा की ओर कर रहे हैं! लक्ष्मणजी ने कहा, यह शास्त्रविरुद्ध है। राम शास्त्र विरुद्ध करते नहीं। सुबह-सुबह भगवान वाटिका में गए और जानकी का दर्शन किया तबसे भगवान बस, जानकी-जानकी! दोपहर का खाना खाया तो अंदर जानकी-जानकी, सीयाजु-सीयाजु! सत्संग चला तो बाबा वेदांत की चर्चा करे वहां सीयाजु-सीयाजु सायंकाल भी। भक्तिमय भगवान। पूर्व दिशा में भगवान सायंकाल की संध्या कर रहे हैं और प्राची दिशा में अभी-अभी चन्द्र निकला है। भगवान राम को चन्द्रमाँ में चांद नहीं दिखा, जानकी का चेहरा दिखा। आह्लादिनी शक्ति का चेहरा दिख रहे हैं ठाकुर। भगवान प्रसन्न हुए। दूसरी ही क्षण भगवान ने सोचा कि नहीं, नहीं, नहीं। चन्द्र के साथ जानकी के चेहरे की तुलना नहीं कर सकते। यह तो बढ़ता है, घटता है। समय पाने पर राहु ग्रस लेता है। गुरु अपराध का कलंक है। भगवान कहते हैं, जानकी का मुख कहां और चन्द्र, तू कहां? तू तो रंक है बिलकुल। बिलकुल फीका लगता है। यह है जनकपुर की भक्तिमय संध्या।

एक वस्तु ओर। राम और रावण गुरु भाई है। दोनों का गुरु महादेव है। दोनों सीता के चहेरे का ही ध्यान करते हैं। राम यहां। लंका के युद्ध में रावण को देखो। आज राम की संध्या सीयामय है। लक्ष्मणजी को यह पता है। और लक्ष्मणजी को भी पता न चले ऐसे थोड़े दूर मेरा तुलसी खड़ा है। इससे भी थोड़ा दूर मोरारिबापू खड़ा है। तेरे ही रंगमंच के खिलौने हैं! चाहे कैसे भी पात्र बसा लेंगे। राम सीया का ध्यान कर रहे हैं। जब भी भगवान किसी का ध्यान करते हैं तो जानकी का ध्यान करते हैं बस। हम जब ध्यान करते हैं तो राम का ध्यान करते हैं। शुरूआत कहां से हुई थी ध्यान की? पुष्पवाटिका में परम प्रेमरूपी कोमल शाही से भगवान ने अपनी चित्त की दीवार पर जानकी का चित्र अंकित किया था। किसका ध्यान करता है मेरा राघव? सीयाजु का। हरेक पुरुष को चाहिए वो अपनी सीता का ध्यान करे; अपनी पत्नी का ध्यान करे। हर एक नारी को चाहिए वो अपने ठाकुर का ध्यान करे। सीताजी ने त्रिजटा को पूछा, हे मातु, हे विपत्तिसंगिनी, मुझे बता, रावण मरता क्यों नहीं? मैं बहुत दु:खी हूं। मैं मर जाऊंगी। मैं प्रतीक्षा में हूं। जिसने कुंभकर्ण को मारा, मेरा राघव उस रावण को एक मिनट में मार देगा। मरेगा नहीं? त्रिजटा ने कहा, मरेगा। कब मरेगा? रावण तुम्हारा ध्यान छोड़ देगा तब मर जाएगा। रावण निरंतर जानकी के ध्यान में डूबा है। जब उसका ध्यान छूट जाएगा, भगवान तीर मारेंगे।

लंका की संध्या है तमोगुणी। अवध की संध्या है सतोगुणी। और मिथिला की संध्या है भक्तिगुणी। जहां न रजोगुण, न तमोगुण, न सतोगुणा। कल की संध्या अच्छी रही। कल की मुझे प्रशंसा व्यक्त करनी थी। कहां पहुंचा लंका मोरारिबापू! वहां से उड़ा तो जनकपुर गया! वहां से उड़ा तो अयोध्या गया! फिर आ गया रायपुर में! आप मेरे हैं, मैं आपका हूं यारों! मैं दिल की बातें करता हूं। मैं कथा नहीं चलाता। कोई मुझे पीछे से चला रहा है। यह इसको (हनुमानजी को) ऐसे ही नहीं रखा पीछे। किसकी ताकत है भगवान की कथा का कथन कर सके?

'मानस-अपराध।' कई भाई-बहनों के अपराध के बारे में प्रश्न है। ''बापू, हमारा सौभाग्य समझो कि भगवद्कृपा समझो कि रामकथा सुनने का सौभाग्य मिलता रहा है। यहां 'अपराध' शब्द का विचार चुना है आपने और रामकथा का अमृत बांटा जा रहा है। हमारी शंकाएं मिटी जाती है। हम कथा में जो प्रसाद लेते हैं उसमें सारा फल यजमान को मिल जाता है। इसलिए हम कथा का तो बहुत आनंद लेते हैं लेकिन आप कहते हैं, भोजन प्रसाद लेना। तो बुज़ुर्ग कहते थे कि फल यजमान को मिल जाता है!' मैंने कहा, आप सब यजमान है। यदि आप प्रसाद ले और पुण्य दूसरों को मिल जाए तो चिंता क्यों हो रही है? परमात्मा के प्रसाद का पुण्य दूसरों को मिल जाए इस भ्रांति से बाहर निकलो। और पुण्य दूसरों को मिल जाए यह तो आनंद की बात है। कभी-कभी लोगों को लगता है कि धर्म का खाना क्यों खाएं? अधर्म का तो बहुत खाते हो! यह नौ दिन है, धर्म का भी खा लो। यह भ्रांति छोड़ो।

'बापू, संसार में अपराध की पहचान कैसे हो? और हम कैसे बचे रहे?' पहले कोई निर्णय न करो। पहले कथा सुनो। कथा सुनने से हममें विवेक प्रगट होगा। विवेक स्वयं पहचान करा देगा कि यह दूध है और यह पानी है। यह कुसंग है, यह सुसंग है। आप सीधा खोजने जाओगे तो नहीं होगा। उसको चाहिए क्षीर-नीर को बिलग करनेवाली हंसवृत्ति। और तुलसी ने कहा, 'बिनु सतसंग बिबेक न होई।' कथा से विवेक मिलेगा। सत्संग से विवेक आएगा। किसका संग करे न करे उसका अभ्यास हमें बता देगा। सीधा नहीं होगा। पहले सुनो। मेरा ऐसा मानना है।

बाप! आखिरी बात। कल हम साधु की बात कर रहे थे। साधु का परिचय क्या? तापस हो वो साधु। फिर ऐसा ही प्रश्न कि 'बापू, साधु पाप कर सकता है?' बड़ा ही प्यारा प्रश्न। जरूरी है उसकी चर्चा हो। देखो, संसार में तीन प्रकार के जीव है- विषयी, साधक और सिद्ध। चौथा प्रकार का जीव तलगाजरडी दृष्टि से जिसे मेरी व्यासपीठ कहती है शुद्ध। हम सब विषयी है, संसारी है। मुझे लगता है, विषयी पाप करता है। क्योंकि विषयी को काम, क्रोध, लोभ यह सब लागू होता है। यह सब रजोगुणवालें तत्त्व हमें पाप में प्रवृत्त करते हैं। विषयी जीव को प्रभुता मिलती है तो अहंकार आ जाता है। विषयी जीव को मनभावन

चीज दिखती है तो काम प्रगट हो जाता है। विषयी व्यक्ति को लगता है, इतना तो मैं इकठ्ठा कर लूं, तो स्वार्थवश लोभी हो जाता है। विषयी लोग उसके विषय में कोई बाधा डाले तो वो क्रोधी बन जाता है। हम सब विषयी है, ध्यान देना। विषयी जो करता है वो पाप है। पाप इसलिए क्योंकि लंबे अरसे तक कुबूल नहीं करता कि मैंने यह भूल की। तत्क्षण कबूल कर ले तो अपराध में परिवर्तित हो जाएगा। पाप नहीं रहेगा।

हम तो अपराध की परंपरा किये जाते हैं! विषयी पाप कर सकता है। न करे तो अच्छा। साधक पाप नहीं कर सकता; अपराध करता है। सिद्ध भूल करता है। कई सिद्धों ने भूलें की है जगत में। तो पाप करता है हमारे जैसे विषयी लोग। साधक लोग अपराध करते हैं। सिद्ध भूल कर जाते हैं। आखिरी समय कोई भूल हो जाती है। अब चौथा तलगाजरडी दृष्टि में जो जीव कहता रहता हूं वो है शुद्ध जीव। जो शुद्ध है उसको तुलसी ने साधु कहा है। विषयी साधु भी हो सकते हैं। रजोगुणी साधु विषयी साधु माने जाते हैं। साधक साधु भी हो सकते हैं। सिद्ध साधु भी हो सकते हैं। लेकिन सर्वोत्तम साधु उसको कहते हैं जो शुद्ध हो। साधु के बारे में निर्णय करना है तो वो शुद्ध होता है। कभी-कभी साधना के आनंद में भजन चुक जाता है। चूक होती है, भूल नहीं। कभी-कभी चूक हो जाती है भजनानंद के कारण। जैसे दक्ष महाराज आए। शंकर भगवान बैठे रहे। ध्यान में थे। उसको पता नहीं, ससुरजी आए और ससुरजी को बुरा लगा!

मैं दो-टूक दुनिया के बाज़ार में कहूंगा कि साधु पाप कर ही नहीं सकता। क्योंकि साधु के पास पाप जा ही नहीं सकता। नितांत असंभव है। काम को यदि पाप कहो; काम पाप नहीं है, लेकिन हमें रोकने के लिए कि हम भ्रष्ट न हो जाए, भोगी न हो जाए इसलिए शास्त्रकारों ने थोड़ा सावचेत किया कि काम, क्रोध, लोभ नरक के पंथ है। जरा मुझे तकलीफ़ है। पंथ जरा बराबर न हो तो रिपेर कर लो। दशांश निकालो, समूह श्रम करो, थोड़ा रास्ता ठीक करो ना! अथवा तो कहा, यह नरक के द्वार है! दरवाजा है, दिखता है तो अंदर प्रवेश मत करो। क्यों प्रवेश करते हो? नरक का पंथ है न चलो। साधु के पास पाप जा ही नहीं सकता। व्यवस्था नहीं है। असंभव है। मेरी बात तो आप श्रद्धा से सुन रहे हैं। आप कहेंगे, बापू ने कहा है ठीक है लेकिन मैं भी जिम्मेवारी समझता हूं।

याद रखो, साधु पाप नहीं कर सकता। साधु प्रेम कर सकता है। साधु सत्य बोलेगा, सत्य सोचेगा, सत्य कबूल करेगा लेकिन अपने सत्य में किसी को सताएगा नहीं। साधु प्रेम करेगा, पाप नहीं। साधु सत्य बोलेगा, सोचेगा और दूसरे का सत्य कबूल करेगा। दूसरे को अपने सत्य से सताएगा नहीं। तीसरा सूत्र है व्यासपीठ का करुणा। साधु करुणा कर सकता है; कभी कठोर नहीं हो सकता। तो मुझे लगता है जिसको हमने साधु के रूप में पाया है वो पाप नहीं कर सकते। पाप की शक्ति नहीं वो उनके पास जा सके। परम शुद्ध अवस्था में जीए वो साधु है।

'रामचरितमानस' की शृंखला में बार-बार बड़ों के सामने उत्तर देना वो अपराध है। यदि बड़ों ने कहा है वो कुछ योग्य न हो तो प्लीज़ मेरे भाई-बहन, मैं आपको रिक्वेस्ट करूं, उसी समय जवाब न दो। यह अपराध है। समय जाने दो। दशरथजी के अवसान के बाद अयोध्या में जो एक सभा हुई है। वशिष्ठजी कहते हैं, भरत को राज दो। ऐसे समय में जब भरत उत्तर देने के लिए तैयार हुए तब भरत ने कहा, मैं जानता हूं, आप सब मेरे वरिष्ठ है, मेरी माँ, यह सचिव गण। मैं आप सबको इस सभा में उत्तर दे रहा हूं यह अपराध है। देना है तो समय पकने दो। थोड़ा इंतज़ार करोगे तो आपको अपराध की ग्लानि महसूस ही नहीं करनी पड़ेगी। 'मानस' की कथा साधना सिखाती है। 'मानस' की कथा अध्यात्म की यात्रा में कैसे कदम रखे, हर एक स्टेप सिखा देगी। 'मानस'कार अपराध की शृंखला में बोले-

ऊतरु देउँ छमब अपराधू।
दुखित दोष गुन गनहिं न साधू।।

कागभुशुंडि ने गुरु के सामने बहुत उत्तर-प्रतिउत्तर किया। शाप मिल गया। तो यह भी अपराध। भरत साधु है। अपराध नहीं कर सकता, पाप नहीं कर सकता। कभी चूक हो गई। यह तलगाजरडी दर्शन है। इसकी जिम्मेवारी मेरी है, इसलिए मैं बोल रहा हूं। भगवान करे कोई बीमार न हो लेकिन आप बीमार हो गए तो बीमारी के लिए सब सलाह देंगे। जिसको भक्ति का अनुभव, वो भक्ति की बातें करेगा; ज्ञान का अनुभव, वो ज्ञान की बात करेगा; कर्म की बात करेगा। दूसरे को अनुकूल न भी पड़े, हो सकता है। कुछ समय के लिए भरत पर भी इल्ज़ाम आने लगे थे। इस पर भरत का भी मत होना चाहिए। जो रास्ता मुझे रास आता है वो मैं बताता हूं। ऐसे समय में फिर जिद्द न करो। कह दो, मैं अपराधी हूं। बात खतम!

जद्यपि मैं अनभल अपराधी।
भै मोहि कारन सकल उपाधी।।

अनभल का अर्थ है, मैं ठीक नहीं हूं। मेरे कारण यह सब हुआ है। सत्य भविष्य दिखा देगा। एक साधु जब ऐसा कहे, मैं अपराधी हूं लेकिन दुखित हूं; दुखित का दोष न गिना जाए। तब एक साधु भरत को ऐसा मिला। वो साधु का नाम है महर्षि भरद्वाज। महर्षि भरद्वाज जब तीरथराज प्रयाग पहुंचे और भरतजी जब कहने लगे कि मैं ऐसा हूं, ऐसा हूं, मैं कैसे मुंह दिखाऊं भरद्वाजजी को तब भरद्वाजजी ने कहा-

तहँउँ तुम्हार अलप अपराधू।
कहै सो अधम अयान असाधू।।

आप बिलकुल निर्दोष है। भरतजी, आप सब प्रकार से साधु है। लेकिन उसमें भी आपका कोई छोटा-सा भी अपराध बोले तो समझो वो आदभी अधम है; वो बिलकुल मूढ़ होगा। अयान-अज्ञानी और तीसरा कहा असाधु। असाधु ही बोल सकता है। फिर एक बार 'अयोध्याकांड' में भरत का संदर्भ आता है।

मैं जानऊं निज नाथ सुभाऊ।
अपराधिहु पर कोह न काऊ।।

मैं मेरे नाथ का स्वभाव जानता हूं। उसको अपराधी पर भी कोई क्रोध नहीं आता। ऐसा समझनेवाला साधु होता है। नारद कहते हैं, भक्ति करे वो 'सिद्धो भवति।' नारद तो होना ही चाहिए सिद्ध लेकिन नो बोल पड़ गया! अपराध की बातें चल रही है वो जागृति के लिए है। जानकीजी भी शिकायत के रूप में कहती है-

हा जग एक बीर रघुराया।
केहिं अपराध बिसारेहु दाया।।

एक अपराध बाकी रखूं कल के लिए। एक अपराध कल कहूंगा। लेकिन पाप, अपराध, भूल, चूक, प्लीज़ मोरारिबापू-व्यासपीठ पर इतना अपार प्यार मौजूद है, तो मन पर बोज मत रखना। उसका निवारण हो सकता है। और निवारण है हरिनाम। एक दीपक जलाओ, सो कल्प का अंधेरा मिट सकता है। वैसे एक हरिनाम के चराग से सभी पाप, अपराध, भूल सबकुछ समाप्त। तो डरना मत। वसीम बरेलवी साहब का एक शे'र मैं सुबह को देखता था-

उसने क्या लाज रखी है मेरी गुमराही की।
मैं भटकुं तो भटककर भी उसी तक पहुंचूं।

हमारे जनम-जनम के पाप-अपराध भूल-चूक कुछ भी हो, हरिनाम का चराग जला देता है। पाप और अपराध की फ़िक्र न करे मेरे भाई-बहन! जो राम-राम करके जमुहाते उनके पाप खत्म हो जाते हैं।

अब थोड़ा कथा का क्रम उठाउं। अयोध्या में चारों पुत्रों का जन्म हुआ। चारों का नामकरण हुआ। जो आराम दे वो राम। जो किसी का शोषण न करे, सभी का पोषण करे वो भरत। जिसके सुमिरन से किसीके साथ दुश्मनी न रहे वो शत्रुघ्न और सब लक्षण का धाम है, राम का अनुगामी है वो लक्ष्मण। वशिष्ठजी ने कहा, राजन्, ये तुम्हारे चार पुत्र नहीं है; यह चार वेद है। अल्प काल में वशिष्ठजी के आश्रम में शिक्षा प्राप्त की। एक दिन विश्वामित्र बाबा आये, राजन्, मैं यज्ञ की रक्षा के लिए आया हूं; अनुज सहित राम मुझे दे दे। मेरे देश का ऋषि संपत्ति नहीं मांगता। सम्राटों के पास भी कुछ नहीं मांगता।

संसार में तीन प्रकार के जीव है- विषयी, साधक और सिद्ध। चौथा प्रकार का जीव तलगाजरडी दृष्टि से जिसे मेरी व्यासपीठ कहती है शुद्ध। हम सब विषयी है, संसारी है। मुझे लगता है, विषयी पाप करता है। क्योंकि विषयी को काम, क्रोध, लोभ यह सब लागू होता है। यह सब रजोगुणवालें तत्त्व हमें पाप में प्रवृत्त करते हैं। साधक पाप नहीं कर सकता; अपराध करता है। सिद्ध भूल करता है। कई सिद्धों ने भूलें की है जगत में। तो पाप करता है हमारे जैसे विषयी लोग। साधक लोग अपराध करते हैं। सिद्ध भूल कर जाते हैं।

मांगेगा तो गृहस्थियों के पास संतति मांगेगा। राम-लक्ष्मण को लेकर बाबा निकले और रास्ते में ताड़का को निर्वाण दिया। विश्वामित्र के आश्रम बक्सर पहुंचे। दूसरे दिन दोनों भाई यज्ञरक्षा के लिए खड़े रहे। मारीच को सत जोजन फेंक दिया ठाकुर ने और सुबाहु को अग्नि के बाण से निर्वाण दे दिया। कुछ दिन रहे। विश्वामित्र ने प्रस्ताव रखे। राघव, आप यज्ञयात्रा में निकले हैं; अभी दो यज्ञ बाकी है। एक अहल्या का यज्ञ बाकी है। दूसरा जनकपुर में धनुषयज्ञ बाकी है। धनुषयज्ञ की बात सुनते ही हर्षित होकर राम-लक्ष्मण विश्वामित्र के साथ पदयात्रा करते हैं। गौतमऋषि का आश्रम आया और भगवान ने अहल्या का उद्धार किया। अहल्या को समाज में पुन: स्थापित किया।

राम और लक्ष्मण विश्वामित्र के साथ आगे बढ़े। गंगा के किनारे पर आये। विश्वामित्र ने गंगा अवतरण की कथा सुनाई। विश्वामित्र आदि ने स्नान किया। भगवान विश्वामित्र के संग जनकपुर पहुंचे। महाराज जनक स्वागत के लिए आये। राजा जनक ब्रह्मज्ञानी है; नामरूप को मिथ्या समझते हैं और राम को देखकर स्तंभित हो गये! जनकजी विश्वामित्र से पूछते हैं, यह दो राजकुमार कौन है? बाबा, मेरा मन स्वाभाविक वैरागी है। इस बालक को देखकर मेरा ब्रह्मचिंतन छूट गया! यह है कौन? विश्वामित्र खुश हुए। यह राम है। दुनिया में प्राणीमात्र को राम प्रिय लगते हैं। 'सुंदरसदन' में निवास करवाया। दोपहर को विश्राम और भोजन। सायंकाल को नगरदर्शन।

दूसरे दिन पुष्पवाटिका में सीयाराम का मंगलमय मिलन हुआ। जानकीजी अपना दिल दे बैठी। राघव अपना चित्त दे बैठे। भवानी के मंदिर में सीयाजु आये। गौरी की स्तुति करती है। भवानी प्रसन्न हो गई। जानकी को कहा, तुम्हारे मन में जो सांवरा राजकुमार बैठ गया, तुम्हें मिलेगा। माँ का आशीर्वाद मिला। सखियों के संग सुनयना के पास गई। यहां राम-लक्ष्मण पुष्प चुनकर गुरु के पास आये। दूसरे दिन धनुषभंग। एक क्षण में मेरे ठाकुर ने धनुषभंग कर दिया। जानकी ने दूसरी क्षण जयमाला पहना दी। तीसरी क्षण परशुराम बिदा हो गये। चौथी क्षण दूत अयोध्या गये। पांचवीं क्षण बारात जनकपुर आई। एक भी क्षण छोड़ नहीं रहा हूं कथा की! छठ्ठी क्षण मागसर सुद पंचमी आई। सातवीं क्षण राम दुल्हे की सवारी निकली। आठवीं क्षण परिछन हुआ। नववीं क्षण जानकी और राम का हस्तमिलाप हुआ। दसवीं क्षण में ओर तीनों भाईयों की शादी हुई। ग्यारहवीं क्षण में कन्या की विदाय हुई। बारहवीं क्षण में अयोध्या आये। तेरहवीं क्षण में विश्वामित्र ने विदाय ली। चौदहवीं क्षण में 'बालकांड' पूरा हो गया!

उसके बाद 'अयोध्याकांड' का आरंभ होता है। राम को राज्य मिलनेवाला था। चौदह साल का वनवास हुआ। भगवान चित्रकूट में निवास कर रहे हैं। रामविरह में राजा ने प्राणत्याग किया। भरत आये। पितृक्रिया हुई। सब चित्रकूट गये। जनकराज भी आये। बहुत सभाएं हुई। आखिर में निर्णय हुआ कि भरत लौट जाये। भगवान ने पादुका अर्पण की। भरतजी लौटे। पादुका को राज्य सौंपा। भरतजी नंदीग्राम में साधुवेश पहनकर उदासीन होकर राज्य का संचालन करते हैं। तुलसी ने 'अयोध्याकांड' पूरा किया।

'अरण्यकांड' में भगवान चित्रकूट में स्थलांतर करते हैं। अत्रि के आश्रम में जाते हैं। वहीं से सरभंग, सुतीक्ष्ण आदि को मिलकर अगस्त्य के आश्रम गये। वहीं से मार्गदर्शन पाकर आगे बढ़े। आगे गीधराज जटायु से मिलकर मैत्री करके भगवान गोदावरी के तट पर। पंचवटी में निवास किया। लक्ष्मण को पांच आध्यात्मिक प्रश्नों का उत्तर दिया। उसके बाद शूर्पणखा आई। दंडित हुई। खरदूषण को निर्वाण दिया। यहां शूर्पणखा ने रावण को उकसाया। रावण मारीच को लेकर जानकी का अपहरण कर गया। सीता की खोज कर के जटायु को दिव्य ब्रह्मलोक की गति देकर राम-लक्ष्मण आगे बढ़े। कबंध का उद्धार करके भगवान शबरी के आश्रम आये। शबरी की गति का दिव्य दर्शन करके वो पंपा सरोवर आये। नारद मिले। उसके बाद साधुओं के लक्षणों की चर्चा करते हुए तुलसी ने 'अरण्यकांड' पूरा कर दिया।

'किष्किन्धाकांड' में हनुमानजी-राम का मिलन है। सुग्रीव से मैत्री हुई। बालि को निर्वाण मिला। सुग्रीव को राज, अंगद को युवराज पद मिला। प्रभु ने चातुर्मास प्रवर्षन पर्वत पर किया। सुग्रीव भगवान का काम भूल गया। भगवान ने थोड़ा भय दिखाया। शरण में आया। योजना बनी। तीन दिशाओं में बंदर-भालू जानकी की खोज के लिए निकल पड़े। दक्षिण दिशा में मुख्य टुकडी को भेज दिया। जिसका नायक अंगद है, मार्गदर्शक जामवंत है। भगवान को प्रणाम करके दक्षिण की यात्रा करते हैं। सबसे पीछे हनुमानजी ने प्रणाम किया। कार्य इससे ही होगा, इसलिए प्रभु ने निकट बुलाकर मुद्रिका दी। संदेश दिया।



अभियान शुरू हुआ। स्वयंप्रभा से दर्शन हुआ। संपाति से बातचीत हुई। समुंदर के किनारे पर पहुंचे। लंका में अशोकवन में सीता है। जाए कौन? सब अपने-अपने बल की क्षमता कहने लगे। हनुमानजी चुप बैठे थे। जामवंतजी ने कहा, आप चुप क्यों है? रामकार्य के लिए ही आपका अवतार हुआ है, सुनते ही बाबा पर्वताकार हो गये। हनुमानजी लंका जाने के लिए तैयार होते हैं। फिर 'सुन्दरकांड' शुरू होता है-

जामवंत के बचन सुहाए।
सुनि हनुमंत हृदय अति भाए।।

हनुमानजी बाधाओं को पार करते-करते लंका में पहुंचते हैं। विभीषण की भेंट हुई। हनुमानजी अशोकवाटिका में तरुपल्लव में छुप गए। बीच में रावण आया आदि-आदि कथा। आखिर में हनुमानजी प्रगट होते हैं। जानकीजी ने वरदान दिया। हनुमानजी मधुर फल खाते हैं। राक्षस आते हैं। उसको दंड दिया। अक्षयकुमार का क्षय किया। बंदी बनाकर हनुमानजी को रावण के पास लाया गया। बहुत चर्चा हुई। हनुमानजी की पूंछ जलाने की कोशिश। पूरा नगर जला अनाथ की तरह! हनुमानजी सागर में डूबकी लगाकर माँ के पास आये। चूड़ामणि दिया हनुमान को। माँ को प्रणाम करके हनुमानजी आ गये। मित्रों ने जयघोष किया। प्रभु के पास आये। सीता का संदेश दिया। प्रभु की आंख भर आई। अब विलंब न किया जाये। पूरी सेना को लेकर फिर वो समंदर के तट पर आये। यहां रावण की सभा में विभीषण ने सलाह दी। रावण माना नहीं। विभीषण को निकाल दिया गया। शरण आया। भगवान ने रखा। प्रस्ताव दिया। तीन दिन भगवान ने समुंदर के सामने अनशन किया। समुद्र ने जवाब नहीं दिया तब प्रभु ने थोड़ा बल दिखाया। ब्राह्मण के रूप में समुद्र भगवान की शरण में आया। सेतुबंध का प्रस्ताव रखा गया। स्वीकारा गया। 'सुन्दरकांड' पूरा।

'लंकाकांड' के आरंभ में सेतु की रचना हुई। रामेश्वर भगवान की स्थापना हुई। परमात्मा की सेना सेतुबंध से पार हुई। सुबेल पर्वत पर भगवान ने डेरा डाला। वहां संध्या में आज की कथा शुरू हुई। संध्या समय को जानकर दशशिश अपनी भुजाओं को देख रहा है, वहां आज की कथा विराम ले रही है। आज की संध्या रावण को एन्जोय करने दो। कल ग्यारह बजे रावण को देख लूंगा!

मानस-अपराध : ९ :

# सब से बड़ा अपराध है बिनअपराधी पर अपराध का इल्ज़ाम लगाना

बहुत-से प्रश्न थे लेकिन आज उसमें समय अभाव से भी नहीं जा पाऊंगा। कुछ बातें हैं। उपसंहार के रूप ले लूंगा। पहले तो मेरी प्रसन्नता व्यक्त कर दूं फिर एक बार कि पूरा आयोजन, पूरी व्यवस्था उसके पीछे रहा सेवाभाव और शालीनता, उसकी बड़ी गहरी छाप लेकर आपसे बिदा ले रहा हूं। मेरा इतने सालों का अनुभव है, इतने बड़े प्रेमयज्ञ में किसीसे कोई न कोई चूक तो हो ही जाती है। लेकिन यह आपकी महिमा है कि व्यासपीठ पर अथवा तो मैं आपसे जब मिलता था दो-तीन दिन उसी समय प्रत्यक्ष या परोक्ष इस कथा के किसी भी पहलू के लिए किसी की मेरे पास शिकायत नहीं आई। यह अपने आप में सफल नहीं सुफल आयोजन का परिचय है। हमारे पास स्नेही राजेश गुप्ताजी, आपका परिवार, आपकी पूरी रामकथा आयोजन कमिटी, प्रत्येक कमिटी के प्रभारी और उसके सहयोगी, कितनी आपने सेवा की! लोग चाहते हैं कि हम कथा सुने और सुननी चाहिए। लेकिन जिन्होंने पीछे रहकर नेपथ्य में रहकर नौ दिन इस कार्य में जो सेवा अर्पण की है उसका त्याग, उसका समर्पण बहुत ऊंचा है। एक सुआयोजन आपका रहा। मैं सबको बहुत-बहुत साधुवाद देता हूं। यहां के मुख्यमंत्री श्री रमणसिंहजी, आपके सभी मंत्री परिषद, यहां की सभी सामाजिक संस्थाएं, यहां के सभी विभाग के लोग; किसी पक्ष या पार्टियों से मेरा कोई लेना-देना नहीं, लेकिन सभी धार्मिक लोग, सामाजिक लोग सब लोगों ने पूरे छत्तीसगढ ने अपनी रामकथा समझी। जैसे लोकशाही का एक सूत्र बनाया जाता था एक समय कि Government by the people, of the people, for the people. मैं कभी-कभी आयोजन के लिए कहता हूं; रायपुर का आयोजन by the people, for the people, of the people. यह बहुत मिशाल आपने व्यक्त किया है। तो सरकार से लेकर आखिरी आदिवासी तक मैं सबको धन्यवाद देता हूं।

मुझे पूछा गया कि बापू, कल आप कह रहे थे बक्सर के कथा समय उन भाईयों को कोई कष्ट न हो, मिलना चाहे तो मैं मिलूंगा, तो आज मेरे पास चिठ्ठी आई है बापू, यहां सालों से प्रयास हो रहा है लेकिन कुछ नहीं हो पा रहा है। क्या आपका यह मनोरथ बहुत सराहनीय है? क्या आप सभी को सुधार पाएंगे? साहब! मेरा मिशन आप समझ ही नहीं पाए! मेरा मिशन तो सबका स्वीकार करने का है। मेरा सालों से काम रहा स्वीकारने का। यहां जो सुधारने गये वो कौन सुधार पाएं? कभी-कभी तो खुद बिगड़कर लौटे! कल मैंने पारसा जयपुरी का शे'र सुनाया था; फिर दोहरा रहा हूं-

उलझनों में खूद ऊलझ कर रह गए वो बदनसीब,
जो तेरी ऊलझी हुई झुल्फों को सुलझाने गए।

उलझी हुई समस्या को सुलझाने गये वो खुद उलझ गये! मेरा काम यह नहीं है। मेरा काम स्वीकारना है। क्योंकि मेरे राम ने सबको स्वीकारा; अहल्या को स्वीकारा, केवटों को स्वीकारा, शबरी को स्वीकारा, रींछ-बंदर-भालूओं को स्वीकारा, पतीतों को स्वीकारा, पंडितों को स्वीकारा, वृक्ष-जलाशय-सागर-पृथ्वी-पत्थरों को स्वीकारा। यह शास्त्र स्वीकारने का शास्त्र है। तो नब्बे प्रतिशत मैंने हां बोली है। परमात्मा करे, यह संयोग बना दे। मैं फिर आऊं, हम फिर मिले और फिर ऐसा संयोग बने। मेरा सुधारने का मिशन है ही नहीं। मेरा स्वीकारने का मिशन है। मैं बात करूंगा, चाय पीऊंगा यदि यह सब हुआ तो। हमारे धर्म की मूल धारा, हमारे राष्ट्र की मूल धारा, हमारे सत्य-प्रम-करुणा की मूल धारा में मेरे भाई-बहन बहे ऐसी बातचीत करने मैं जाऊंगा। सुधारने के लिए नहीं, स्वीकारने के लिए। हम लोग धर्मस्थानों से स्वीकार नहीं पाए



इसलिए दूर दरज्जो के अन्य धर्मलोगों धर्मांतरित कर रहे हैं! इसमें हमारा कसूर है; हम लोग नहीं पहुंचे! स्वीकार करो। गुजराती में शे'र है। कवि है राजेन्द्र शुक्ल-

निषेध कोईनो नहीं, विदाय कोईने नहीं,
हुं शुद्ध आवकार छुं, हुं सर्वनो समास छुं।

तो बाप! सुधारने का मैंने कोई ठेका थोड़ा लिया है? यदि अवसर मिला तो जाऊंगा। यहां आदिवासी विस्तार में कई भाई-बहन कथाएं कहते हैं। तालीम दी जाती है। 'मानस' का पाठ करते हैं। 'सुन्दरकांड' का पाठ करते हैं। एक कमिटी मुझे मिली। कहे बापू, हम गांव-गांव जाकर 'रामायण' का पाठ करते हैं। इस भूमि में बहुत काम हुआ है। इस भूमि के बहुत लोगों ने रामकथा पर लिखा है। पुस्तकें लिखी है, कथाएं गाई है। समृद्ध भूमि है। यदि अवसर मिला तो जाउंगा। मालिक ने चाहा तो फिर आएंगे। नव दिन मैं आपके सामने मुखर हुआ। मैं बशीर बद्र की चार पंक्तियां कहकर कथा में आगे बढ़ूं-

सितारों को आंखों में महफूज रखना।
बहुत दूर तक रात ही रात होगी।
मुसाफ़िर है हम भी मुसाफ़िर हो तुम भी,
किसी मोड पर फिर मुलाकात होगी।

कुछ प्रश्न हैं। बातें कहकर आगे बढ़ूं। ''रामनाम को मंत्र और नाम दोनों की उपाधि दी गई है और कहा जाता है कि मंत्र बिना गुरु फलित नहीं होता। तो क्या रामनाम और मंत्र के लिए दीक्षा अनिवार्य है? और बिना दीक्षा क्या रामनाम जपने से प्रभाव पड़ता है?'' मंत्र कोई गुरु से लिया जाए ऐसी एक परंपरा है। नामदान की महिमा है पंजाब वगेरे में। किसी से लिया जाए। लेकिन आज सवाल क्या है? गुरु मिले न मिले। मिले तो हम ठीक से पहचान न पाए। या तो हम पात्र न हो। मैं आपसे कहूं, राम नाम भी है, मंत्र भी है। उसके लिए किसीसे दीक्षित करना होता है। 'रामचरितमानस' स्वयं सद्गुरु है और उसीमें रामनाम है। आप 'रामचरितमानस' ग्रंथ को रखकर उस पर एक कागज पर राम लिखकर, माला रखकर उसीसे रामनाम जपने की शुरूआत करो। कोई मिल जाए ऐसा बुद्धपुरुष तो बात ओर है। बुद्धपुरुष का तो हरेक शब्द मंत्र हो जाता है। उसमें कोई पर्टिक्यूलर मंत्र की जरूरत नहीं। जो बोला वो मंत्र हो जाता है।

आइए, भरत की चित्रकूट की यात्रा है। भरत का प्रेम देखकर देवराज इन्द्र को चिंता हो रही है कि यह भरत राम को मिलेगा तो अपनी बनी बात बिगड़ जाएगी। इसलिए इन्द्र आदि बृहस्पति उसके गुरु के चरण में जाकर कहने लगे कि महाराज, कुछ करो, यह बात न हो सके। ये मिलेंगे तो बात बिगड़ जाएगी। स्वार्थी लोगों को अपनी ही बात दिखती है। सुर स्वार्थी है। तो जब इन्द्र गिड़ागिड़ाकर कहने लगा, कुछ करो। यह भेंट न हो। तब देवगुरु बृहस्पति ने कहा-

सुनु सुरेस रघुनाथ सुभाऊ।

हे इन्द्र, रघुनाथ का स्वभाव है, वो खुद अपने अपराध से कभी दु:खी नहीं होते। लेकिन उसके भक्त का कोई अपराध करता है तो राम की रोषाग्नि में जलकर वो भस्म हो जाता है।

जाइ जोग जग छेम बिनु तुलसी के हित राखि।
बिनु अपराध भृगुपति नहुष बेनु बृकासुर साखि।।
- दोहावली रामायण

'जाइ जोग जग छेम बिनु।' वो मुलाकात कौन काम की जो हमारा वर्धन न करे? हमारा पोषण न करे? जिसको हम संस्कृत में योगक्षेम कहते हैं। 'योगक्षेम वहाम्यहम्।'- भगवद्गीता। योग मानी मिलना। क्षेम मानी मुलाकात को बरकरार रखना। वृद्धि हो, पोषण हो, सुरक्षा हो। योगक्षेम साथ में। तुलसी 'दोहावली रामायण' में कहते हैं, यह मुलाकात का कोई अर्थ नहीं है, जिसमें प्रेम गति करे ना; जो आगे बढ़े ना; उसकी सुरक्षा न हो। जो पालित न हो उस योग का क्या अर्थ है? चार लोग साक्षी है, जो बिनअपराधी को मुश्किल में डालने गये। तो भगवान जिसको प्रेम करते थे, योगक्षेम की रक्षा करते थे, जो चारों की बदनामी हुई। गोस्वामीजी कहते हैं भृगुपति, नहुष, बेनु, बकासुर उसके दृष्टांत हैं।

सबसे बड़ा अपराध आज मैं कहकर जाऊं। सबसे बड़ा अपराध है बिनअपराधी पर अपराध का इल्ज़ाम लगाना। बस, इतना गांठ बांधकर जाना। यह

जागृति के लिए बोल रहा हूं। जाते-जाते मैं डराना नहीं चाहता। मेरी पूरी कोशिश रही कि आप स्वस्थ रहे। लेकिन बिनअपराधी पर अपराध का इल्ज़ाम डालना इससे बड़ा कोई अपराध नहीं। उसकी रक्षा तो रघुपति जिसका हित चाहते हैं वो ही कर सकता है। परमात्मा जिससे प्यार करता है; परमात्मा जिसकी सुरक्षा करता है। ऐसे बिनअपराधी पर अपराध का इल्ज़ाम लगाये। और जिन्होंने लगाया यह चार लोग उसके साक्षी है।

भृगुपति ने कई बिनअपराधी राजाओं की भी हिंसा की। क्योंकि ईक्कीस बार पृथ्वी नक्षत्र की इसमें तो दोषी-निर्दोषी सब आ गये होंगे। सामूहिक संहार। साधु राजा भी कई मारे गये होंगे। इतना क्रोध भृगुपति का। वो कहते हैं, मैं यही यज्ञ करता हूं इसमें मैंने कई आहुतियां दी। सबको खतम कर दिया। जब कईयों को ऐसा किया तब राम ने बिनअपराधियों को बचा लिया। इसीलिए भगवान राम की क्षमा मांगकर उसको तप करने के लिए निकलना पड़ा।

नहुष; इन्द्रपद मिला। यज्ञ करता है उसको इन्द्रपद मिलता है तो इन्द्र की गादी मिलती है। फिर वो ब्राह्मणों को ऋषिमुनियों को कहने लगा कि मेरी पालखी वहन करो। ऋषिमुनियों से पालखी उठवाई और उसका स्वर्ग से पतन हुआ। वेणु राजा ने भी यही काम किया। और बकासुर जिसको भस्मासुर भी कहते हैं। भगवान शंकर ने वरदान दिया। और शंकर को ही जलाने गया। तो मेरे भाई-बहन, हम इतना ही समझें। बिनअपराधी पर अपराध का इल्ज़ाम न लगाये।

आज 'मानस-अपराध' की शृंखला में मैंने एक चौपाई जो बचाई रखी थी वो आपको कह दूं फिर कथा को विराम की ओर ले चलूं। कल तक भगवान राम लंका पहुंचे। संध्या का समय था। भगवान चंद्रोदय देख रहे हैं। उसके बाद भगवान राम रावण का महारसभंग करते हैं। उसके बाद दूसरे दिन सुबह भगवान राम अंगद को राजदूत के रूप में संधि का प्रस्ताव लेकर लंका रावण की सभा में भेजते हैं। अंगद है राजदूत, हनुमान है रामदूत। दोनों में फ़र्क है। हनुमानजी स्वयं कहते हैं, 'रामदूत मैं मातु जानकी।' 'हनुमानचालीसा' में तुलसी कहते हैं, 'रामदूत अतुलित बलधामा। अंजनिपुत्र पवनसुत नामा।' अंगद है राजदूत। किष्किन्धा का वो युवराज है। उसको भेजते हैं। अगंद पूछता है रामजी को किस मुद्दे पर बात करते? राम कहते हैं, दो। क्या?

काज हमार तासु हित होई।

मेरा अवतारकार्य पूरा हो और रावण का परमकल्याण हो। इसके अलावा कोई बात नहीं करनी। यह प्रभु का विचार है और अंगद रावण के दरबार में राजदूत के रूप में जाता है। तब तुलसी लिखते हैं-

जथा मत गज जुठा मह पंचातत जाही।

हजारों हाथी मदवाले हो। और इतने मद जरते हाथी उसमें जैसे कोई युवान शेर निर्भीकता से प्रवेश करे ऐसे रावण की सभा में वालि का बेटा और भगवान राम के सेवक के रूप में प्रवेश करता है-

राम प्रताप सुमिरि मन बैठे सभा सिरु नाई।

राम के प्रताप और प्रभाव को मन में सुमिरन करके। इतने मदमस्त हाथियों के बीच में निर्भीक है राम प्रताप को जाननेवाला। लेकिन विनम्रता देखो। इतना बड़ा सामर्थ्य होते हुए सभा में गये तो अंगद बैठा तो सबको प्रणाम करके बैठा। सभा में बैठ गया। रावण ने प्रश्न पूछा बंदर को देखकर-

कह दसकंध कवन के बंदर।
मैं रघुवीर दूत दसकंधर।।

देखो, अंगद का विनय बरकरार है। लेकिन रावण विवेक चुक गया! राजदूत के रूप में आया है यह आदमी। खुद रावण ने उसका प्रभाव देखा कि इतने राक्षसों के बीच में वो निर्भीकता से आया है। पूरी सभा तो खड़ी हो गई थी अंगद को देखकर; एक रावण खड़ा नहीं हुआ था। रावण अविवेक दिखा रहा है। रावण ने कहा, अय बंदर, तू कहां का बंदर है? अब दूत को बंदर कहना! लेकिन सब विवेक चुक गया! अंगद को लगा, इसको तो ऐसा ही जवाब देना चाहिए। उसने आधी पंक्ति में जवाब दे दिया-

मैं रघुबीर दूत दसकंधर।

ले! तू पूछ रहा है कि मैं कौन बंदर हूं? तो सुन दसकंधर। मैं बंदर हूं तो तू क्या है? कम से कम बंदर को तो एक मुख होता है, तुझे तो दस है। मैं तो कम से कम बंदर हूं। तू काहे का सुंदर है? सुंदर तो एक चेहरेवाला होता है। दस चेहरेवाला कभी सुंदर होता है?

हे बंदर तू कौन है? मैं रघुबीर का दूत हूं। मेरे बाप के साथ आपकी मित्रता थी। मेरे पिता और तुम दोनों मित्र थे। इसलिए तेरे कल्याण के लिए मैं आया हूं; मेरे बाप से तेरी मित्रता थी। रावण ने कहा, मेरी मित्रता बंदरो के साथ? कौन तेरा बाप? अंगद ने कहा, मेरे बाप की बात बाद में कर। मैंने तुम्हें संकेत कर दिया कि मेरे पिता और तुम्हारी दोस्ती थी। तू कुबूल करे न करे यह तेरी मर्जी! क्योंकि आदमी जब बहुत बड़ा हो जाता है, नाम हो जाता है तो पुरानी मैत्री भूल जाते है यह लेकिन तेरे बाप के बारे में बताऊं?

उत्तम कुल पुलस्ति कर नाती।
शिव बिरंची पूजेहु बह भाँति।।

तेरा उत्तम कुल। तेरी पुलस्ति से नाती है। देखो, किसीकी आलोचना करो तब भी उसमें जो अच्छा है उसको अनदेखा न करो। तेरे बारे में मैंने सुना है कि तुने शंकर को बहुत भजा है। तूने बड़े-बड़े बरदान पाये हैं ब्रह्मा-शिव से। और तुने सब बड़े-बड़े काम पूरे किये हैं। लोकपालकों को भी तुने जीत लिया है। तुने क्या नहीं किया? अब सुन।

नृप अभिमान मोह बस किंबा।
हरि आनिहु सीता जगदंबा।।

दो कारण से अपराध तूने किया है। देखो, तुलसी क्या मनोविज्ञान पेश करते हैं? वो आदमी दो कारण से भूल जाता है। एक तो मोह के कारण, दूसरा अभिमान के कारण। तेरा जानकी के प्रति मोह और तुने यह है कौन वो जाना नहीं। और तुने माँ सीता का अपहरण किया। तू है बड़ा। पूजक है, साधक है। लेकिन तुने मोह और वश के कारण सीता जो जगदंबा है उसका अपहरण किया है। अब वो बात आती है।

अब सुभ कहा सुनहु तुम्ह मोरा।
सब अपराध छमिहि प्रभु तोरा।।

हे रावण! अब मेरी शुभ कथा, कल्याणकारी कथा सुन। भगवान तुम्हारे सब अपराध क्षमा कर देंगे। मेरी शुभ कथा सुन। मानो तुलसी हमसे कहते हैं। तेरे से चाहे कितने भी अपराध हो गये हो मेरे श्रोता लेकिन राम की कथा तू सुन। तेरे सभी अपराध राम पूरा कर देंगे। लेकिन पहले ही वाक्य में अंगद को लगा, आदमी सुननेवाला नहीं है! अविवेकी है। मुझे बंदर कहकर बुलाता है। तो अंगद को लगा कभी-कभी राजनीति में तो जैसी बोली हो वैसी बोली बोली जाती है। यह राजदूत है, रामदूत नहीं है। अब क्या कहते हैं? तेरे सब अपराध क्षमा कर देंगे। यह राजनीति की भाषा है।

दसन गहहु तृन कंठ कुठारी।

भगवान तेरे अपराध तभी क्षमा करेंगे। कब? तेरे दांत में तू तिनका ले। और कंठ पे कुहाडी रख। अब रावण को यह कहना! लेकिन कभी-कभी बड़े सत्ताधीशों को बंदर भी लात मार देता है! क्योंकि रामपक्षीय बंदर है। अंगद कहता है, तेरे दांत में तू घास के तिनके ले। अब उसको दस मुख है। दसों में तू तिनके ले। रावण ने राम के दस

तुलसी 'दोहावली रामायण' में कहते हैं, यह मुलाकात का कोई अर्थ नहीं है, जिसमें प्रेम गति करे ना; जो आगे बढ़े ना; उसकी सुरक्षा न हो। चार लोग साक्षी है, जो बिनअपराधी को मुश्किल में डालने गये। गोस्वामीजी कहते हैं भृगुपति, नहुष, बेनु, बकासुर उसके दृष्टांत हैं। सबसे बड़ा अपराध है बिनअपराधी पर अपराध का इल्ज़ाम लगाना। बिनअपराधी पर अपराध का इल्ज़ाम डालना इससे बड़ा कोई अपराध नहीं। उसकी रक्षा तो रघुपति जिसका हित चाहते हैं वो ही कर सकता है। मेरे भाई-बहन, हम इतना ही समझें, बिनअपराधी पर अपराध का इल्ज़ाम न लगाये।

अपराध किये हैं। कुल मिलाकर दस अपराध। दांत में घास लेना और बीस हाथ में से एक हाथ में कुहाडी लेकर तेरी गरदन पर रख। क्यों? इसका मतलब यह है कि तेरा नाश तू स्वयं करने जा रहा है। तेरे कुटुंब-कबीले सभी को साथ में ले और तेरी महाराणी को भी साथ ले। राम की शरण आ। और श्रद्धा से आदर के साथ मेरी माँ जानकी, जनक की बेटी को आगे कर। इस तरह तू जा। भगवान की शरण जा। तेरी आर्तवाणी सुनकर मेरा राघव तुझे माफ़ कर देगा। तुझे क्षमा कर देगा।

तो यह अपराध आखिरी चरण था। उसके बाद तो आप जानते हैं, मंत्रणा विफल हो गई। युद्ध अनिवार्य हुआ। धमासान युद्ध हुआ है लंका के मैदान में। इन्द्रजित ने मूर्छित किया लक्ष्मण को। हनुमानजी संजीवनी लाये। फिर लक्ष्मणजी जागृत हुए। उसके बाद की कथा में कुंभकर्ण को निर्वाणपद प्राप्त हुआ है। फिर इन्द्रजित को निर्वाण दिया गया। एक के बाद एक राक्षस को निर्वाण पद दिया गया। इकत्तीसवां बाण प्रभु ने उठाया। दस मस्तक, बीस भुजा और इकत्तीसवां बाण नाभि के लिए और गोस्वामीजी कहते हैं, राम कहां है? ऐसा जीवन में पहली बार बोला। रावण के चहेरे का तेज भगवान के बदन में समा गया। रावण का निर्वाण होता है और मंदोदरी आती है। रावण की उत्तरक्रिया हुई। असुर का निर्वाण हुआ। श्री हनुमानजी अशोकवाटिका में जाते है। जानकीजी को ले आये और भगवान ने सीता की नहीं, अग्नि की परीक्षा की कि हे अग्निदेव, मैंने मेरी सीता को आपको सोंपी थी। वैसी की वैसी ही लौटा दे। प्रभु और जानकी की छबी देखकर पूरा जगत प्रसन्न हो गया। विमान तैयार हुआ। विमान में अपने खास-खास मित्रों को लेकर प्रभु पुष्पक विमान में बैठे। भगवान राम विमान से जानकी को रणांगण दिखा रहे हैं। ऋषिमुनियों के आश्रम में जाकर विमान जाता प्रयाग आया। शृंगबेरपुर जाता है। हनुमानजी को बीच में से भेज दिया। भरतजी तो विरह में डूबे हैं। यहां भगवान का विमान शृंगबेरपुर आया। केवट आदि आये। भील लोग दौड़े। चौदह साल पहले दिया हुआ वचन निभाने प्रभु आये। 'लंकाकांड' पूरा हुआ।

'उत्तरकांड' में पूरी दुनिया विरह में डूबी। अब एक दिन बाकी। इतने में डूबते हुए को जैसे जहाज मिल जाए वैसे हनुमानजी आ गये। भरत को थाम लिया। हनुमान ने कहा, मैं पवनपुत्र हूं। भरतजी कहे, आपका नाम? बोले, हनुमान मेरा नाम है और रघुपति का किंकर हूं। परमात्मा रावण को निर्वाण देकर लौट रहे हैं। हनुमानजी खबर देकर प्रभु के पास लौट गये। और भगवान का विमान सरजू तट पर ऊतरता है। विमान से ऊतरते प्रभु ने अपनी भूमि को प्रणाम किया। 'रामचरितमानस' है मनुष्य बनाने की फोर्म्यूला। कौशल्या ने ब्रह्म अपने गर्भ से बाहर आकर प्रगट हुए यद्यपि उसके बाद मानव बनाया। जैसे मैंने रामजन्म के समय बाला कौशल्या ने कहा, छोटे हो जाओ। दो हाथ आदि आदि। कौशल्या ने प्रगट हुए चतुर्भुज को मानव बनाया। आज मेरे राम ने पुष्पक से निकले बंदरों को मानव बना दिया। जब विमान से बंदर ऊतरे तो सब मनुष्य होकर नीचे ऊतरे। क्या है रामकथा? मनुष्य बनाने की फोर्म्यूला है। मानव सृजन करने की यह एक प्रक्रिया है। मनोहर शरीर लेकर सब नीचे ऊतरे। राम और भरत जब भेंटे तब तो कोई निर्णय नहीं कर पाया कि दोनों में से किसका वनवास था? सबकी आंखें डबडबाइ है। लक्ष्मण, जानकी सब मिले। भगवान को लगा, मेरी जनता चौदह साल से वियोग में जल रही है। अब मैं व्यक्तिगत भेंट नहीं करूंगा तो उसको तसल्ली नहीं होगी। परमात्मा ने अपना ऐश्वर्य प्रगट किया। जितने लोग थे उतना रूप मेरे राघव ने ले लिया।

कौशल्या के सामने केवल कौशल्या हितकारी प्रगट हुए। चौदह साल के बाद अमित रूप में प्रगटे। विश्वमंगल करने के लिए राघव ने अमित रूप धारण किया। जिसको प्रभु मिले उसको लगा, राम जितना मुझे प्रेम कर रहे है उतना किसीको नहीं कर रहे है। सबकी यह अनुभूति हो गई और उसके बाद वशिष्ठजी अगवानी में सब नगर में गये। राम ने कहा, गुरुदेव, सबसे पहले मुझे मेरी माँ कैकेयी के पास जाना है। यह है रामतत्त्व। भगवान ने जाना कि मेरी माँ लज्जित है। संकोच महेसूस कर रही है। मेरे कारण यह सब हुआ तो प्रभु ने कहा, मैं सबसे पहले कैकेयी के घर जाऊं। माँ कैकेयी का लज्जा निवारण किया कि माँ, संकोच मत कर। सुमित्रा के पास गये। कौशल्या के पास आये तब कोई बोल नहीं पाया! तीनों के सिर पर जटा देखकर कौशल्या की आंखें बरस पड़ी! वशिष्ठजी ने कहा, आज ही राजतिलक कर दे। ब्राह्मण देवता आये। दिव्य सिंहासन मांगा। भगवान राम को वशिष्ठजी ने कहा, आप गादी पर विराजित हो जाइए। पृथ्वी को प्रणाम करके, दिशाओं को प्रणाम करके, आसमान के सूर्य को प्रणाम करके, ऋषिमुनियों और साधु-संतों को प्रणाम करके, माताओं को प्रणाम करके और जनता को प्रणाम करके राम दिव्य सिंहासन आरूढ हुए जानकी सह और वशिष्ठजी ने विश्व को रामराज्य देते हुए राम के भाल में तिलक किया और मेरे गोस्वामीजी ने चौपाई लिखी-

प्रथम तिलक बसिष्ट मुनि कीन्हा।
पुनि सब बिप्रन्ह आयसु दीन्हा।।

माताओं ने आरती ऊतारी। चार वेद नीचे आये ब्राह्मण के रूप में। राजाधिराज भगवान रामभद्र की स्तुति करके वेद पुरुष ब्रह्मभवन गये। उसके बाद गोस्वामीजी कहते हैं, 'रामचरित मानस' के रचयिता अनादि भगवान महादेव स्वयं कैलास में अपने मूल स्वरूप में अयोध्या के राजभवन में पधारे हैं। और भगवान राम के भरे दरबार में शिवजी ने रामजी की स्तुति की। भगवान राम से सदा भक्ति और सत्संग का वरदान मांगकर शिव कैलास गये। भगवान ने अपने साथ आये मित्रगणों को सुंदर निवास देकर ठहराये।

दिव्य रामराज्य का स्थापन हुआ। प्रभु की नरलीला चालु है। समयमर्यादा पूरी हुई। जानकी ने दो पुत्रों को जन्म दिया। वैसे और तीनों भाईयों के घर भी दो-दो पुत्रों के जन्म हुए। 'रामचरितमानस' की कथा में अयोध्या के वारिस का नाम बताकर के तुलसी ने आगे के प्रकरण को बंद कर दिया। तुलसी का इरादा है संवाद की चर्चा करना। सीता का दूसरी बार का त्याग विवाद-अपवाद और दुर्वाद से भरा है। तुलसी एक बार राम-सीता लोकहृदय पर बैठ गये उसको दूसरी बार बिलग करना नहीं चाहते। छ मास बीत गये। मित्रों को बिदा की। वहां रामराज्य की बात पूरी हो जाती है। उसके बाद जो प्रकरण है वो बाबा भुशुंडिजी का चरित्र है। कागभुशुंडिजी का पूरा जीवनचरित्र अद्‌भुत है। आखिर में गरुडजी ने कागभुशुंडिजी को सात प्रश्न कथा सुनाने के बाद पूछे। कागभुशुंडिजी ने उसका उत्तर दिया।

कागभुशुंडिजी ने अपनी कथा को विराम दिया। याज्ञवल्क्य ने प्रयाग के घाट पर कथा को विराम दिया कि नहीं वो स्पष्ट नहीं है। शायद आज भी वो गंगा की तरह निरंतर चल रही है। क्योंकि यह कर्म का घाट है और कर्म होते रहने चाहिए। भगवान महादेव ने कैलास पर पार्वती को कथा सुना रहे थे वहां भवानी के सामने कथा को विराम दिया। कलिपावनातार पूज्यपाद गोस्वामी तुलसी ने अपने मन को सुनाते कथा को विराम देते हुए समग्र शास्त्रों का निचोड़ देते हैं कि हे मेरे भाई-बहन, यह कलियुग है। कोई ओर साधन हम जैसे नहीं कर पाएंगे। तीन काम करना। जप, जोग, यात्रा, ब्रत, दान, पुण्य कर सको तो करो लेकिन कलियुग में हम सब यह नहीं कर पाएंगे।

मेरे भाई-बहन, मैं भी जाते-जाते तुलसी के शब्दो में कहकर जाऊं कि कलियुग में हम ओर कुछ नहीं कर पाएंगे। हम जीव है। हम देहातों में, जंगलों में, छोटी-छोटी बस्ती में बसते हैं। हम व्यस्त है। क्या करें? तुलसी कहते हैं, तीन करो। राम का सुमिरन करो। दूसरा, राम का गायन करो और तीसरा, राम की जहां कथा होती हो उसका श्रवण करो। और आखिरी यह तीन सूत्र को ही तलगाजरडी नज़रो ने तीन सूत्रों के रूप में विश्व के सामने रख दिया-सत्य, प्रेम और करुणा। राम का नाम सत्य है। हम अपनी देहाती बोली में भी कहते हैं, राम का नाम सत्य है। राम का सुमिरन मानी सत्य। राम को गाना मानी प्रेम। क्योंकि प्रेम जो करता है वो गाता है। और राम के गुन को सुनो। सुनना करुणा है। देखो, शास्त्र की करुणा, परमात्मा की करुणा, समय की करुणा यह सबकी करुणा होती है तब हमें रामकथा मिलती है और मिलने के बाद हम उसका श्रवण कर पाते है। तो यह करुणा है। राम का स्मरण सत्य, राम का गायन प्रेम और राम का श्रवण है करुणा। उसीको शास्त्र का निचोड़ सत्य, प्रेम और करुणा मेरी व्यासपीठ कहती है। तो सत्य, प्रेम और करुणा यह तीन ही आख़िरी बात है। मेरे गोस्वामीजी कहते हैं, जिसकी लवलेश कृपा से मेरे जैसा मतिमंद तुलसीदास आज परम विश्राम का अनुभव कर रहा हूं।

तो बाप! शिव ने भवानी के सामने कथा को विराम दिया। याज्ञवल्क्यजी ने विराम दिया कि नहीं वो स्पष्ट नहीं हो पा रहा है। बाबा भुशुंडि ने गरुड के सामने विराम दिया। गोस्वामीजी ने अपने मन को कथा सुनाते हुए विराम दिया। आज नव दिवस के लिए माँ कौशल्या की भूमि छत्तीसगढ़ के मुख्य नगर रायपुर के इस स्टेडियम में रामकथा का गायन चल रहा था 'मानस-अपराध।' उस नव दिवसीय रामकथा को मैं विराम की ओर हूं तब लगता है सब कुछ कह दिया। साथ-साथ यह भी लगता है कि सब कुछ रह गया! मेरा कायम यह अनुभव रहा गुरुकृपा से कि नव दिन में मुझे लगता है कि सब कुछ कह दिया और व्यासपीठ से नीचे ऊतरता हूं तो लगता है सब कुछ रह गया! लेकिन यही तो हरि की कथा की अनंतता का परिचय है।

मेरे युवान भाई-बहन, नव दिन की कथाओं में से कोई सूत्र आपकी आत्मा को अनुकूल पड़ गया हो; कोई बात आपके दिल तक पहुंच गई हो तो यह सूत्र को आप पकड़ रखिएगा। मुझे भरोसा है, कोई चौपाई आपकी आत्मा में स्वीकृत हो जाए तो मैं यकीन दिलाता हूं, जीवन के कोई भी मोड़ में आपको यह काम आएगी। आपको यह दिशा प्रदान करेगी। आपको यह प्रकाश देगी। सद्गुरु भगवान की कृपा से मैंने जो जाना, समझा, संतों से सुना, कुछ पढ़ा, आपसे बातचीत करके जो मैंने पाया सो प्रसाद के रूप में आपके सामने बांटा है। जाते समय आपको हम आशीर्वाद तो क्या दें? आशीर्वाद तो ओलरेडी हम सब पर बरस चुके थे इसलिए तो यह कथा हो सकी। आशीर्वाद की छाया में कथा होती है। शिव की कृपा से तो यह हुआ। फिर भी 'मानस' के निकट बैठा हूं जब तक, हनुमान के चरणों में समस्त छत्तीसगढ़ की जनता के लिए मैं प्रार्थना करूं कि यहां का बहुत विकास हो। विकास के साथ जन-जन को विश्राम भी प्राप्त हो, ऐसी हनुमानजी के चरणों में प्रार्थना करूं। आप सब खुश रहे, ऐसी मेरी शुभकामना।

कथा को विराम की ओर ले चलूं इससे पूर्व इस नवदिवसीय रामकथा, इसका बड़ा सुकृत इकठ्ठा होता है। नव दिवस की रामकथा में जो-जो इसमें निमित्त बने है श्रोता, वक्ता, आयोजक सब उसका सबका सद्भाव का एक बड़ा पुण्य इकठ्ठा हो जाता है। आइए, मैं चाहता हूं मेरी व्यासपीठ नव दिवसीय रामकथा का फल छत्तीसगढ की समग्र जनता को समर्पित कर दें। सबको यह मेरी कथा समर्पित है। कौशल्या की जन्मभूमि के जन-जन को मेरी कथा समर्पित हो। आप इसको कुबूल करें।



# मानस-मुशायरा

*सिर्फ़ हंगामा खड़ा करना मेरा मक्सद नहीं।*
*मेरी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए।*
*–दुष्यंतकुमार*

*सोये कहां थे, आंख ने तकिये भिगोये थे।*
*हम भी किसी की याद में खूब रोये थे।*

●

*सितारों को आंखों में महफ़ूज रखना।*
*बहुत दूर तक रात ही रात होगी।*
*मुसाफ़िर है हम भी मुसाफ़िर हो तुम भी,*
*किसी मोड पर फिर मुलाकात होगी।*
*– बशीर बद्र*

*चरागों के बदले मकां जल रहे हैं।*
*नया है जमाना नई रोशनी है।*
*न हारा है इश्क न दुनिया थकी है।*
*दीया जल रहा है हवा चल रही है।*
*–खुमार बाराबंकवी*

*मेरी आंखों ने देखा है, सुना है मेरे कानों ने।*
*गैरत ये कहती है कि किसीका राज़ क्यों खोलूं?*
*–जमील हापुडी*

*उसने क्या लाज रखी है मेरी गुमराही की।*
*मैं भटकुं तो भटककर भी उसी तक पहुंचूं।*
*–वसीम बरेलवी*

*जिस दीये में हो तेल खैरात का,*
*उस दीये को जलाना नहीं चाहिए।*
*– ज़हूर आलम*

*उलझनों में खूद उलझ कर रह गए वो बदनसीब,*
*जो तेरी ऊलझी हुई झुल्फों को सुलझाने गए।*
*–पारसा जयपुरी*

# क्वचिदन्यतोऽपि

## आदेश या उपदेश न दो, महोब्बत का संदेश दो

'एकता-जश्न' में मोरारिबापू का अवसरोचित उद्‌बोधन

'याद-ए-हुसैन' उत्सव में उपस्थित हम सभी के महोतरम परम अज़ीज़ सब से बुज़ुर्ग मौलाना ज़हीर अब्बास साहब, मैं आपको आदाब करता हूं। लखनऊ से आये हमारे संत जी, औरंगाबाद से आये हमारे मौलाना और मंच पर उपस्थित सभी आदरणीय महानुभाव, आप सभी मेरे भाई-बहन। सब से पहले मैं क्षमाप्रार्थी हूं, किस वजह से ये चूक हुई आयोजन में कि ज़हीर साहब का नाम लिस्ट में नहीं है! आपका नाम शायद लिस्ट में न हो लेकिन हमारी लकीर में है। सालों से आपकी उपस्थिति है। आशीर्वादक छाया आपकी रहती है।

ये ओर बात है कि वो खामोश खड़े रहते हैं,
लेकिन जो बड़े होते हैं वो कायम बड़े ही होते हैं।

आप सभी को सलाम। इस बार अबु तालीब स्मरण में ये पूरा आयोजन है। मैं कहां से शुरू करूं, कहां पूरा करूं, कुछ ख़बर नहीं! सभी वक्ताओं ने बहुत सुंदर ढ़ंग से हमारा मार्गदर्शन किया। सब से पहले बहुत बुज़ुर्ग और अब कुछ समय से बहुत नादुरस्त हमारे कल्बे साहब को मैं महुवा की जमीन से सलाम कर रहा हूं कि आप बहुत जल्दी तंदुरस्त हो जाएं और एकता के मिशन में हम सब को लाभान्वित करें। आप को याद-ए-हुसैन कमेटी ने याद-ए-हुसैन अवोर्ड एनायत करके हम सबने आप की वंदना की। आप नहीं आ सके लेकिन आपके प्रतिनिधि के रूप में आये, मैं आपका स्वागत करता हूं और आपने हमारा ये सलाम कुबूल किया इसलिए हम शुक्रगुज़ार हैं। मैं हर वक्त कहता हूं कि ये सब बहाने हैं आपको यहां बुलाने के। बाकी इक्यावन हजार की राशि कुछ नहीं है। ये जो मोमेंटो या जो शॉल-वॉल, ये हम शॉल ओढ़नेवाले जानते हैं कि ये कितनी कीमत के होते हैं! ये ठीक है सब! एक शे'र है कि-

शायरी तो सिर्फ़ एक बहाना है।
असली मकसद तुझे रिझाना है।

ये सब बहाने हैं। इस बहाने हम सब इकठ्ठे हो और मोहब्बत का पैग़ाम दुनिया के सामने रखे। दूसरे मेरे परम अज़ीज़, मेरे आदरणीय, मुझ पर बहुत मोहब्बत करते हैं, मेहबूब साहब जिसको ये अवोर्ड एनायत किया गया। मैं मेरी प्रसन्नता व्यक्त करता हूं। मेहंदीबापू को बहुत-बहुत मुबारकबाद कि प्रति वर्ष ऐसा कार्यक्रम आयोजित करते हैं और इस बहाने हम सब इकठ्ठे होते हैं। आपने उपनिषद के मंत्रों से और सुंदर वेदों की ऋचाओं से हमें भर दिया। तीन शब्द हैं साहब! एक, 'आदेश।' दूसरा, 'संदेश' और तीसरा 'उपदेश।' तीन में सब तकरीर आती है। आदेश, संदेश और उपदेश। मुझे ऐसा समझ में आ रहा है मौलाना साहब कि आदेश केवल, केवल और केवल पवित्र कुरान ही दे सकता है। आदेश केवल, केवल और केवल भगवान वेद दे सकता है। ओर किसी को अधिकार नहीं। आजकल क्या हुआ है कि संदेश देनेवाले आदेश देने लगे हैं! संदेश देनेवाले उपदेश देने लगे! मुहम्मद साहब कौन थे? संदेशवाहक थे। ये पैग़म्बर है। पैग़ाम देने के लिए आये थे और उसने पूरी ज़िंदगी कभी आदेश नहीं दिया और दुनिया को उपदेश भी नहीं दिया, जो पवित्र कुरान ने आदेश दिया था, उसी का संदेश हम सब को दिया लेकिन बीचवाले जब आदेश देने लगते हैं न तब फ़तवा का साम्राज्य पैदा होता है। तब बहुत कुछ बिगड़ जाता है। हमारी कौन औकात कि हम आदेश दें? कुरान कहे कि ये करो, ये करो, ये करो। हम उपदेश भी क्या दे सकते हैं? इसलिए मुहम्मद पैग़म्बर साहब से सब से बड़ी कोई सीख मिली हो तो ये ये है कि ना उपदेश दो, ना आदेश दो; मोहब्बत का संदेश दो, मोहब्बत का पैगाम दो। इसलिए हमने आपको पैग़म्बर कहा है। लेकिन बीच की जो घटनाएं हैं, वेदों ने आदेश दिया, पंडितों ने संदेश देने के बदले आदेश देना शुरू कर दिया, उपदेश देना शुरू कर दिया! बहुत गड़बड़ पैदा हो गई! जो आदेश था वो ही मार्ग पर यदि हम चलें तो एकता का जश्न मनाने की भी जरूरत नहीं रहती। और बहुत 'एकता' 'एकता' शब्द आता है तब भी मेरे कान बहुत दु:खी होते हैं! हम एक ही हैं। एकता करो इसका मतलब ये है कि हम कहीं बिलग-बिलग हैं। छोड़ो ये सब! लोग कहते हैं कि राम में रहीम देखो। रहीम में राम देखो। रहीम में रहीम को ही देखो। राम में राम को ही देखो। तुम्हारा बड़ा उपकार हो जाएगा। हनुमान में हनुमान देखो। खोड़ियार में खोड़ियार देखो। अल्लाह में अल्लाह देखो। क्या बिगड़ जाता है? लेकिन हम ऐसे उपदेशक बन गए हैं कि ये करो। ऐसा करो, ऐसा करो! मुहम्मद साहब ने बहुत बड़ा काम किया हैं।

हमारे एक मेहर बाबा नामक संत हुए महाराष्ट्र में। उसका एक बहुत सुंदर संदेश था कि पूरी इस्लाम विचारधारा से मैं मुहम्मद पैग़म्बर साहब से यदि कुछ सीखा हूं कि जीवन को ही भजन समझ। जीवन और भजन बिलग नहीं। और पैगम्बर साहब भी बंदगी और ज़िंदगी को एक किये जगत को बता रहे थे कि बंदगी ही ज़िंदगी है, ज़िंदगी ही बंदगी है। लेकिन बीच में बहुत गड़बड़ होती है। मैं जब अपने ढ़ंग से व्याख्या करने लगता हूं, ये तो मैं भाषा नहीं जानता लेकिन कभी-कभी लगता है कि पवित्र कुरान का स्पष्ट भाषांतर संभव है? वेदों का स्पष्ट भाषांतर संभव है? नको। ये तो कोई नूरानी आवाज़ सुनाई दे तो हमें पता लगता है। बाकी ये संभव नहीं है। मैंने हमारे वेदों के पंडितों को पूछा कि आप ये वेद की ऋचाएं बोलते हैं उसका मूल अर्थ बताओ। तो कहते हैं, नहीं; हम पाठ कर रहे हैं। पवित्र कुरान के भी बहुत भाष्य हुए हैं। नहीं हुए हैं, ऐसा नहीं; मैं कुबूल करता हूं लेकिन इस आवाज़ की जो मूल बातें थी ये शायद बीच में, या तो वेद हो या कुरान हो, भाष्यकारों ने कुछ गड़बड़ कर डाली और परिणाम ये हुआ कि शास्त्र शस्त्र बन गया! शास्त्र को शस्त्र बनाने का काम यदि किसी ने किया है तो आदेश और उपदेश देने लगे, संदेश जिसको देना था वो ये सब करने लगे। इसलिए शास्त्र शस्त्र होता जा रहा है। ऐसी स्थिति में महुवा एक मिशाल दे रहा है। अब्दुल कलाम आज़ाद, उसने कुरान का भाष्य किया। कई दातार उसके पास गए कि ये पवित्र कुरान का जो भाष्य है आपने अपने ढ़ंग से जो किया है वो किसको अर्पण करोगे? वालिद को? अपने किसी धर्मगुरु को? किसको? बोले, कोई कुछ भी कहे, मैं किसीको अर्पण करनेवाला नहीं। पर जरूरत तो थी। अरबस्तान में एक फ़कीर ने सुना कि हिंदुस्तान में किसी एक सख्श ने कुरान-ए-शरीफ़ का जैसा होना चाहिए ऐसा भाष्य किया है। बाकी तो कुरान को 'नेति नेति' ही कहना पड़ता है, ऐसा ही है। कोई ऐसा तो कह ही नहीं सकता। फिर भी पूरी कोशिश की सत्य के निकट रहने की और अरबस्तान से ये आदमी चला और कलाम साहब के दरवाजे पर दस्तखत देता है महीनों के बाद और दरवाजा खोला। बोले, आपका स्वागत है। बोले, मैंने आपके भाष्य के बारे में सुना है और ये मुझे बहुत सत्य के निकट पड़ रहा है। इसलिए मैंने सुना है कि चालीस रुपये में एक प्रत दी जाती है तो मैं बामुश्किल चालीस रूपये इकठ्ठे करके आया हूं। मैं आपके चरणों में रखता हूं। मुझे आप कुरान की दीक्षा दो। आंख में आंसू आ गए और उसने कहा कि मैं न आदेश देता हूं, न उपदेश देता हूं, मैं मुहम्मद साहब की परंपरा में संदेश देता हूं। लेकिन तू वहीं से एक विश्वास लेकर आया इसलिए ये मेरा भाष्य तेरे नाम कर देता हूं। मेरे कहने का मतलब कि ये जो हमारी पवित्र धाराएं हैं उसको बीच में बहुत-बहुत मुश्किलें आई। अनवरभाई ने ठीक कहा कि ये बातें करने से, हम थोड़ा अमल करें। हम अमल करने लगे। और अमल नहीं होता ऐसा भी हम नहीं कह सकते। हो रहा है। अमल नहीं होता तो इतना अमन नहीं होता। इतने लोग शांति से बैठे हैं घंटों तक। ये अमल हो रहा है किसी न किसी रूप में। तो प्रति वर्ष ऐसा एक सुंदर वातावरण हमें सालभर के लिए रिचार्ज कर देता है। इस घटना का मैं स्वागत करता हूं।

सूफ़ी संत शेख सादी ने कभी कहा था; मुझे कभी

लगता है कि इस्लाम धर्म कितना पवित्र और कितनी शांति की बात करनेवाला ये मज़हब, ये धर्म लेकिन सूफ़ियों को इन्होंने दूर रखा! सूफ़ी उसको पसंद नहीं आये। क्योंकि सूफ़ी पंडित नहीं है, सूफ़ी मौलाना नहीं है, सूफ़ी मौलवी नहीं है; सूफ़ी फ़कीर है, सूफ़ी बाबुल है, सूफ़ी बंजारा है, सूफ़ी साधु है, तो रास नहीं आता! हमारा एक कवि देवराज मुझे कह रहा था; मैंने पहली बार उससे सुना कि संसार में लोग मुर्गे क्यों काटते हैं? क्या मुर्गे ने बिगाड़ी? मुर्गे क्यों काटे जाते हैं? तो मैं भी स्तंभित रह गया कि देवराज कहना क्या चाहता है? तो उसने बड़ी प्यारी बात की कि मुर्गे को इसलिए काटा जा रहा है क्योंकि सुबह-सुबह वो सब को जगाता है। जो सब को जगाता है न उसकी गर्दन ही कटी है! किसको छोड़ा है? पैग़म्बर को हिजरत करनी पड़ी। करबला में बहत्तर लोग, इसको मैं बहत्तर-सेवन्टी टू कहता ही नहीं; फिर एक बार दोहरा रहा हूं कि ये बहत्तर-सेवन्टी टू थे ही नहीं, ये बेहतर थे। सांख्य में मत ले जाओ, ये ऐसे बेहतर लोग थे जिसकी याद आज भी केवल इस्लामवालों की आंख में नहीं, हर शख्स, हर इंसान की आंख में पानी भर देती है। ये ऐसे लोग थे। ऐसे शख्सियत थे। मेरे कहने का मतलब जिन-जिन लोगों ने समाज को जगाने की कोशिश की है, या तो उसको फ़ांसी के फंदे पर चढ़ाया, या तो उसको गोली मार दी, या तो उसको हिजरत करनी पड़ी, या तो सुकरात को ज़हर का प्याला मिला, मीरां को ज़हर का प्याला मिला। ये सब को सहना पड़ा क्योंकि काम जगाने का किया। और एक आदमी ने तो मुझे ये भी कहा कि मुर्गे की गरदन काटी जाती है इसका दूसरा भी एक कारण है कि वो मान बैठा था कि मेरे बोलने से ही सुबह हो रही है! इसलिए काटी गई! कई लोग ऐसा मान बैठे हैं, इस दुनिया में हमारे कारण ही उजाला हो रहा है! हम न होते तो सुबह न होती। रहने दे प्यारे! ये दावा मत कर। सच तो ये है कि सुबह होती है तब मुर्गा बोलता है, मुर्गा बोलता है तब सुबह नहीं होती है। साहब! जब हमारे भीतर मुहम्मद उतरते हैं तब हमारे मुंह से कलमा बोलता है; तब हमारे अंदर से आयातें बाहर निकलती है। हमारे अंत:करण में विशुद्धि आती है तब उपनिषद की ऋचाएं बहने लगती हैं। तो ये हम समझें। और ये काटना, ये मारना, ये तोड़ना, ये फोड़ना, कब तक? और वो भी मज़हब के नाम पर! हमारा वेद कहे तू निराकार भी है और साकार भी है। और इस्लाम कहता है, तू निशाने बैनिशान है।

तू निशाने बेनिशान है, तू बहारे शरमदी है।
तुझे देखना इबादत और तेरी याद बंदगी है।
मेरा सर वहीं झुका जहां खत्म बंदगी है।

कोई फ़कीरों के दर पर सर रख दो साहब! शेख सादी तो कहता था; अब कौन माने, ये तो ज्यादा बोला नहीं वर्ना वो भी गया होता! उसने कहा था और राबिया ने भी कहा था कि 'काफ़िर' शब्द ही निकल जाना चाहिए। कौन काफ़िर? यदि अल्लाह खुदा की ये सब कायनात है तो काफ़िर भी उसने बनाया है, उसको रखो पिंजरे में। मैं तो खुदा का इतना ही अर्थ समझा हूं मौलानाओं की कृपा से, इनकी मेहरबानी से कि ख़लक़ की ख़िदमत करे वो ही खुदा है। पूरे ख़लक़ की सेवा में लग जाए। एज्युकेशन से, रोटी देने से, वस्त्र देने से, दूसरे को तसल्ली देने से। ख़लक़ की ख़िदमत में लग जाए वो खुदा का सच्चा बंदा है।

तो उसने कहा कि ये होना चाहिए। संदेश देनेवाला तो कुबूल करेगा, उपदेश देनेवाला, आदेश देनेवाला ये कुबूल नहीं करेगा। ऐसे समय में पवित्र कुरान की पवित्र आयात; मैंने दो बार पवित्र कुरान को तलगाजरडी आंखों से देख लिया है, समझने की पूरी कोशिश की है कि कभी-कभी मैं उसका सहारा लेकर भी दुनिया के सामने कुछ बातें कहूं। तो वहां तो अद्‌भुत बातें नज़र आती है। वहां तो सादगी की बातें हैं, वहां तो सरलता की बातें हैं, वहां तो अहिंसा की बातें हैं। मैं अपने धर्मवालों को भी कहता हूं कि जिस देश में वेद हो और संवेदना न हो तो वेद का अपमान है। कुरान हो और करुणा न हो! तो किसकी आन लेकर हम बैठे हैं! कुरान का 'आन' शब्द ले लीजिए। किसकी आन लिए हम बैठे हैं? क्रूरता की या करुणा की?

चाहे हिंदु धर्म हो, ईसाई हो, इस्लाम हो, कोई भी हो। अभी-अभी यहां बातें होती हैं कि बापू 'अली मौला' बोलाते हैं! आप जो सुनते होंगे तो, मैं बात-बात में कहता हूं, मेरी व्यासपीठ से सहज निकलता है, अल्लाह जाने! हमारे एक मोहनदास बापू मुझे कहते थे कि बापू, आपको कुछ कहना मुश्किल है, आप मेरे से छोटे हैं लेकिन मैं आपको कुछ कह नहीं कह सकता! लेकिन 'अल्लाह जाने', इतना बोलते हैं तो इतने में तो आठ बार 'राम राम राम राम' बोल जाते हैं। मैंने कहा मैं 'अल्लाह जाने' एक बार बोलूं तो इसमें आठ बार राम ही आ जाता है। अब बूढ़ापा आया है, क्यों ज़िद्द कर रहे हो! छोड़ो ये! 'मज़हब नहीं सिखाता आपस में बैर करना।' ये पैगाम लें। तो मेरे मुख से ये स्वाभाविक निकलता है। आप ये समझते हैं कि मैं 'अली मौला' व्यासपीठ से बुलाऊं। मैं मौलानाओं को प्रार्थना करता हूं कि आप भी अपनी गादी से 'रघुपति राघव राम' बुलाओ। एकता करनी है, तो आओ मैदान में! तलगाजरडा के मैदान में आओ। लेकिन हम दूसरों को कहते हैं, करने में कमज़ोर हैं! सत्य क्या है? ईमानदारी से कहो। हमारे मेहरानभाई कहे कि 'जय माताजी, जय माताजी।' अब माँ तो सब की है लेकिन बोले कितने? भारत माता



की बात करने में भी झिझक होती है! सोचो! हम किस जगह पर खड़े हैं! एकता ही है। ये अकारण कुछ घुस गया है, वो निकल जाए तो एकता ही है। तो मैं तो बोलता हूं। आप ये समझते हैं कि मुझे तकलीफ़ नहीं होती होगी! मुर्गा बोले तो! ये दशा आती है। मुझे तकलीफ़ नहीं होती होगी! इन बुज़ुर्गों की रहमत है, आशीर्वाद है, इसलिए सामने तो कोई नहीं आते हैं बाकी कोई! क्या धर्मगुरु नाराज़ नहीं होते थे अपने के आ बाबाए शुं मांड्युं छे? पण बाबा एवुं मांडे छे एने कोई उथापी नो सके! फ़कीर सिद्ध नहीं, शुद्ध करता है। सिद्ध होना और करना कोई बड़ी उपलब्धि नहीं है, शुद्ध होना बहुत बड़ी उपलब्धि है।

मेहबूब साहब हज़ पढ़ने गए। मेरे लिए ज़मज़म लाये। मेरे महुवा के जितने भी हज़ पढ़ने जाते हैं, आते हैं तब मेरे लिए खजूर लाते हैं, ज़मज़म लाते हैं, इत्र लाते हैं। वहां से कुछ न कुछ प्रसाद लाते हैं। और मैं कहता हूं, आप यहां बैठो। मैं गंगाजल में सब पाता हूं। मैं आज ज़मज़म के पानी में रोटी खाऊंगा आपकी उपस्थिति में। मेहबूब साहब साक्षी हैं। कभी-कभी गंगाजल की लापसी खाओ। मैं कोई ज़हर खाने के लिए नहीं कह रहा, लापसी खाने के लिए कह रहा हूं। मेंहदी बापू तो खाते हैं। वो तो शंकर मंदिर में भोजन करते हैं। ऐसा मियाँ ढूंढ़ना मुश्किल है। मेरे अनवरभाई कह रहा था ये जगह एकता, इस जगह एकता, इस जगह एकता। हमारे तलगाजरडा में दातार है। वहां हम छोटे थे न तब कहते थे कि वहां से एक गुफा है। वो गुफा जूनागढ़ में, गिरनार में निकलती है। लेकिन वो साहस नहीं करते। लेकिन मैं कहता हूं कि तलगाजरडा में जो पीर की दरगाह है दातार, ये कंजूस नहीं है, दातार है। उनकी दरगाह के नीचे यदि कोई गुफा है तो जूनागढ़ क्यों जाएं? रामेश्वरम् पहुंच जाएं क्योंकि रामेश्वरवाला परम दातार है। कहां न पहुंचा दे दातार!

आओ, मज़हबों को दंडवत् प्रणाम करते-करते, हमारे परम पवित्र ग्रंथों को सीने से लगाकर नाचते हुए फ़कीर और संतों से उसकी व्याख्या सुनिए। तो बहुत बड़ा अमन विश्व में फैल जायेगा।

मैं जेरूसलाम गया था; महम्मद साहब की वहां एक दीवार है, वहां सब दुआ मानते हैं। तो मुझे कहा गया कि बापू, आप तो हिंदु धर्म के हैं। मैंने कहा कि ख़बरदार! मुझे कोई एक धर्म का मत बना। ये मेरा परिचय बहुत छोटा है। हिंदु होने का यद्यपि मुझे बहुत गर्व है और मुस्लिम होने का आपको गर्व होना चाहिए। क्यों नहीं? ये होना चाहिए। लेकिन मैंने कहा, हिंदु हूं तो हूं। तो बोले, आप मुसलमान हैं? मैंने कहा, मैं मुसलमान नहीं हूं, तलगाजरडा का एक इंसान हूं। बहुत खुश हुए। अभी मैं रवांडा होकर आया हूं। रवांडा की सरकार ने कायदा किया है कि हम सब रवांडियन ही कहलाये जायेंगे, कोई जात-पात का नाम नहीं आने देंगे। क्योंकि अंदर-अंदर दस लाख लोग पचीस साल पहले काटे गए! ढ़ाई लाख की दरगाह पर तो मैं पुष्प चढ़ाकर आया हूं। एक जगह पर ढ़ाई लाख दरगाह है! और ये छोटी-बड़ी बातों के कारण हो रहा है। मेरी समझ में नहीं आता कि धर्म ऐसा कैसे कर सकता है? आओ, हम ऐसी राह पर चलें। मैं दुष्यंतकुमार को अक्सर याद करता हूं कि-

सिर्फ़ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं,
मेरी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए।

तो मुझे ज़मज़म का कोई फ़र्क नहीं पड़ता। ज़मज़म का अपमान करे वो हिंदु नहीं होता है; वो सनातनी नहीं होता है और गंगाजल का अपमान करे वो मुसलमान नहीं होता। जल तत्त्व न हिंदु होता है न मुसलमान होता है।

न हिंदु बनेगा न मुसलमान बनेगा,
इंसान की औलाद तू इंसान बनेगा।
कुदरत तो ने बक्शी थी हमें एक ही धरती,
हमनें कहीं भारत कहीं ईरान बनाया।

कुरान का पवित्र आदेश और उपदेश हम भूल गए कि वो क्या कहना चाहते हैं। मेरे पास कई मुस्लिम साथ में आते हैं कि बापू, हम सब एक हैं। मैं शिवालय में जाता हूं न तो एक इधर चला जाता है, एक उधर चला जाता है! हमारे साथ चले थे; हम जायेंगे लेकिन जैसे मैं मंदिर गया तो कहते हैं बापू, जरा हमारा काम है, आप जाके आइये! ये भेद मिटना चाहिए। कौन मिंया, कौन महादेव!

काबे से बुतकदे से कभी बज्में-जाम से।
आवाज़ दे रहा हूं तुम्हें हर मकाम से।

सच्चा फ़कीर उपदेश नहीं देता, पुकार करता है। निमंत्रण देता है। ओशो ने कभी कहा था कि मैं लेक्चर नहीं देता हूं, मैं निमंत्रण देता हूं कि आओ मेरी बज़्म में, आओ मेरी महफ़िल में। और एक बार एक घूंट तो पियो तो पता लगे कि ज़िंदगी कितनी खूबसूरत है! तो याद-ए-हुसैन, परम तत्त्व की दो आंखें हैं। आप तो आकार में नहीं मानते और नहीं ही मानना चाहिए, क्योंकि हम भी निराकार के उपासक हैं। लेकिन कई श्रद्धा हमारी रखनी पड़े इसलिए हम अपनी श्रद्धा के अनुसार हम अपनी मूर्ति बना लेते हैं। ये कोई गुनाह नहीं है। इसलिए किसी को अधिकार नहीं उसको तोड़ने का। जिन्होंने इतिहास में हिंदुओं की श्रद्धा को तोड़ा है वो चैन से बैठ नहीं पाए। कभी न कभी वक्त बदलता है। इस्लाम निराकार में मानता हैं, हिंदु निराकार में मानते हैं लेकिन हमारी श्रद्धा है। और कोई भी आकार न लो तो भी मस्जिद का एक आकार नहीं है? नहीं है आकार? मस्जिद में कोई दातार का नाम न हो। खुदा के दर

पर कोई बड़ा दातार नहीं होता। वहां तख्ती क्यों लगाएं? धर्मस्थानों पर भी तख्ती लगानेवालों! ठीक है, कोई देता है तो ठीक है, लगने दो न! पर लगाए तो लगाए! राम मंदिर में पंखा दे तो लड़के का नाम, बाप का नाम और दादा का नाम, तीनों का नाम! पूजारी जैसे ही पंखे की स्विच ओन करे तो तीनों पीढ़ी फिरें! क्या तमाशा है ये? जो दिया है दाता ने उसके सामने कौन-सी चीज़ हमारे पास है?

हां, हमारे पास मोहब्बत की थोड़ी-सी जुबान आ जाए। हसन की थोड़ी जुबां आ जाए। हुसैन की हुसैनियत का थोड़ा-सा असर आ जाए। मैं तो कहता हूं कि मैं जहां भी कोई हसीं चीज़ देखता हूं, मेरे लिए करबला का ये हुसैन है। मुझे कोई अच्छी सुंदर कोई बहन-बेटी दिखे, विकारी दृष्टि से नहीं, शिकारी दृष्टि से नहीं, पूजारी दृष्टि से। हसीं चेहरा, हसीं मंज़र, हसीं मूर्ति, हसीं मंदिर, तो ये सब हुसैन है। मुझे लोग कहते हैं, बापू, जब आप कथा में बैठते हैं तो चारों ओर क्यों देखते हैं? मैं जवाब देता हूं कि हसीं चेहरे। साहब! यहां कितने हसीं चेहरे बैठे हैं! ऐसी महफ़िल में कुरूप आदमी सुरूप हो जाता है। अंत:करण भी बदल जाता है और शक्लोसूरत भी बदल जाती है। क्योंकि एक नूरानी महफ़िल में हम बैठे हैं। कितने हसीं है देखो! सोचिये, ये नज़र चाहिए। निराकार में सब मानते हैं लेकिन आकार क्यों तोड़े? निराकार को माननेवाले को भी एक आकारित मकान में रहना पड़ता है। मैदान में रहो! आकार तो है ही, कहां जायेंगे? दरगाह को भी हमने आकार दिया है, वस्त्र उड़ाया है, चादर उड़ाया है। कुछ विशालता से सोचना होगा और अमल करना होगा। और अल्लाह की मेहरबानी है कि महुवा में ऐसे कार्यक्रमों के कारण अमल होता है। चिंगारी फूटती भी है लेकिन एक घंटे में बुझ भी जाती है! कौन पानी छांट देता है? ऊपरवाला पानी छांट देता है? चिंगारी लगती भी है और बुझ भी जाती है लेकिन फिर भी ये महुवा की ज़मीन बची है। हम सब के आपसी परस्पर मोहब्बत के कारण बची है। दूसरे को कभी ज़ख्म मत दो। मुझे मौलाना साहब मिलने आये तब मैं कह रहा था कि-

एक ऐसा जख्म चाहिए अपने मिज़ाज़ का,
गहरा भी बहुत हो और हरा भी बहुत हो।

ऐसी पीड़ जब हमारे जीवन में आये। दीन का अर्थ होता है पीड़ा भी। दीन माने मज़हब और दीन का एक अर्थ है पीड़ा, संवेदना, दीनता, नम्रता, सरलता, अधीनता। और दीन का हिंदु शास्त्रों में अर्थ होता है विवेकबुद्धि और विवेकशुद्धि। ये दो अर्थ दीन के हैं। कौन दीन का आश्रित है? जिसमें विवेकबुद्धि है और विवेकशुद्धि है। 'विवेक बुद्धि' शब्द का प्रयोग कर रहा हूं तब ये मत समझना कि विवेक शुद्ध होता है। कई लोगों का विवेक भी अशुद्ध होता है! सामने से राम राम और अंदर से! ऐसी स्थिति में हम सब जी रहे हैं तब ये मंच बहुत उपकारक काम कर रहा है। महुवा अद्‌भुत उपकारक काम कर रहा है। पूरी दुनिया में इस मंच की चर्चा है। मोरारिबापू के कारण नहीं, यहां के हिन्दु और मुस्लिम की एकता के कारण। मोरारिबापू तो कई आएंगे, चले जायेंगे, कई होंगे, कई हैं। मोरारिबापू कौन है? एक टूटा पत्ता गंगा के प्रवाह में बह रहा है; कब तट पर चला जाए क्या ठिकाना! लेकिन ये जो अविरत मोहब्बत की गंगा बह रही है महुवा में, ये महत्त्व की है। ये धारा की महिमा है। इसलिए आप सब आते हैं। और इतनी उदारता को भी मार्क किया जाए महेंदी बापू कि यहां जब हम आते हैं तो सब से पहले हिंदु आते हैं, मुस्लिम भाई बाद में आते हैं। 'जश्ने जनाबे अब तालिब' इसलिए ये जिम्मेवारी बढ़ती है। यहां 'जश्ने जनाबे,' कोई दूसरा नाम नहीं लिखा है; 'अबू तालिब' लिखा है; उसकी इज्जत रखें। उसके कारण हम इकठ्ठे हुए हैं, इकठ्ठे होते रहेंगे।

मेरे भाई-बहन, महुवा एक बहुत अच्छा काम कर रहा है। एक बार मैं नहीं आ सका तो मौलाना साहब अहमदाबाद में आये कि बापू, आप नहीं थे; हम आपके पास आ रहे हैं। ये मोहब्बत है। ये प्रीति है। ये बंधन अखंड रहे। इतने लोग सब आते हैं, धीरे-धीरे आते हैं। लेकिन इतनी शांति से आप इस महफ़िल को सुन रहे हैं। इसकी बड़ी प्रसन्नता है। ये जश्न हम कायम मनाते रहें। और आदेश अपने हाथ में न लें, उपदेश अपने हाथ में न लें। पैगंबरी परंपरा को निभाते हुद केवल संदेशवाहक बनकर, कासिद बनकर, डाकिया बनकर, जिसके नाम जो पत्र है उसके नाम वो पैगाम पहंचाया जाए; सही एड्रेस पर ये खत पहुंचाया जाए। यही हमें करना है। यहां हो रहा है। मैं पूरी जनता का बहुत-बहुत आभारी हूं कि आप इतनी शांति से इन सभी बुज़र्गों को सुनने आते हैं। मैं तो छोटा हूं इसलिए मुझे कंधे पर बिठाकर आगे कर देते हैं। मैं भी लालायित रहता हूं। ज़हिर साहब कितना सुंदर बोलते थे! पंद्रह-बीस मिनट बोलते थे साहब, शांति का आलम बस जाता था। उसने अपना हक छोड़ दिया। आज कोई अपना हक छोड़ने को राजी नहीं है! माइकवाले तो होते ही नहीं है! यही तो बड़प्पन है। मैं मेरी प्रसन्नता व्यक्त करता हूं और आख़िर में फ़कीराना आये। ये सब फ़कीर हैं। न हो तो होना चाहिए दिल से। 'फ़कीराना आये सदा दे चलें।' एक आवाज़ देकर, एक पुकार करके, एक निमंत्रण देकर ये सब फ़कीर आये।

फ़कीराना आये सदा दे चले।
मिंया खुश रहो, हम दुआ दे चले।

---

('एकता-जश्न : २०१९' अवसर पर महुवा (गुजरात) में प्रस्तुत वक्तव्य : दिनांक ३-५-२०१९)





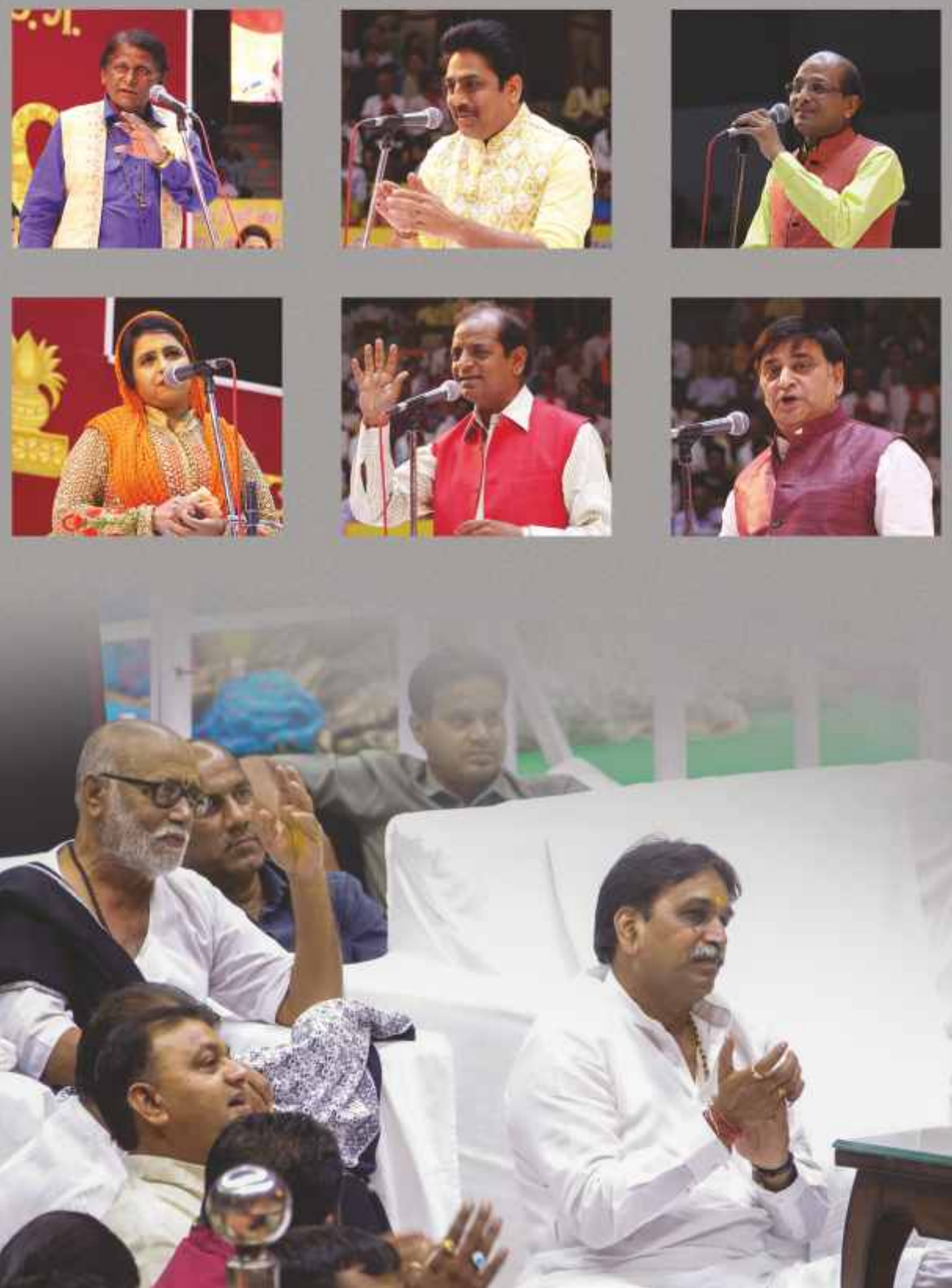

॥ जय सीयाराम ॥